DR. M. MOHAN RAO
IAS (Retd)
CHAIRMAN

M. ARUNA MOHAN RAO
IPS (Retd)
DIRECTOR (ACADEMICS)

अक्टूबर-2022

करेन्ट अफेयर्स मैग्जीन

- पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी
- राजव्यवस्था एवं प्रशासन
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी
- कला और संस्कृति
- अंतर्राष्ट्रीय सम्बंध
- सरकारी योजनाएँ
- सामाजिक मुद्दे
- अर्थव्यवस्था
- विविध

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams

R-26, Zone-II, Opp Railway track, M.P. Nagar, Bhopal
Call us
0755-7967814, 7967718, +918319618002

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

अक्टूबर-2022

करेंट अफेयर्स

विषय - सूची

विषय	पृष्ठ सं.
कला और संस्कृति	1-10
वैदिक तारामंडल	
नुआखाई	
कश्मीर में मार्तंड मंदिर	
फिलीपींस के रेमन मैग्सेसे	
दारा शिकोह	
अम्बेडकर सर्किट	
हिंदी दिवस 2022	
सुरजापुरी और बज्जिका बोलियाँ	
राजनीति	11-19
2021 में मानव तस्करी के केवल 16% मामलों में दोष सिद्ध हुए : NCRB	
राष्ट्रीय भाषा के रूप में संस्कृत	
जम्मू-कश्मीर में सेवा देने के लिए आईएएस और आईपीएस अधिकारियों के लिए नियमों में ढील	
संदेहपूर्ण राजनीतिक दलों को बाहर निकालने के लिए चुनाव आयोग का कदम	
सिख गुरुद्वारा (प्रबंधन) अधिनियम 2014	
मौत की सजा	
अनुसूचित जनजाति	
पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी	20-29
विरासत संरक्षण की दयनीय स्थिति	
सिंगल यूज प्लास्टिक	
ग्रीनहाउस गैस	
ग्रीन हाइड्रोजन	
टिपिंग पॉइंट्स	
ग्रीन फिन्स हब	
समुद्री खीरा	
टाइगर रिजर्व	

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

अर्थव्यवस्था 30-39

भारत के लिए प्रतिस्पर्धात्मकता रोडमैप/100

5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

डिजिटल ऋण देने के लिए आरबीआई के दिशानिर्देश

ऋण ऐप्स

IBC में परिवर्तन

राष्ट्रीय रसद नीति

भारत के लिए विकास पूर्वानुमान

विज्ञान और तकनीक 40-61

मोक्सी

CERVAVAC

BPAL

तीव्र गति

5जी

eSIM

हाइब्रिड प्रणोदन प्रणाली

कागज का उपयोग कर संवेदन दबाव

CRISPR

भारत की क्वांटम छलांग

पहली फ्लेक्स-फ्यूल कार

AVGAS 100 एलएल

सामाजिक मुद्दे 62-78

व्हाट्सएप गोपनीयता नीति

NDPS अधिनियम

जिज्ञासा 2.0

बल्क ड्रग पार्कों को बढ़ावा देने की योजना

निर्णायक एजेंडा रिपोर्ट 2022

लम्पी स्किन रोग

कृतज्ञ 3.0

भारत भेदभाव रिपोर्ट-2022

आधुनिक दासता

पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया

जलदूत ऐप

अंतर्राष्ट्रीय संबंध 79-89

जैव विविधता संरक्षण

2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता : भारत और जापान

सेतु

भारत-बांग्लादेश

अब्राहम समझौता

वाराणसी

पूर्वी आर्थिक मंच

इंडो-पैसिफिक त्रिपक्षीय विकास सहयोग कोष

सरकारी योजनाएं 90-99

सरोगेट विज्ञापन

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

पीएम-श्री योजना
किरीट पारिख समिति
धर्मशाला घोषणा
"सीएम दा हैसी"
स्वच्छ सुजल प्रदेश
PM PRANAM योजना
फिनटेक प्रोत्साहन योजना (FIS) 2022

विविध 100-112

संयुक्त राष्ट्र ने चीन के शिनजियांग में मानवता के खिलाफ संभावित अपराधों का हवाला दिया
NPT
INS विक्रांत
शिकायत निवारण सूचकांक 2022
स्पार्क कार्यक्रम
ब्लू ट्रांसफॉर्मेशन रोडमैप (2022-2030)
सुभाष चंद्र बोस
भारत की अध्यक्षता
भारत का रक्षा बजट
चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

1 कला और संस्कृति

वैदिक तारामंडल

खबरों में क्यों

बंगाल में खुलेगा वैदिक तारामंडल, 'दुनिया का सबसे बड़ा मंदिर'

महत्वपूर्ण बिंदु

- पश्चिम बंगाल के मायापुर में वैदिक तारामंडल का मंदिर दुनिया का सबसे बड़ा मंदिर होगा, जो आगरा में ताजमहल या वेटिकन में सेंट पॉल कैथेड्रल से भी बड़ा होगा।
- बंगाल के मायापुर जिले में वैदिक तारामंडल के मंदिर - जिसे 'दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक' कहा गया है, के उद्घाटन की उलटी गिनती जारी है।
- मंदिर - कोलकाता से 130 किमी - इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ कृष्णा कॉन्शियसनेस (इस्कॉन) के मुख्यालय के रूप में भी काम करेगा। इसके जुलाई या अगस्त 2023 तक खुलने की उम्मीद है।
- भव्य परियोजना का निर्माण 2010 में शुरू हुआ था और शुरू में इसे 2016 तक पूरा करने की योजना थी, लेकिन तारीख को कुछ साल पीछे धकेल दिया गया।
- कोविड-19 महामारी के कारण, निर्माण में और देरी हुई और उद्घाटन की तारीख को अगले वर्ष तक बढ़ा दिया गया।
- वैदिक तारामंडल में वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान संस्थान होगा, जो ब्रह्मांड के वैदिक खातों पर शोध और चर्चा करेगा। यह ब्रह्मांडीय निर्माण के कुछ हिस्सों के दौरे की भी पेशकश करेगा।

वैदिक तारामंडल की कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- बंगाल में वैदिक तारामंडल के मंदिर में कथित तौर पर दुनिया में कहीं भी एक धार्मिक स्मारक पर सबसे बड़ा गुंबद होगा।
- स्मारक आगरा में ताजमहल और वेटिकन सिटी में सेंट पॉल कैथेड्रल से भी बड़ा है। यह दुनिया के सबसे ऊंचे हिंदू मंदिरों में भी होगा।
- मंदिर बंगाल के नादिया जिले के मायापुर में स्थित है।
- मंदिर 100 मिलियन डॉलर की अनुमानित लागत से बनाया जा रहा है और इसके प्रत्येक तल पर लगभग 10,000 भक्त रह सकते हैं, जहां वे भगवान कृष्ण के सामने गा सकते हैं, प्रार्थना कर सकते हैं और नृत्य कर सकते हैं।
- इसका नेतृत्व प्रसिद्ध व्यवसायी हेनरी फोर्ड के परपोते और फोर्ड मोटर कंपनी के भावी मालिक अल्फ्रेड फोर्ड करेंगे, जिन्होंने इस्कॉन में शामिल होने के बाद 1975 में अपना नाम बदलकर अंबरीश दास रख लिया था। उन्होंने इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 30 मिलियन डॉलर दिए।
- मंदिर को नीले बोलिवियाई संगमरमर से पंक्तिबद्ध किया गया है, जिसे आंशिक रूप से वियतनाम से प्राप्त किया गया है।
- मंदिर की कल्पना आचार्य प्रभुपाद ने की थी, जो एक ऐसी संरचना चाहते थे जो वैदिक विज्ञान के बारे में जागरूकता फैलाए।
- तारामंडल में एक विशाल घूर्णन मॉडल है जो दर्शाता है कि भागवत पुराण जैसे पवित्र पुस्तकों में वर्णित ग्रह प्रणाली कैसे चलती है।
- मायापुर चैतन्य महाप्रभु का जन्मस्थान भी है, जो 15वीं सदी के भारतीय वैष्णव संत थे जिन्हें राधा और कृष्ण का संयुक्त अवतार माना जाता है।
- इस्कॉन कथित तौर पर दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए मायापुर में मंदिर के चारों ओर एक शहर विकसित करने के लिए राज्य पर्यटन विभाग के साथ बातचीत कर रहा है।

नुआखाई

खबरों में क्यों

नुआखाई ओडिशा में मनाया जाने वाला एक वार्षिक फसल उत्सव है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- नुआखाई ओडिशा में एक वार्षिक फसल उत्सव है, जिसे मौसम के नए चावल के स्वागत के लिए मनाया जाता है।
- गणेश चतुर्थी के एक दिन बाद मनाया जाने वाला,नुआखाई पश्चिमी ओडिशा में सबसे शुभ और महत्वपूर्ण सामाजिक त्योहार है।
- पश्चिमी ओडिशा का बहुप्रतीक्षित त्योहार, नुआखाई, देवी समलेश्वरी को नबन्ना चढ़ाने के साथ मनाया जाएगा।
- नुआखाई में, नुआ का अर्थ है नया और खाई का अर्थ है भोजन। तो, नुआखाई का त्योहार किसानों द्वारा नए कटे हुए भोजन का जश्न मनाने का त्योहार है।
- गणेश चतुर्थी के उत्सव के एक दिन बाद, यह विशेष रूप से ओडिशा के पश्चिमी भाग में बहुत उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाता है।
- दूर देशों में रहने वाले लोग अपने मूल स्थानों पर वापस आते हैं, नए कपड़े पहनते हैं और भगवान के सामने प्रार्थना करते हैं और नई फसल से तैयार स्वादिष्ट भोजन खाते हैं।
- नुआखाई सामाजिक-आर्थिक तबके के लोगों द्वारा मनाया जाता है। कृषि त्योहार नए चावल धान की फसल का

प्रतीक है, जहां कृषि प्राथमिक व्यवसाय है।

- पश्चिमी ओडिशा के पहाड़ी इलाकों में मूल निवासी आदिवासी थे, जो अपने भरण-पोषण के लिए शिकार और भोजन एकत्र करने पर निर्भर थे।
- जैसा कि मूल निवासियों ने खेती के माध्यम से जीवन के एक अधिक व्यवस्थित तरीके को चुना, त्योहार ने एक उत्सव के रूप में कार्य किया जिसने कृषि के अभ्यास को बढ़ावा दिया।
- नुआखाई की तैयारी काफी पहले से शुरू हो जाती है। 'सफा-सूत्र' और 'लीपा-पुच्छ' या घरों की सफाई और पोछा लगाने का काम परिवार के सदस्य करते हैं।
- बरामदे और मिट्टी की दीवारों को 'झुटी' से सजाया गया है जो रंगोली डिजाइन के समान है। यह अधिक सामान्य रंगोली से केवल सफेद होने और भीगे हुए चावल के पाउडर में डूबी हुई उंगलियों से खींची जाने वाली रंगोली से अलग है।
- नए कपड़े, आमतौर पर पारंपरिक संबलपुरी कपड़े के सभी परिवार के सदस्यों के लिए खरीदे जाते हैं। यह वर्ष का वह दिन होता है जब विभिन्न शहरों और कस्बों में रहने वाले परिवार के सदस्य अपने मूल स्थान पर लौटने का एक बिंदु बनाते हैं।
- पूरे एक साल के बाद दोस्तों और परिचितों को एक-दूसरे से मिलने के साथ गांवों में हलचल होती है। विस्तारित परिवार के सदस्य, यदि अलग-अलग घरों में रहते हैं, तो अपने पैतृक स्थान पर एकत्रित होते हैं।
- दिन की शुरुआत में, क्षेत्र के स्थानीय देवता को 'नबन्ना' या पहली कटी हुई धान की पेशकश की जाती है।
- संबलपुर में देवी समलेश्वरी, बोलांगीर / पटनागढ़ में पटनेश्वरी, कालाहांडी में मणिकेश्वरी, सुंदरगढ़ में शेखरबासिनी और सोनपुर में सुरेश्वरी को 'लगना' नामक पूर्व निर्धारित समय पर 'नुआ' दिया जाता है।

RAO'S ACADEMY

- मंदिरों में अनुष्ठान पूरा हो जाने के बाद, उत्सव अलग-अलग घरों में स्थानांतरित हो जाता है। परिवार का मुखिया, जो आमतौर पर परिवार का सबसे बड़ा सदस्य होता है, अपनी प्रार्थना करता है और प्रथागत अनुष्ठान करता है। इसके बाद प्रत्येक सदस्य को 'नुआ' (चावल के दाने) बांटे जाते हैं।
- पृथ्वी माता को उनके भरण-पोषण के लिए भोजन प्रदान करने के लिए और एक और वर्ष के लिए उन्हें एक साथ रखने के लिए भगवान को धन्यवाद देने के बाद, सदस्य चावल का सेवन करते हैं। इसके बाद 'नुआखाई जुआर' आता है जहां युवा बड़ों का आशीर्वाद लेने के लिए उनके पैर छूते हैं।
- नुआखाई एक ऐसा त्योहार है जो आपसी सद्भाव और भाईचारे को बढ़ावा देता है। चूंकि किसान कम वर्षा के कारण सूखे और कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण होने वाली बीमारियों जैसी अनिश्चितताओं से लगातार जूझ रहे हैं, नुआखाई का त्योहार उनकी मेहनत और संघर्ष का जश्न मनाता है।
- यह ऐसे समय में खेती को एक व्यवसाय के रूप में भी मनाता है जब अधिकांश युवा कम चुनौतीपूर्ण विकल्पों को चुनने के लिए कृषि को छोड़ रहे हैं। यह वह उत्सव है जो साल दर साल पश्चिमी ओडिशा के दस जिलों के निवासियों को याद दिलाता है कि वे एक ही संस्कृति और परंपरा से जुड़े हुए हैं।

कश्मीर में मार्तंड मंदिर

खबरों में क्यों

ASI ने मार्तंड मंदिर परिसर में **'नवग्रह अष्टमंगलम पूजा'** पर आपत्ति जताई थी क्योंकि यह एक विरासत स्थल है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने अनंतनाग में मार्तंड सूर्य मंदिर के परिसर में आयोजित एक धार्मिक 'पूजा' पर नाराजगी व्यक्त की।
- प्राचीन मंदिर में 'नवग्रह अष्टमंगलम पूजा' में जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा और हिंदू संतों ने भाग लिया।
- ASI ने कहा कि मार्तंड सूर्य मंदिर ASI द्वारा संरक्षित स्थलों में से एक है और मानदंडों के अनुसार, ऐसे स्थलों पर कोई भी धार्मिक प्रार्थना नहीं की जा सकती है।
- राज्य सरकार ने ASI द्वारा उल्लंघन के आरोपों से इनकार किया और यह स्पष्ट किया कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित स्मारक मार्तंड सूर्य मंदिर में उपराज्यपाल को पूजा करने के लिए किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है।
- ASI ने मंदिर में फिल्म 'हैदर' की शूटिंग की अनुमति दी थी।
- जबकि ASI ने कहा है कि ASI द्वारा संरक्षित स्थल पर धार्मिक प्रार्थना नहीं की जा सकती है, उन्होंने पहले मंदिर में बॉलीवुड फिल्म हैदर की शूटिंग की अनुमति दी थी।
- शाहिद कपूर अभिनेता फिल्म के गीत 'बिस्मिल' को मंदिर में फिल्माया गया था, जिससे कश्मीरी हिंदुओं में आक्रोश था।

मार्तण्ड सूर्य मंदिर

- कहा जाता है कि मंदिर का निर्माण 8वीं शताब्दी में हुआ था, लेकिन 1389 और 1413 के बीच इसे कई बार नष्ट करने का प्रयास किया गया।
- ऐसा माना जाता है कि हिंदू शासक ललितादित्य ने 8वीं शताब्दी ईस्वी में सूर्य देव या भास्कर के सम्मान में मार्तंड सूर्य मंदिर का निर्माण कराया था। ललितादित्य एक सूर्य राजवंश क्षत्रिय थे।
- मंदिर के निर्माण की शैली और उसमें प्रदर्शित विशेषज्ञता विश्व इतिहास में अभूतपूर्व थी।
- वास्तुकला के वास्तु विज्ञान को नियोजित किया गया है, और इमारत को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि सूर्य की किरणें पूरे दिन सूर्य की मूर्ति पर पड़ती हैं।

RAO'S ACADEMY

- हालांकि ललितादित्य के युग के शहर, कस्बे और खंडहर आसानी से बड़े मार्तंड मंदिर के अवशेष नहीं हैं, जिसे सम्राट ने उसी नाम के तीर्थ स्थल पर बनवाया था, जो प्राचीन काल के कश्मीरी हिंदू बिल्डरों की विशेषज्ञता का एक उदाहरण है।
- विष्णु-सूर्य को समर्पित, मार्तंड मंदिर में तीन अलग-अलग कक्ष हैं- मंडप, गर्भगृह और अंतलय-शायद कश्मीर में केवल तीन-कक्षीय मंदिर। यह उस स्थिति की ओर इशारा करता है जिसका उसने आनंद लिया।
- मंदिर एक अनूठी कश्मीरी शैली में बनाया गया है, हालांकि इसमें निश्चित रूप से गांधार प्रभाव है।
- कश्मीर के इतिहास का एक प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत राजतरंगिणी है, जिसे कल्हण द्वारा 12वीं शताब्दी में लिखा गया था, और काम के विभिन्न अनुवादों में मार्तंड की भव्यता का वर्णन है।
- मंदिर शास्त्रीय ग्रीको-रोमन, बौद्ध-गंधारन और उत्तर भारतीय शैलियों से प्रभावित है।

फिलीपींस के रेमन मैग्सेसे

खबरों में क्यों

केरल की पूर्व स्वास्थ्य मंत्री के के शैलजा ने 2022 के रेमन मैग्सेसे पुरस्कार के लिए अपना नामांकन अस्वीकार कर दिया है

महत्वपूर्ण बिंदु

- के. के. शैलजा ने कहा कि रेमन मैगसेसे के कम्युनिस्ट विरोधी रुख को देखते हुए, फिलीपींस की पूर्व राष्ट्रपति, जिनकी विरासत को प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है और इसकी नींव के निर्णय के लिए उन्हें एक राज्य की पहल के लिए एक व्यक्तिगत प्राप्तकर्ता के रूप में विचार करने के लिए उन्होंने अपना नामांकन अस्वीकार कर दिया था।

रेमन मैग्सेसे पुरस्कार के बारे में:

- 1958 में शुरू किया गया, रेमन मैग्सेसे पुरस्कार, जिसे व्यापक रूप से एशिया के नोबेल पुरस्कार के समकक्ष माना जाता है, एशिया में उत्कृष्ट नेतृत्व और सामुदायिक योगदान को मान्यता देता है।
- इस साल की शैलजा को 2016 से 2021 तक राज्य के स्वास्थ्य मंत्री के रूप में उनके प्रदर्शन के लिए पुरस्कार के लिए माना गया था, इस अवधि में केरल ने निपाह वायरस और कोविड -19 के खिलाफ लड़ाई देखी थी।

रेमन मैग्सेसे कौन थे?

- 31 अगस्त, 1907 को मैगसेसे सीनियर के यहाँ जन्म 1953 से 1957 में एक हवाई दुर्घटना में अपनी मृत्यु तक फिलीपींस के सातवें राष्ट्रपति थे।
- मैग्सेसे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्रशांत युद्ध (1941-1945) में शामिल होने से पहले एक ऑटोमोबाइल मैकेनिक के रूप में शुरू हुआ था।
- प्रशांत युद्ध में लगभग चार वर्षों तक जापानी कब्जे में फिलीपींस - फिर अमेरिका का एक उपनिवेश - दिखाई देगा। 1946 में अमेरिका ने औपचारिक रूप से फिलीपींस को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता दी।

रेमन मैग्सेसे पुरस्कार

- 1957 में, रेमन मैग्सेसे पुरस्कार की स्थापना रॉकफेलर ब्रदर्स फंड और फिलीपीन सरकार के न्यासियों द्वारा की गई थी ताकि मैग्सेसे की सेवा की विरासत, सुशासन और व्यावहारिक आदर्शवाद को आगे बढ़ाया जा सके।
- 1958 के बाद से छह दशकों में - पहले वर्ष पुरस्कार दिया गया - 300 से अधिक संगठनों और व्यक्तियों को उनके विकासात्मक प्रयासों के लिए मान्यता दी गई है जो एशिया के लिए और परिणामस्वरूप दुनिया के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष 31 अगस्त को मैग्सेसे की जयंती पर दिया जाता है।

सूची में भारतीय विजेता

- पुरस्कार जीतने वाले प्रमुख भारतीयों में 1958 में विनोबा भावे, 1962 में मदर टेरेसा, 1966 में कमलादेवी चट्टोपाध्याय, 1967 में सत्यजीत रे, 1997 में महाश्वेता देवी;
- हाल के वर्षों में अरविंद केजरीवाल (2006), गूंज की अंशु गुप्ता (2015) शामिल हैं। मानवाधिकार कार्यकर्ता बेजवाड़ा विल्सन (2016) और पत्रकार रवीश कुमार (2019) ने पुरस्कार जीता है।

दारा शिकोह

खबरों में क्यों

उपराष्ट्रपति ने दारा शिकोह को बताया सामाजिक समरसता का पथ प्रदर्शक।

महत्वपूर्ण बिंदु

- उपराष्ट्रपति ने कहा कि भारत के पास न केवल दूसरों के विचारों के प्रति श्सहिष्णुताश की गौरवशाली विरासत है, बल्कि सभी विचारों के साथ 'कार्य' की एक अनूठी संस्कृति है - बहुलवाद और समन्वयवाद की संस्कृति।
- महान अशोक के समय से लेकर मुगल युवराज दारा शिकोह तक - आपसी सम्मान की भावना का भारतीय राजाओं ने भी उदाहरण दिया था।

- नई दिल्ली में दारा शिकोह के "मजमा उल-बहरीन" के अरबी संस्करण का विमोचन करने के बाद एक सभा को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि मजमा-उल-बहरीन (जिसका अर्थ है 'दो महासागरों का संगम') धर्मों के बीच समानता पर अमूल्य प्रकाश डालता है। और भारत के लोगों के बीच मजबूत एकता लाने में मदद की।
- दारा शिकोह को प्रतिभाशाली, कुशल कवि और संस्कृत के विद्वान बताते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि वह सामाजिक सद्भाव और धार्मिक एकता के पथ प्रदर्शक थे।
- 'मजमा-उल-बहरीन' पुस्तक में, दारा शिकोह ने एक-एक करके हिंदू धर्म (वेदांत) और इस्लाम (सूफीवाद) के बीच सभी समानताओं को सूचीबद्ध किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इस्लाम और हिंदू धर्म के बीच का अंतर केवल मौखिक है।
- यह उल्लेख करते हुए कि दारा शिकोह ने विभिन्न धर्मों के बीच संवाद में सुधार के लिए प्रयास किया, श्री धनखड़ ने अपनी विरासत को पुनर्जीवित करने और वर्तमान समय में सामाजिक एकता को मजबूत करने के लिए अपने आध्यात्मिक विचार को लागू करने का आह्वान किया।
- इस अवसर पर आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में एक गीत 'अतुल्य भारत देश मेरा' का भी विमोचन किया गया। कृष्णा अधिकारी द्वारा लिखित और निर्मित गीत को नेपाल के प्रसिद्ध गजल गायक आनंद कार्की ने गाया है।

दारा शिकोहो के बारे में

- दारा शिकोह मुगल बादशाह शाहजहाँ के सबसे बड़े पुत्र और उत्तराधिकारी थे।
- उनका जन्म 11 मार्च 1615 को अजमेर में हुआ था, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की भूमि, जिनसे उनके पिता शाहजहाँ ने एक बेटे के लिए प्रार्थना की थी।
- उन्हें पदशहजादा-ए-बुजुर्ग मार्तबा की उपाधि से सम्मानित किया गया था और उनके पिता और उनकी बड़ी बहन, राजकुमारी जहांआरा बेगम द्वारा उत्तराधिकारी के रूप में उनका समर्थन किया गया था।
- उन्होंने छोटी उम्र में ही सूफी रहस्यवाद और कुरान में गहरी रुचि और दक्षता विकसित कर ली थी।
- पच्चीस वर्ष की आयु में, दारा ने अपनी पहली पुस्तक, सफीनत-उल-अवलिया लिखी, एक संक्षिप्त दस्तावेज जिसमें पैगंबर और उनके परिवार, खलीफाओं और भारत में लोकप्रिय पांच प्रमुख सूफी संप्रदायों के संतों के जीवन का विवरण दिया गया था।
- उन्हें सूफियों के कादिरी आदेश में उनके पीर (आध्यात्मिक मार्गदर्शक), मुल्ला शाह द्वारा दीक्षा दी गई थी।
- वह अर्मेनियाई सूफी-बारहमासी रहस्यवादी सरमद काशानी के अनुयायी थे, साथ ही लाहौर के प्रसिद्ध कादिरी सूफी संत मियां मीर, जिनसे उनका परिचय मुल्ला शाह बदख्शी (मियां मीर के आध्यात्मिक शिष्य और उत्तराधिकारी) ने किया था।
- उन्होंने 1657 में पचास उपनिषदों का उनकी मूल संस्कृत से फारसी में अनुवाद पूरा कर लिया था ताकि मुस्लिम विद्वानों द्वारा उनका अध्ययन किया जा सके।
- उनके अनुवाद को अक्सर सिर-ए-अकबर ("सबसे बड़ा रहस्य") कहा जाता है, जहां वह साहसपूर्वक, परिचय में, अपनी सट्टा परिकल्पना को बताता है कि कुरान में काम को "किताब अल-मकनून" के रूप में संदर्भित किया गया है या छिपी हुई किताब, उपनिषदों के अलावा और कोई नहीं है।
- उनका सबसे प्रसिद्ध काम, मजमा-उल-बहरीन ("दो समुद्रों का संगम"), सूफिक और वेदांतिक अटकलों के बीच रहस्यमय और बहुलवादी समानता के रहस्योद्घाटन के लिए भी समर्पित था।
- उन्होंने योग वशिष्ठ का अनुवाद भी करवाया था।
- उनके द्वारा अन्य कार्यों में 'रिसाला-ए-हक नुमा' (द कंपास ऑफ द ट्रुथ), 'शथियात या हसनत-उल-अरिफिन' और 'इक्सिर-ए-आजम' शामिल हैं।
- उन्होंने सिखों के सातवें गुरु, गुरु हर राय के साथ मित्रता विकसित की थी।
- उत्तराधिकार के युद्ध में जो शाह जंगेर भाई प्रिंस मुहिउद्दीन (बाद में सम्राट औरंगजेब) के बाद देवराई की लड़ाई में हुआ था।
- उन्हें औरंगजेब के आदेश पर 1659 में शाही सिंहासन के लिए एक द्वेषपूर्ण संघर्ष में मार डाला गया था।

अम्बेडकर सर्किट

खबरों में क्यों

सरकार ने अंबेडकर स्थलों को जोड़ने वाले पर्यटन सर्किट की योजना बनाई।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारतीय संविधान के संस्थापक भीम राव अम्बेडकर से जुड़े पांच प्रमुख स्थलों 'पंच तीर्थ' को जोड़ने वाला एक पर्यटन सर्किट, सरकार द्वारा तैयार की जा रही पर्यटन कार्य योजना के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है।
- सर्किट कनेक्टिविटी में सुधार, पर्यटन के बुनियादी ढांचे को बढ़ाने, ब्रांडिंग को सुव्यवस्थित करने और अंबेडकर के साथ स्थानों के जुड़ाव को प्रदर्शित करने पर ध्यान केंद्रित करेगा।
- धर्मशाला में शुरू हुए राज्य पर्यटन मंत्रियों के तीन दिवसीय सम्मेलन में। केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने यह भी कहा कि अगले साल संसद के बजट सत्र से पहले भारत की अपनी लंबे समय से प्रतीक्षित पर्यटन नीति में सुधार होगा।
- 'पंच तीर्थ' - अम्बेडकर से जुड़े प्रमुख स्थलों में - महू में उनका जन्मस्थान, लंदन, जहां वे रुके और अध्ययन किया, नागपुर, जहां उन्होंने अध्ययन किया, दिल्ली, जहां उनकी मृत्यु हुई और मुंबई, जहां उनका अंतिम संस्कार किया गया, शामिल हैं।
- सरकार पर्यावरण-पर्यटन, वन्य जीवन, बौद्ध, रेगिस्तान, आध्यात्मिक, रामायण, कृष्णा, तटीय, पूर्वोत्तर, ग्रामीण, हिमालयी, आदिवासी और विरासत के क्षेत्रों में थीम-आधारित पर्यटक सर्किट के एकीकृत विकास का प्रयास कर रही है।
- थीम-आधारित सर्किट के विकास के अलावा, मंत्री ने यह भी कहा कि घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख क्षेत्रों में अन्य चीजों के अलावा, वन्यजीव, टिकाऊ और होम स्टे पर्यटन शामिल हैं और निजी उद्यमों को और अधिक गहराई से निवेश करने के लिए आमंत्रित करने पर भी ध्यान केंद्रित करेंगे।

पर्यटन कार्य योजना में देश में रेल पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 3000 रेल कोच लगाने का प्रस्ताव

राज्य के पर्यटन मंत्रियों के राष्ट्रीय सम्मेलन, जिसका उद्देश्य सर्वोत्तम प्रथाओं, सफल परियोजनाओं और पर्यटन उत्पाद के अवसरों को साझा करना है, में भी पहली बार पश्चिम बंगाल की भागीदारी देखी जा रही है।

- सम्मेलन भारत के G20 अध्यक्षता के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, जो इस वर्ष के अंत में शुरू होगा, और जिसका उद्देश्य वैश्विक दर्शकों के लिए भारत को एक जरूरी गंतव्य के रूप में प्रदर्शित करना है।
- भारत ने हवाई संपर्क को मजबूत करने के लिए लगातार काम किया है और भारत में हवाई अड्डों की संख्या 2014 में 74 से बढ़कर वर्तमान में 140 हो गई है और 2025 तक इसे और बढ़ाकर 220 कर दिया जाएगा।
- सम्मेलन को पर्यटन बुनियादी ढांचे के विकास, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और विरासत पर्यटन, हिमालयी राज्यों में पर्यटन, जिम्मेदार और टिकाऊ पर्यटन, पर्यटन स्थलों के विपणन और प्रचार के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी की भूमिका, में होमस्टे के उभरते महत्व पर विषयगत सत्रों में विभाजित किया गया है। भारतीय आतिथ्य क्षेत्र, आयुर्वेद, कल्याण और चिकित्सा मूल्य यात्रा और अंत में वन और वन्यजीव पर्यटन पर।

प्रसाद योजना

इसका उद्देश्य आध्यात्मिक स्थानों के आसपास पर्यटन सुविधाओं को मजबूत करना है, जिसके तहत 24 राज्यों में 39 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।

इन पर्यटकों, तीर्थ और विरासत स्थलों/शहरों में बुनियादी ढांचे का विकास स्थानीय समुदायों की स्वच्छता, सुरक्षा, सार्वभौमिक पहुंच, सेवा वितरण, कौशल विकास और आजीविका पर केंद्रित है।

स्वदेश दर्शन योजना 2.0

- पर्यटन और गंतव्य-केंद्रित दृष्टिकोण का पालन करते हुए स्थायी और जिम्मेदार स्थलों को विकसित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया।
- यह पिछली योजनाओं का विकास है और इसका उद्देश्य पर्यटन और संबद्ध बुनियादी ढांचे, पर्यटन सेवाओं, मानव पूंजी विकास, गंतव्य प्रबंधन और नीति और संस्थागत द्वारा समर्थित प्रोत्साहन को कवर करते हुए टिकाऊ और जिम्मेदार पर्यटन स्थलों को विकसित करने के लिए एक समग्र मिशन के रूप में विकसित करना है।
- राष्ट्रीय सम्मेलन का लक्ष्य भारत 2047 की ओर बढ़ते हुए पर्यटन और इसके विकास के लिए एक साझा दृष्टिकोण का निर्माण करना भी है।

- आगामी 25 वर्ष अमृत काल होने के कारण, सम्मेलन का उद्देश्य वर्ष 2047 में भारत में पर्यटन के लिए दृष्टि स्थापित करने के लिए राज्य और केंद्र सरकारों के बीच एक आम बातचीत शुरू करना है।

हिंदी दिवस 2022

खबरों में क्यों

हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- हिंदी को भारत में सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख भाषाओं में से एक माना जाता है।
- हिंदी भाषा को सम्मान देने के लिए हिंदी दिवस मनाया जाता है। हिंदी भाषा लोगों को आपस में जोड़ती है।
- भारत में हिंदी दिवस का उत्सव देश की आज़ादी के बाद शुरू हुआ।
- 14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को भारत में राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपनाया गया था।
- 14 सितंबर 1949 को, संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया।
- मुख्य उद्देश्य इस दिन को मनाना और भाषा के मूल्य पर जोर देना था।
- भारत विभिन्न भाषाओं का देश है लेकिन हिंदी और अंग्रेजी भाषा सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।
- दुनिया भर में 420 मिलियन से अधिक लोग पहली भाषा के रूप में हिंदी बोलते हैं और लगभग 120 मिलियन हिंदी दिवस हम सभी के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें याद दिलाता है कि हिंदी हमारी प्राथमिक भाषा है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए।
- संविधान के अनुच्छेद 351 ने हिंदी भाषा के प्रचार और विकास के लिए इस प्रकार नीति बनाई जाए कि हिंदी सभी मामलों में अभिव्यक्ति के साधन के रूप में काम कर सके।
- 2011 की भाषाई जनगणना के अनुसार, 52.8 करोड़ व्यक्तियों, या 43.6% आबादी के साथ, हिंदी सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, इसे अपनी मातृभाषा के रूप में घोषित किया गया है।

हिंदी और हिंदी दिवस के बारे में रोचक तथ्य

1. कवि अमीर खुसरो पहले लेखक थे जिन्होंने पहली हिंदी कविता की रचना और विमोचन किया।
2. "हिंदी" शब्द वास्तव में फारसी भाषा से लिया गया है और हिंदी भाषा के इतिहास पर पुस्तक लिखने वाला पहला लेखक भारतीय नहीं था, बल्कि एक फ्रांसीसी लेखक (ग्रासिम द तासी) था।
3. 1977 में, अटल बिहारी वाजपेयी ने गर्व के साथ हिंदी भाषा के प्रति सम्मान दिखाया और संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा में एक भाषण प्रस्तुत किया।
4. 26 जनवरी 1950 को संसद के अनुच्छेद 343 के तहत हिंदी को प्राथमिक भाषा माना गया था।
5. हिंदी ने 2000 में पहली हिंदी पत्रिका प्रकाशित करके इंटरनेट पर शुरुआत की, तब से हिंदी भाषा ने वर्ल्ड वाइड वेब पर अपना प्रभाव छोड़ना शुरू कर दिया और अब इतनी लोकप्रिय हो गई है।
6. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में 'अच्छा' और 'सूर्य नमस्कार' जैसे कई हिंदी शब्द शामिल किए गए हैं।
7. हिंदी नेपाल, न्यूजीलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, युगांडा, फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, बांग्लादेश, पाकिस्तान और टोबैगो में बोली जाती है।

RAO'S ACADEMY

सुरजापुरी और बज्जिका बोलियाँ

खबरों में क्यों

हाल ही में बिहार सरकार ने सुरजापुरी और बज्जिका बोलियों को बढ़ावा देने के लिए अकादमियों की स्थापना करने को कहा है।

महत्वपूर्ण बिंदु

बिहार की राज्य सरकार ने हाल ही में राज्य के शिक्षा विभाग को हिंदी और उर्दू अकादमियों की तर्ज पर सुरजापुरी और बज्जिका बोलियों को बढ़ावा देने के लिए अकादमियों की स्थापना करने के लिए कहा है।

सुरजापुरी बोली-

- सुरजापुरी मुख्य रूप से किशनगंज और पूर्वोत्तर बिहार के सीमांचल के अन्य हिस्सों में बोली जाती है, जिसमें कटिहार, पूर्णिया और अररिया जिले शामिल हैं।
- बोली, बांग्ला, उर्दू और हिंदी का मिश्रण, पश्चिम बंगाल के निकटवर्ती भागों में भी बोली जाती है।
- सुरजापुरी नाम सुरजापुर परगना से आया है, जो अब मौजूद नहीं है। लेकिन पूर्णिया और किशनगंज के बीच सुरजापुर नामक टोल प्लाजा है।
- हालांकि सुरजापुरी का धर्म से कोई विशेष संबंध नहीं है, लेकिन भाषा बोलने वालों का सबसे बड़ा हिस्सा सुरजापुरी मुसलमानों का है, जो मुख्य रूप से लगभग 70 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले जिले किशनगंज में रहते हैं।

बज्जिका बोली-

- बज्जिका, बिहार में बोली जाने वाली पांच बोलियों में से एक, हिंदी और मैथिली का मिश्रण है, और मुख्य रूप से वैशाली, मुजफ्फरपुर और सीतामढ़ी, शिवहर और समस्तीपुर के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।
- बज्जिका भोजपुरी और मैथिली जैसी अन्य बोलियों की तरह प्रसिद्ध नहीं है।

2 राजनीति

2021 में मानव तस्करी के केवल 16% मामलों में दोष सिद्ध हुए : NCRB

खबरों में क्यों

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, देश भर में मानव तस्करी के मामलों में दोषसिद्धि दर कम बनी हुई है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- पुलिस ने 2021 में देश भर में मानव तस्करी रोधी इकाइयों (AHTU) के तहत दर्ज किए गए 2,189 मामलों में से 84.7 प्रतिशत मामलों में आरोप पत्र दायर किया, केवल 16 प्रतिशत मामलों में ही दोष सिद्ध हुआ।
- जबकि 11 राज्यों के लिए दोषसिद्धि के आंकड़े उपलब्ध नहीं थे, आठ राज्यों और तीन केंद्र शासित प्रदेशों में कोई भी दोष सिद्ध नहीं हुआ।
- सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाला झारखंड था, जिसने 2021 में दर्ज किए गए 92 मामलों में से 84.2 प्रतिशत में दोष सिद्ध किया।
- 2020 में, पुलिस ने दर्ज किए गए 1,714 तस्करी के मामलों में से 85.2 प्रतिशत में आरोप पत्र दायर किया, लेकिन कुल मामलों में से केवल 10.6 प्रतिशत मामलों में ही दोष सिद्ध हुआ। सात राज्यों ने कोई दोष सिद्ध नहीं होने की सूचना दी, जबकि दो ने 2 प्रतिशत से कम की दोषसिद्धि दर की सूचना दी।
- जिन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने 2021 में शून्य दोषसिद्धि की सूचना दी वे हैं: अरुणाचल प्रदेश, असम, गोवा, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, ओडिशा, तेलंगाना, दिल्ली, चंडीगढ़ और जम्मू और कश्मीर।
- इनमें से पुलिस ने हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना में 90 प्रतिशत से अधिक मामलों में और गोवा और हरियाणा में 80 प्रतिशत से अधिक मामलों में अंतिम आरोप पत्र दायर किया था।
- तस्करी के सबसे अधिक मामले तेलंगाना (347), महाराष्ट्र (320) और असम (203) में दर्ज किए गए।
- पिछले तीन वर्षों में, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में मानव तस्करी के सबसे अधिक मामले सामने आए हैं, इसके बाद असम, झारखंड, केरल, ओडिशा और राजस्थान का स्थान है।
- तेलंगाना को छोड़कर, सभी राज्यों ने 2020 में मामलों में गिरावट देखी, महामारी के पहले वर्ष, जिसमें लॉकडाउन देखा गया था।

मानव तस्करी क्या है:

- मानव तस्करी लाभ के लिए उनका शोषण करने के उद्देश्य से बल, धोखाधड़ी या धोखे के माध्यम से लोगों की भर्ती, परिवहन, स्थानांतरण, शरण या प्राप्ति है। दुनिया के हर क्षेत्र में होने वाले इस अपराध के शिकार सभी उम्र और सभी पृष्ठभूमि के पुरुष, महिलाएं और बच्चे हो सकते हैं।
- अवैध व्यापार करने वाले अक्सर हिंसा या धोखेबाज रोजगार एजेंसियों और शिक्षा और नौकरी के अवसरों के झूठे वादों का इस्तेमाल अपने पीड़ितों को बरगलाने और मजबूर करने के लिए करते हैं।

भारत में अवैध व्यापार से संबंधित संवैधानिक और विधायी प्रावधान क्या हैं?

- भारत के संविधान के अनुच्छेद 23(1) के तहत मानव या व्यक्तियों की तस्करी निषिद्ध है।

RAO'S ACADEMY
YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

- अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम, 1956 (ITPA) व्यावसायिक यौन शोषण के लिए तस्करी की रोकथाम के लिए प्रमुख कानून है।
- आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम 2013 लागू हो गया है जिसमें भारतीय दंड संहिता की धारा 370 और 370A IPC के साथ प्रतिस्थापित किया गया है जो किसी भी रूप में शोषण के लिए बच्चों की तस्करी सहित मानव तस्करी के खतरे का मुकाबला करने के लिए व्यापक उपाय प्रदान करता है। जिसमें शारीरिक शोषण या किसी भी प्रकार का यौन शोषण, दासता, या अंगों को जबरन हटाना शामिल है।
- यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (POCSO) अधिनियम, 2012, जो 14 नवंबर, 2012 से लागू हुआ है, बच्चों को यौन शोषण और शोषण से बचाने के लिए एक विशेष कानून है। यह यौन शोषण के विभिन्न रूपों के लिए सटीक परिभाषा प्रदान करता है, जिसमें भेदक और गैर-प्रवेश यौन हमला, यौन उत्पीड़न शामिल है।

भारत ने अवैध व्यापार पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों को कैसे लागू किया है?

- **संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनः** भारत ने अंतर्राष्ट्रीय संगठित अपराध पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCTOC) की पुष्टि की है, जिसमें व्यक्तियों, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों में तस्करी की रोकथाम, दमन और सजा के प्रोटोकॉल में से एक है। कन्वेंशन को लागू करने के लिए विभिन्न कार्रवाई की गई है और प्रोटोकॉल के अनुसार, आपराधिक कानून संशोधन अधिनियम, 2013 अधिनियमित किया गया है जिसमें मानव तस्करी को विशेष रूप से परिभाषित किया गया है।
- **सार्क सम्मेलनः** भारत ने वेश्यावृत्ति के लिए महिलाओं और बच्चों की तस्करी को रोकने और उनका मुकाबला करने पर सार्क सम्मेलन की पुष्टि की है। सार्क कन्वेंशन को लागू करने के लिए एक क्षेत्रीय टास्क फोर्स का गठन किया गया था। क्षेत्रीय कार्यबल की अब तक पांच बैठकें हो चुकी हैं। पांचवीं बैठक 11-12 अप्रैल, 2013 को पारो, भूटान में आयोजित की गई थी। जैसा कि पांचवीं बैठक में पेश किया गया था, मानव तस्करी विरोधी इकाइयों के अनुभवों से सीखने के लिए 18-22 नवंबर, 2013 तक सार्क सदस्य देशों के लिए एक अध्ययन दौरा आयोजित किया गया था (AHTUs) देश के विभिन्न जिलों में स्थापित हैं। अध्ययन दौरे में श्रीलंका, भूटान और अफगानिस्तान के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय भाषा के रूप में संस्कृत

खबरों में क्यों

सुप्रीम कोर्ट ने एक जनहित याचिका (PIL) को खारिज कर दिया, जिसमें संस्कृत को राष्ट्रीय भाषा के रूप में अधिसूचित करने के निर्देश देने की मांग की गई थी।

महत्वपूर्ण बिंदु

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह मुद्दा नीति के दायरे में है, जिसमें संवैधानिक संशोधन की आवश्यकता है, जिसके लिए संसद में विस्तृत चर्चा होनी चाहिए, न कि न्यायपालिका के दायरे में।
- किसी भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित करने के लिए संसद को कोई रिट जारी नहीं की जा सकती, पीठ ने याचिका को खारिज करते हुए कहा।
- शीर्ष अदालत ने याचिकाकर्ता को संबंधित अधिकारियों के समक्ष उचित प्रतिनिधित्व करने की स्वतंत्रता प्रदान की।
- जनहित याचिका सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी और वकील केजी वंजारा द्वारा दायर की गई थी, जिन्होंने केंद्र सरकार से संस्कृत को राष्ट्रीय भाषा के रूप में अधिसूचित करने का निर्देश देने की मांग की थी।
- याचिकाकर्ता के वकील ने संस्कृत को "मातृभाषा" के रूप में शामिल किया, जिससे अन्य भाषाओं ने प्रेरणा ली। उन्होंने बार-बार प्राच्य विद्वान सर विलियम जोन्स और प्राचीन भाषा के उनके अध्ययन का आह्वान किया।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- याचिका में केंद्र सरकार को यह कहते हुए संस्कृत को राष्ट्रभाषा के रूप में अधिसूचित करने का निर्देश देने की मांग की गई है कि इस तरह के कदम से देश की आधिकारिक भाषाओं के रूप में अंग्रेजी और हिंदी का प्रावधान करने वाले मौजूदा संवैधानिक प्रावधानों में कोई बाधा नहीं आएगी।
- **भारत की राष्ट्रीय भाषा:** संविधान के अनुसार, भारत ने किसी भी भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा नहीं दिया है।

हिंदी की स्थिति

- संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत संघ की राजभाषा देवनागरी में हिंदी होगी।
- अंग्रेजी का प्रयोग 15 वर्षों की अवधि तक जारी रहेगा।
- राजभाषा अधिनियम, 1963 उस 15 वर्ष की अवधि की समाप्ति की प्रत्याशा में पारित किया गया था, जिसके दौरान संविधान ने मूल रूप से आधिकारिक उद्देश्यों के लिए अंग्रेजी के उपयोग की अनुमति दी थी।
- अनुच्छेद 351 (केन्द्र सरकार हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देगी)।

जम्मू-कश्मीर में सेवा देने के लिए आईएएस और आईपीएस अधिकारियों के लिए नियमों में ढील

खबरों में क्यों

केंद्र ने जम्मू-कश्मीर में सेवा देने के लिए अखिल भारतीय सेवाओं और केंद्रीय सेवाओं के नियमों में ढील दी

महत्वपूर्ण बिंदु

- केंद्र ने जम्मू और कश्मीर में तैनात होने के लिए अखिल भारतीय सेवाओं (एआईएस) और अन्य केंद्रीय सेवाओं के अधिकारियों को प्रोत्साहित करने के लिए मानदंडों (प्रतिनियुक्ति) में ढील दी है।
- केंद्र शासित प्रदेश 2019 के बाद से अधिकारियों की कमी से जूझ रहा है, जब जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को दो भागों में विभाजित किया गया था।
- जम्मू-कश्मीर में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) और अन्य केंद्रीय सेवाओं के अधिकारियों की पोस्टिंग को प्रोत्साहित करने के लिए कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (DoPT) द्वारा प्रतिनियुक्ति नियमों में ढील दी गई है।

मुख्य बिंदु-

निम्नलिखित आवश्यकताओं को समाप्त कर दिया गया है-

- कूलिंग ऑफ पीरियड।
- अंतर-संवर्ग प्रतिनियुक्ति के लिए कड़े मानदंड।
  - ♦ अंतर-संवर्ग प्रतिनियुक्ति केवल बाध्यकारी परिस्थितियों में दी जाती है, एक विवाह होने के कारण अब मानदंडों को उदार बनाया गया है।
  - ♦ इस छूट के साथ, विभिन्न सेवाओं और विभिन्न संवर्गों से संबंधित बीस से अधिक अधिकारियों को महत्वपूर्ण समय पर विभिन्न स्तरों पर जम्मू-कश्मीर में तैनात किया गया है।

एआईएस अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति क्या है?

- सेवा का प्रत्येक राज्य संवर्ग एक केंद्रीय प्रतिनियुक्ति कोटा प्रदान करता है जिसके लिए केंद्र सरकार में पदों पर सेवा देने के लिए प्रशिक्षित और अनुभवी सदस्यों को प्रदान करने के लिए सेवा में अतिरिक्त भर्ती की आवश्यकता होती है।
- जब किसी अधिकारी को संवर्ग के बाहर या पदोन्नति की सीधी रेखा के बाहर से सीमित अवधि के लिए नियुक्त किया जाता है, जिसके अंत तक उसे अपने मूल संवर्ग में वापस जाना होगा, तो वह प्रतिनियुक्ति पर या अल्पकालिक अनुबंध पर जाना जाता है।

प्रतिनियुक्ति पर वर्तमान नियम

- केंद्र हर साल केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर जाने के इच्छुक अखिल भारतीय सेवाओं (आईएएस, आईपीएस और भारतीय वन सेवा) के अधिकारियों की "प्रस्ताव सूची" मांगता है, जिसमें से वह अधिकारियों का चयन करता है।
- किसी भी समय यह संवर्ग की कुल संख्या के 40% से अधिक नहीं हो सकता है।
- केंद्र राज्य सरकारों को अधिकारियों की एक सूची प्रदान करने के लिए आदेश देता है, अधिकारी को भी नियम 6 (2) के साथ तैयार होना चाहिए, जिसमें कहा गया है कि उसकी सहमति के बिना "किसी भी कैडर अधिकारी को किसी भी संगठन या निकाय में आइटम (ii) में संदर्भित प्रकार के अलावा प्रतिनियुक्त नहीं किया जाएगा"।
- भारतीय प्रशासनिक सेवा में केंद्रीय प्रतिनियुक्ति आईएएस (संवर्ग) नियम-1954 के नियम-6 (1) के अंतर्गत आती है, जिसे मई 1969 में शामिल किया गया था।
- इसमें कहा गया है कि एक संवर्ग अधिकारी, संबंधित राज्य सरकारों और केंद्र सरकार की सहमति से, केंद्र सरकार या किसी अन्य राज्य सरकार या किसी कंपनी, एसोसिएशन या व्यक्तियों के निकाय के तहत सेवा के लिए प्रतिनियुक्त किया जा सकता है, चाहे वह निगमित हो या नहीं, जो पूरी तरह या काफी हद तक केंद्र सरकार या किसी अन्य राज्य सरकार के स्वामित्व या नियंत्रण में है।
- बशर्ते कि किसी भी तरह की असहमति की स्थिति में मामला केंद्र सरकार द्वारा तय किया जाएगा और संबंधित राज्य सरकार केंद्र सरकार के फैसले को लागू करेगी।

संदेहपूर्ण राजनीतिक दलों को बाहर निकालने के लिए चुनाव आयोग का कदम

खबरों में क्यों

आयकर अधिकारियों ने पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों (RUPP) पर अखिल भारतीय छापेमारी की।

महत्वपूर्ण बिंदु

- हजारों पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल (RUPP) पिछले कुछ वर्षों में उभरे हैं, जिनमें बहुत कम या नगण्य राजनीतिक गतिविधि दिखाई दे रही है।

RUPPs पर चुनाव आयोग की जांच

- ECI लगातार RUPP की जांच कर रहा है और 86 RUPP या तो संबंधित राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के संबंधित मुख्य निर्वाचन अधिकारियों द्वारा किए गए भौतिक सत्यापन के बाद या डाक प्राधिकरण से प्राप्त पत्रों/नोटिस की रिपोर्ट के आधार पर अस्तित्वहीन पाए गए हैं। RUPP के पंजीकृत पते पर भेजा गया।
- चुनाव आयोग ने 87 और 111 RUPP को असूचीबद्ध कर दिया था जिससे असूचीबद्ध RUPP की संख्या 284 हो गई।
- अपनी जांच में, चुनाव आयोग ने पता लगाया कि 253 दलों, 66 RUPP ने वास्तव में प्रतीक के आदेश 1968 के पैरा 10B के अनुसार एक सामान्य प्रतीक के लिए आवेदन किया था और संबंधित चुनाव नहीं लड़ा था।
- एक राज्य के उक्त विधान सभा चुनाव के संबंध में कुल उम्मीदवारों में से कम से कम 5 प्रतिशत उम्मीदवारों को खड़ा करने के उपक्रम के आधार पर RUPP को एक सामान्य प्रतीक का विशेषाधिकार दिया जाता है।
- RUPPs वे राजनीतिक दल हैं जिनका वोट शेयर मान्यता के लिए आवश्यक सीमा से कम है। ECI डेटा ने एक साल पहले 2,796 RUPP दिखाया, जो दो दशकों में 300% की वृद्धि थी।
- 86 गैर-मौजूद RUPPs को RUPPs के रजिस्टर की सूची से हटा दिया गया है जो प्रतीक आदेश, 1968 के तहत लाभ पाने के हकदार नहीं होने के लिए खुद को उत्तरदायी बनाते हैं।
- जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 29ए के तहत आयोग द्वारा बनाए गए RUPPs के रजिस्टर में 253 RUPPs को 'निष्क्रिय RUPPs' के रूप में चिह्नित किया गया है।

RUPPs पर IT की नकेल

- आयकर अधिकारियों ने पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों (RUPPs) पर अखिल भारतीय छापेमारी की, जो उनके संदिग्ध वित्तीय लेनदेन की पूर्व जांच के बाद हुई थी।
- ये छापे चुनाव आयोग द्वारा शुरू की गई एक बड़ी सफाई प्रक्रिया में स्थित होने की जरूरत है। यह एक अच्छा कदम है और इसे इसके तार्किक निष्कर्ष तक ले जाया जाना चाहिए।
- समस्या एक अवास्तविक धारणा से उपजी है जो राजनीतिक दलों को दिए जाने वाले आयकर लाभों को आधार बनाती है। यह है कि कर छूट के साथ-साथ गुमनामी के वित्तपोषण से चुनावी लोकतंत्र मजबूत होगा और दुरुपयोग नहीं होगा।
- कर छूट, गुमनामी के वित्तपोषण और आसान पंजीकरण का संयोजन दुरुपयोग के लिए एक परिपक्व प्रणाली है।
- चुनावी बांड की शुरूआत, जो मांग पर वाहक को देय वचन पत्र हैं, समस्याग्रस्त है।
- वास्तव में, यह चुनावी प्रणाली की अखंडता के लिए अधिक खतरा बन गया है क्योंकि यह न केवल बिना किसी सीमा के गुमनाम योगदान की अनुमति देता है, बल्कि यह राजनीतिक दलों के वित्तपोषण के अधिक समस्याग्रस्त स्रोतों के द्वार भी खोलता है।

सिख गुरुद्वारा (प्रबंधन) अधिनियम 2014

खबरों में क्यों

सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सिख गुरुद्वारा (प्रबंधन) अधिनियम 2014 की वैधता को बरकरार रखा।

महत्वपूर्ण बिंदु

- सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सिगुरुद्वारा (प्रबंधन) अधिनियम, 2014 की वैधता को बरकरार रखा, जिसके तहत राज्य में गुरुद्वारों के मामलों के प्रबंधन के लिए एक अलग समिति का गठन किया गया था, जिसमें कहा गया था कि राज्य में धार्मिक अल्पसंख्यकों के मामले हैं। सिक्खों को केवल सिक्खों के हाथ में छोड़ दिया गया।
- सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने कहा कि चूंकि राज्य में सिख अल्पसंख्यकों के मामलों का प्रबंधन अकेले सिखों द्वारा किया जाना है, इसलिए इसे संविधान के अनुच्छेद 25 और 26 के तहत प्रदत्त किसी भी मौलिक

अधिकार का उल्लंघन नहीं कहा जा सकता है।

- सुप्रीम कोर्ट ने आठ साल पहले दायर दो याचिकाओं को खारिज कर दिया, जिसमें हरियाणा सिख गुरुद्वारा अधिनियम, 2014 को रद्द करने की मांग की गई थी, जो 14 जुलाई 2014 को लागू हुआ था।
- पीठ-जिसमें न्यायमूर्ति विक्रम नाथ भी शामिल थे - ने कहा कि हरियाणा अधिनियम सिख गुरुद्वारा अधिनियम, 1925 के समान था, जिसमें हरियाणा अधिनियम की धारा 3 के तहत गुरुद्वारा मामलों के प्रबंधन के लिए एक समिति गठित करने के समान प्रावधान थे।
- इसलिए, राज्य में धार्मिक अल्पसंख्यक यानी सिखों के मामलों को उसी तरह से सिखों के हाथों में छोड़ दिया जाता है जैसे कि 1925 के अधिनियम के तहत था।
- हरियाणा अधिनियम में भी हरियाणा सिख गुरुद्वारा न्यायिक आयोग की व्यवस्था उसी प्रकार की गई है जैसे 1925 के अधिनियम के तहत प्रदान की गई है। गुरुद्वारा के मामलों को फिर से स्थानीय गुरुद्वारा समिति द्वारा प्रबंधित करने की आवश्यकता है।
- हरियाणा अधिनियम के खिलाफ दो याचिकाएं थीं-पहली हरभजन सिंह द्वारा - कुरुक्षेत्र से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति के निर्वाचित प्रतिनिधि और दूसरी SGPC द्वारा।
- सिंह ने 2014 के अधिनियम को इस आधार पर चुनौती दी कि यह संवैधानिक प्रावधानों, पंजाब पुनर्गठन अधि नियम, 1966 के वैधानिक प्रावधानों के खिलाफ है और सिखों के बीच मतभेद पैदा करने के अपने इरादे में भी विभाजनकारी था। याचिकाकर्ताओं ने 2014 के अधिनियम को इस आधार पर भी चुनौती दी कि इसने सिखों के धर्म के मौलिक अधिकार का उल्लंघन किया है।
- याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया कि पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 की धारा 72 एसजीपीसी के संबंध में एक अंतर-राज्यीय निकाय कॉर्पोरेट के रूप में कानून बनाने की शक्ति केवल केंद्र सरकार के पास सुरक्षित है और किसी एक राज्य को कानून बनाकर विभाजन करने का कोई प्रावधान नहीं है।
- इसे जल्दबाजी में बनाया गया कानून बताते हुए याचिकाकर्ताओं ने कहा था कि यह न केवल पंजाब पुनर्गठन अधिनियम के प्रावधानों के खिलाफ है, बल्कि सिख धर्म के अनुयायियों के बीच मतभेद पैदा करने के अपने इरादे में भी विभाजनकारी है।
- केंद्र ने तर्क दिया था कि केवल संसद के पास इस विषय पर कानून बनाने का विशेष अधिकार है। हरियाणा या पंजाब राज्य के लिए कोई औचित्य नहीं है। इसलिए, हरियाणा अधिनियम को अधिनियमित करने के लिए हरियाणा राज्य की विधायी क्षमता के संबंध में प्रविष्टि 44 की कोई प्रयोज्यता नहीं होगी।
- यह मानते हुए कि यह एक वैधानिक निकाय की समावेश सूची II (सातवीं अनुसूची के तहत राज्य सूची) की प्रविष्टि 32 में आता है, साथ ही असंगठित धार्मिक और अन्य समाज, शीर्ष अदालत ने निष्कर्ष निकाला कि हरियाणा अधिनियम राज्य की विधायी क्षमता के भीतर था।
- संक्रमणकालीन प्रावधान अर्थात, 1966 का अधिनियम या 1957 का अधिनियम, सूची II न्यायालय में उल्लिखित विषयों पर कानून बनाने की राज्य विधायिका की विधायी क्षमता को प्रभावित नहीं करता है।
- अनुच्छेद 25 सभी नागरिकों को अंत:करण की स्वतंत्रता, धर्म को मानने, आचरण करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता की गारंटी देता है।

यह लेख यह प्रावधान भी देता है कि राज्य कानून बना सकता है:

- यह किसी भी धार्मिक प्रथा से जुड़ी किसी भी वित्तीय, आर्थिक, राजनीतिक, या अन्य धर्मनिरपेक्ष गतिविधि को नियंत्रित और प्रतिबंधित करता है।
- यह सामाजिक कल्याण और सुधार या हिंदुओं के सभी वर्गों के लिए एक सार्वजनिक चरित्र के हिंदू धार्मिक संस्थानों को खोलने का प्रावधान करता है। इस प्रावधान के तहत, हिंदुओं को सिख, जैन या बौद्ध धर्मों को मानने वाले लोगों सहित माना जाता है, और हिंदू संस्थानों को भी तदनुसार माना जाएगा।
- कृपाण धारण करने और धारण करने वाले सिख धर्म के लोगों को सिख धर्म के पेशे में शामिल माना जाएगा।

अनुच्छेद 26

यह अनुच्छेद प्रदान करता है कि नैतिकता, स्वास्थ्य और सार्वजनिक व्यवस्था के अधीन प्रत्येक धार्मिक संप्रदाय के पास निम्नलिखित अधिकार हैं-

- धार्मिक और धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए संस्थान बनाने और बनाए रखने का अधिकार।
- धर्म के मामले में अपने मामलों का प्रबंधन करने का अधिकार।
- चल और अचल संपत्ति के अधिग्रहण का अधिकार।
- ऐसी संपत्ति को कानून के अनुसार प्रशासित करने का अधिकार।

मौत की सजा

खबरों में क्यों

सुप्रीम कोर्ट चाहता है कि संविधान पीठ मौत की सजा के लिए मानदंड तय करे

महत्वपूर्ण बिंदु

- सर्वोच्च न्यायालय ने पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ को स्वप्रेरणा से सुनवाई अदालतों के लिए एक समान दिशा-निर्देश तैयार करने से संबंधित मामले को "वास्तविक और सार्थक अवसर" देने के लिए संदर्भित किया, जो दोषियों को मौत की सजा देने वाले अपराधों के लिए दोषी ठहराया गया था।
- शीर्ष अदालत ने कहा कि यह आदेश इस सवाल पर विभिन्न निर्णयों के बीच मतभेद और दृष्टिकोण के कारण आवश्यक है कि क्या, एक मृत्युदंड के लिए दोषसिद्धि दर्ज करने के बाद, कानून के तहत अदालत इस मुद्दे पर एक अलग सुनवाई करने के लिए बाध्य है।
- मुख्य न्यायाधीश यूयू ललित और न्यायमूर्ति एस रवींद्र भट और न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया की पीठ ने इस मुद्दे पर सर्वोच्च न्यायालय की विभिन्न पीठों द्वारा पारित विभिन्न फैसलों का हवाला दिया, जिसमें बचन सिंह बनाम पंजाब राज्य का 1983 का फैसला भी शामिल है।
- यहां शीर्ष अदालत ने अपने बहुमत के फैसले में मौत की सजा की संवैधानिक वैधता को इस शर्त पर बरकरार रखा कि इसे केवल "दुर्लभ से दुर्लभतम" मामलों में ही लगाया जा सकता है।

YOUR RAO'S ACADEMY

- 48वें विधि आयोग की रिपोर्ट की सिफारिशें पीठ ने कहा कि बचन सिंह (1983 के फैसले) में इस अदालत ने एक अलग सुनवाई द्वारा एक दोषी को दी गई निष्पक्षता को ध्यान में रखते हुए, दुर्लभ से दुर्लभतम् मामलों में मौत की सजा को लागू करने के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच के रूप में लिया था।
- पीठ ने कहा कि 1983 के फैसले में अदालत सजा के सवाल पर एक अलग सुनवाई की सुरक्षा के प्रति सचेत थी, और एक मूल्यवान अधिकार के रूप में इस तरह के एक सुरक्षा को व्यक्त किया, जो एक अपराधी को यह सुनिश्चित करने के लिए आग्रह करता है कि क्यों की परिस्थितियों में उसके मामले में, मौत की अत्यधिक सजा नहीं दी जानी चाहिए।
- इसमें कहा गया है कि इन सभी फैसलों (सर्वोच्च न्यायालय के संदर्भित फैसले) के माध्यम से चलने वाला एक सामान्य सूत्र व्यक्त स्वीकृति है कि आरोपी को एक सार्थक, वास्तविक और प्रभावी सुनवाई की जानी चाहिए, जिसमें प्रश्न के लिए प्रासंगिक सामग्री जोड़ने का अवसर हो। सजा के बारे में लेकिन जो स्पष्ट रूप से अनुपस्थित है, वह उस समय के बारे में विचार और चिंतन है जिसकी आवश्यकता हो सकती है।
- पीठ ने कहा कि यह भी एक तथ्य है कि सभी मामलों में जहां मौत की सजा का प्रावधान सजा का विकल्प है, गंभीर परिस्थितियां हमेशा रिकॉर्ड में होंगी, और अभियोजन पक्ष के साक्ष्य का हिस्सा होंगी, जिससे दोष सिद्ध होगा, जबकि अभियुक्त से कम करने वाली परिस्थितियों को रिकॉर्ड पर रखने की शायद ही उम्मीद की जा सकती है, क्योंकि ऐसा करने का चरण दोषसिद्धि के बाद है।
- शीर्ष अदालत ने सुझाव दिया कि सामाजिक परिवेश, उम्र, शैक्षिक स्तर, चाहे अपराधी को जीवन में पहले आघात का सामना करना पड़ा हो, पारिवारिक परिस्थितियां, एक दोषी का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन और दोषसिद्धि के बाद आचरण, यह विचार करते समय प्रासंगिक कारक थे कि क्या दोषियों को फांसी की सजा दी जानी चाहिए।

अनुसूचित जनजाति

खबरों में क्यों

संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश (संशोधन) विधेयक, 2022 के तहत चार राज्यों की अनुसूचित जनजाति सूची में संशोधन को कैबिनेट की मंजूरी।

- परिवर्तन में हिमाचल प्रदेश के ट्रांस-गिरी क्षेत्र में रहने वाले हट्टी समुदाय को आदिवासी का दर्जा देना शामिल है।
- तमिलनाडु में, यह राज्य के अनुसूचित जनजातियों की सूची में 'नारीकोरवन' और 'कुरिविकरण' समुदायों को शामिल करने का प्रस्ताव करता है।
- भारत सरकार ने देवभूमि हिमाचल के सिरमौर जिले के हट्टी समुदाय को अनुसूचित जनजाति में शामिल करने का निर्णय लिया है। इससे हिमाचल प्रदेश के 1.60 लाख लोगों को फायदा होगा।
- कर्नाटक में राज्य की अनुसूचित जनजाति सूची में क्रमांक 16 पर 'कडु कुरुबा' के पर्याय के रूप में 'बेट्टा-कुरुबा' समुदाय को शामिल करने का सुझाव दिया गया है।
- छत्तीसगढ़ में, अनुसूचित जनजाति सूची में 12 मौजूदा जनजातियों में समान ध्वनि वाले नाम जोड़े गए हैं, और अंग्रेजी नामों को बनाए रखते हुए कई अलग-अलग हिंदी वर्तनी बदली या जोड़ी गई हैं।
- उत्तर प्रदेश में, गोंड जनजाति को उसकी पांच उपजातियों के साथ राज्य के लिए अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल करने के लिए पहले ही मंजूरी दे दी गई थी। उत्तर प्रदेश के चार जिलों - कुशीनगर, संत रविदास नगर, चंदौली और संत कबीर नगर के लिए परिवर्तनों को मंजूरी दी गई थी।
- विधेयक के अधिनियम बनने के बाद, (राज्यों) की अनुसूचित जनजातियों की संशोधित सूची में नए सूचीबद्ध समुदायों के सदस्य भी सरकार की मौजूदा योजनाओं के तहत अनुसूचित जनजातियों के लिए लाभ प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- कुछ प्रमुख योजनाओं में पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति, राष्ट्रीय विदेशी छात्रवृत्ति, राष्ट्रीय फैलोशिप, उच्च श्रेणी की शिक्षा, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति वित्त और विकास निगम से रियायती ऋण, अनुसूचित जनजाति के लड़कों

और लड़कियों के लिए छात्रावास आदि शामिल हैं।

- इसके अलावा, वे सरकारी नीति के अनुसार सेवाओं में आरक्षण और शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश के लाभों के भी हकदार होंगे।
- विधेयक को संसद के दोनों सदनों, लोकसभा और राज्यसभा से पारित करना होता है।

एससी, एसटी सूची से किसी समुदाय को कैसे जोड़ा या हटाया जाता है?

- प्रक्रिया राज्य या केंद्र शासित प्रदेश के स्तर पर शुरू होती है, जिसमें संबंधित सरकार या प्रशासन अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति की सूची से किसी विशेष समुदाय को जोड़ने या बाहर करने की मांग करता है।
- अंतिम निर्णय राष्ट्रपति के कार्यालय द्वारा एक अधिसूचना जारी करने पर निर्भर करता है जिसमें अनुच्छेद 341 और 342 में निहित शक्तियों के तहत परिवर्तनों को निर्दिष्ट किया गया है।
- अनुसूचित जनजाति या अनुसूचित जाति सूची में किसी समुदाय का समावेश या बहिष्करण तभी प्रभावी होता है जब संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 और संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश, 1950 में संशोधन करने वाले विधेयक पर राष्ट्रपति की सहमति हो जाती है। लोकसभा और राज्यसभा दोनों द्वारा पारित होने के बाद उपयुक्त है।
- राज्य सरकार अपने विवेक के आधार पर कुछ समुदायों को अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की सूची में जोड़ने या घटाने के लिए सिफारिश करने का विकल्प चुन सकती है।
- इसके बाद किसी भी समुदाय को अनुसूचित सूची में शामिल करने या हटाने का प्रस्ताव संबंधित राज्य सरकार की ओर से केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय को भेजा जाता है।
- इसके बाद जनजातीय मामलों का मंत्रालय अपने विचार-विमर्श के माध्यम से प्रस्ताव की जांच करता है और इसे भारत के महापंजीयक (RGI) को भेजता है।
- आरजीआई द्वारा अनुमोदित होने के बाद, प्रस्ताव राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग या राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग को भेजा जाता है, जिसके बाद प्रस्ताव वापस केंद्र सरकार को भेजा जाता है, जो अंतर-मंत्रालयी विचार-विमर्श के बाद इसे कैबिनेट में पेश करता है।

प्रक्रिया शुरू करने के लिए मानदंड क्या है?

यह स्थापित करने के लिए कि क्या कोई समुदाय अनुसूचित जनजाति है, सरकार इसके सहित कई मानदंडों को देखती है-

- जातीय लक्षण,
- पारंपरिक विशेषताएं,
- विशिष्ट संस्कृति,
- भौगोलिक अलगाव;
- पिछड़ापन;

आधिकारिक तौर पर कितनी अनुसूचित जनजातियां हैं?

- 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में अनुसूचित जनजातियों के अनुसार, अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजातियों के रूप में सूचीबद्ध 705 जातीय समूह हैं।
- 10 करोड़ से अधिक भारतीयों को अनुसूचित जनजाति के रूप में अधिसूचित किया गया है, जिनमें से 1.04 करोड़ शहरी क्षेत्रों में रहते हैं। अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का 8.6% और ग्रामीण जनसंख्या का 11.3% है।

3 पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण

विरासत संरक्षण की दयनीय स्थिति

खबरों में क्यों

CAG की रिपोर्ट में विरासत संरक्षण की दयनीय स्थिति का पता चलता है

महत्वपूर्ण बिंदु

- केंद्र ने अनंग ताल की सुरक्षा के लिए कदम उठाने के लिए एक अधिसूचना जारी की, जिसके बाद इसे राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया जाएगा।
- स्मारकों और पुरावशेषों के संवर्धन और संरक्षण पर सीएजी की निष्पादन लेखापरीक्षा, जिसे संसद में पेश किया गया था, ने पूरे भारत में विरासत संरक्षण की खराब स्थिति को उजागर किया।
- भारत की विरासत की स्थिति पर CAG रिपोर्ट - 2011 में संग्रहालयों से संबंधित से लेकर 2013 में ASI पर इसके निष्कर्षों तक - संस्थागत अस्वस्थता पर सबसे व्यापक सार्वजनिक दस्तावेज हैं जो हमारे स्मारकों और पुरावशेषों के संरक्षण को प्रभावित करते हैं।

2022 की रिपोर्ट के कुछ प्रमुख अवलोकन इस प्रकार हैं:

- **प्रभावी राष्ट्रीय नीति का अभाव:** CAG रिपोर्ट स्पष्ट रूप से नोट करती है कि पुरातात्विक अन्वेषण और उत्खनन पर कोई राष्ट्रीय नीति नहीं है।
- **कम धन आवंटित किया जा रहा है:** अन्वेषण और उत्खनन के लिए ASI बजट 1 प्रतिशत से कम है, भले ही उसने लोक लेखा समिति (PAC) को कुल बजट के 5 प्रतिशत तक आवंटन बढ़ाने के अपने इरादे से अवगत कराया।
- **समन्वय की कमी:** विरासत संरक्षण में शामिल विभिन्न एजेंसियों के बीच कोई तालमेल नहीं है।
- संरक्षण निधि के लिए व्यक्तियों और कॉर्पोरेट समूहों को शामिल करने के लिए नवंबर 1996 में स्थापित राष्ट्रीय संस्कृति कोष ने ASI के साथ समन्वय की कमी के कारण अपने धन का केवल 14 प्रतिशत उपयोग किया है।
- राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण, प्रत्येक स्मारक के लिए विरासत उप-नियमों और साइट योजनाओं को लागू करने के लिए एक वैधानिक निकाय, ने केवल 31 स्मारकों को अंतिम रूप दिया और अधिसूचित किया है, जबकि 210 अन्य स्मारकों को अंतिम रूप देने के विभिन्न चरणों में हैं।
- रिपोर्ट से पता चलता है कि ASI, कई मामलों में, स्मारक (AMASR) अधिनियम के प्रावधानों के उल्लंघन में काम कर रहा है।
- **कचरा और सीवेज का डंपिंग:** ऑडिटिंग टीम के दौरे से पता चला कि आस-पास के क्षेत्रों से सीवेज "कई झीलों में छोड़ा जा रहा था"।

AMASR अधिनियम

AMASR अधिनियम, 1958 भारत सरकार की संसद का एक अधिनियम है जो प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों और राष्ट्रीय महत्व के अवशेषों के संरक्षण, पुरातात्विक उत्खनन के नियमन और मूर्तियों, नक्काशी और अन्य वस्तुओं की सुरक्षा प्रदान करता है। ।

RAO'S ACADEMY

सिंगल यूज प्लास्टिक

खबरों में क्यों

MoEFCC ने प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2021 को अधिसूचित किया है

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत सरकार ने प्लास्टिक कचरा प्रबंधन संशोधन नियम, 2021 को अधिसूचित किया है, जो 2022 तक कम उपयोगिता और उच्च कूड़े की क्षमता वाले एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं को प्रतिबंधित करता है।
- एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं के कारण प्रदूषण सभी देशों के सामने एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय चुनौती बन गया है। भारत सिंगल यूज प्लास्टिक के कचरे से होने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध है।
- 2019 में आयोजित चौथी संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा में, भारत ने एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक उत्पादों के प्रदूषण को संबोधित करने के लिए एक प्रस्ताव का संचालन किया था, जिसमें वैश्विक समुदाय को इस बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करने की तत्काल आवश्यकता को मान्यता दी गई थी।
- UNEA 4 में इस प्रस्ताव को स्वीकार करना एक महत्वपूर्ण कदम था।
- पॉलीस्टाइरीन और विस्तारित पॉलीस्टाइनिन सहित निम्नलिखित एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक का निर्माण, आयात, स्टॉकिंग, वितरण, बिक्री और उपयोग 1 जुलाई, 2022 से प्रतिबंधित होगा: -
  - ♦ प्लास्टिक की छड़ियों के साथ कान की कलियाँ, गुब्बारों के लिए प्लास्टिक की छड़ें, प्लास्टिक के झंडे, कैंडी की छड़ें, आइसक्रीम की छड़ें, सजावट के लिए पॉलीस्टाइनिन [थर्मोकोल];
  - ♦ प्लेट, कप, गिलास, कटलरी जैसे कांटे, चम्मच, चाकू, पुआल, ट्रे, मिठाई बक्से के चारों ओर फिल्म लपेटना या पैकिंग करना, निमंत्रण कार्ड, और सिगरेट के पैकेट, प्लास्टिक या पीवीसी बैनर 100 माइक्रोन से कम, स्टिरर।
- हल्के वजन वाले प्लास्टिक कैरी बैग के कारण होने वाली गंदगी को रोकने के लिए 30 सितंबर, 2021 से प्लास्टिक कैरी बैग की मोटाई 50 माइक्रोन से बढ़ाकर 75 माइक्रोन और 31 दिसंबर, 2022 से 120 माइक्रोन कर दी गई है। यह मोटाई में वृद्धि के कारण प्लास्टिक कैरी के पुन: उपयोग की भी अनुमति देगा।
- प्लास्टिक पैकेजिंग अपशिष्ट, जो पहचान किए गए एकल उपयोग प्लास्टिक वस्तुओं के चरण के तहत कवर नहीं किया गया है, प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियमों के अनुसार निर्माता आयातक और ब्रांड मालिक (PIBO) 2016 की विस्तारित निर्माता जिम्मेदारी के माध्यम से पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ तरीके से एकत्र और प्रबंधित किया जाएगा।
- विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2021 के माध्यम से विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व के लिए दिशानिर्देशों को कानूनी बल दिया गया है।
- स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में अपशिष्ट प्रबंधन के बुनियादी ढांचे को मजबूत किया जा रहा है। प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने और चिन्हित एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं के उपयोग को कम करने के लिए भी निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं:
  - ♦ राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों से एकल उपयोग वाले प्लास्टिक के उन्मूलन और प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक विशेष कार्य बल का गठन करने का अनुरोध किया गया है। मंत्रालय द्वारा एक राष्ट्रीय स्तर के कार्यबल का गठन भी किया गया है, जो चिन्हित एकल को खत्म करने के लिए समन्वित प्रयास कर रहा है। प्लास्टिक की वस्तुओं का उपयोग और प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 का प्रभावी कार्यान्वयन।
- प्लास्टिक कचरा प्रबंधन के लिए पहचाने गए एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं और डिजिटल समाधानों के विकल्पों के विकास में नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए, स्टार्टअप इंडिया पहल के तहत मान्यता प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों और स्टार्टअप के छात्रों के लिए इंडिया प्लास्टिक चैलेंज - हैकाथॉन 2021 का आयोजन किया गया है।

सिंगल यूज प्लास्टिक क्या है?

- जैसा कि नाम से पता चलता है, यह प्लास्टिक की वस्तुओं को संदर्भित करता है जो एक बार उपयोग की जाती हैं और त्याग दी जाती हैं। उदाहरण के लिए, पैकेजिंग वस्तुओं, बोतलों (शैम्पू, डिटर्जेंट, सौंदर्य प्रसाधन), पॉलिथीन बैग, फेस मास्क, कॉफी कप, क्लिंग फिल्म, कचरा बैग, खाद्य पैकेजिंग आदि में प्रयुक्त प्लास्टिक।

ग्रीनहाउस गैस

खबरों में क्यों

2021 में ग्रीनहाउस गैस और समुद्र का स्तर रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- यूनाइटेड स्टेट्स नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (NOAA) की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2021 में ग्रीनहाउस गैस और समुद्र का स्तर नई ऊंचाई को छू गया।
- NOAA रिपोर्ट के अनुसार, वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा 2021 में 414.7 भाग प्रति मिलियन थी, जो 2020 की तुलना में 2.3 भाग अधिक है।
- ग्रीनहाउस गैस के स्तर में वृद्धि पिछले साल जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन में कमी के कारण हुई है, क्योंकि वैश्विक अर्थव्यवस्था का अधिकांश हिस्सा COVID-19 महामारी के कारण तेजी से धीमा हो गया है।
- समुद्र का स्तर लगातार दसवें वर्ष बढ़ा। वे 1993 के औसत से 3.8 इंच या 97 मिलीमीटर के एक नए रिकॉर्ड पर पहुंच गए, जब उपग्रह माप शुरू हुआ।
- वर्ष 2021 उन सात सबसे गर्म वर्षों में से एक था, जब से 1800 के दशक के मध्य में वैश्विक रिकॉर्ड शुरू हुए थे। यह रिकॉर्ड पर छह सबसे गर्म वर्षों में से एक था, जैसा कि वैश्विक औसत सतह के तापमान से मापा जाता है।
- कम औसत तापमान ला नीना के कारण था, जो प्रशांत महासागर में एक सामयिक घटना है जो पानी को ठंडा करती है। ला नीना जून और जुलाई साल के दो महीनों को छोड़कर सभी के लिए प्रबल रही।
- फरवरी के महीने में विश्व के लिए वर्ष की सबसे छोटी तापमान विसंगति थी और फरवरी 2014 के बाद से यह सबसे ठंडा था।
- लेकिन पानी का तापमान भी असाधारण रूप से अधिक था। तिब्बत में झीलें, एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है क्योंकि यह एशिया की कई प्रमुख नदियों के लिए जल स्रोत है, उच्च तापमान दर्ज किया गया।

बढ़ती आपदाएं और भय

- 2021 रिपोर्ट में कहा गया है कि उष्णकटिबंधीय तूफान, जो पृथ्वी के गर्म होते ही बढ़ जाते हैं। इनमें सुपर टाइफून राय भी शामिल था, जिसने दिसंबर में फिलीपींस में लगभग 400 लोगों की जान ले ली थी। कैटरीना के बाद लुइसियाना में लोगों को मारने वाला दूसरा सबसे खतरनाक तूफान बनने से पहले तूफान इडा ने कैरिबियन सागर में कहर बरपाया था।
- रिपोर्ट में उल्लिखित अन्य असाधारण घटनाओं में 1409 के बाद पहली बार क्योटो, जापान में चेरी के पेड़ों का समय से पहले खिलना था।
- जंगल की आग की घटनाएं, जो जलवायु परिवर्तन के कारण भी बढ़ने की उम्मीद है, हाल के वर्षों के बाद तुलनात्मक रूप से कम थी, हालांकि अमेरिकी पश्चिम और साइबेरिया दोनों में विनाशकारी आग देखी गई थी।
- 2021 की रिपोर्ट एक अध्ययन के कुछ दिनों बाद आई है जिसमें कहा गया है कि ग्रीनलैंड की बर्फ की चादर पहले से ही खतरनाक स्तर तक पिघलने लगी है, भले ही यह भविष्य में बिना किसी गर्मी के समुद्र के स्तर को बढ़ाएगी। इससे दुनिया भर के निचले इलाकों में रहने वाले करोड़ों लोगों के घर जलमग्न होने की आशंका है।
- जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों से बचने के लिए पूर्व-औद्योगिक स्तरों से ऊपर के तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने का लक्ष्य 2015 में पेरिस जलवायु समझौते द्वारा निर्धारित किया गया था।

ग्रीन हाइड्रोजन

खबरों में क्यों

ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए हरित हाइड्रोजन पर दांव लगाना 'जोखिम भरा' है, अध्ययन में पाया गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- देश अपने जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए हरित हाइड्रोजन पर दांव लगा रहे हैं - अक्षय ऊर्जा का उपयोग करके पानी को विभाजित करने से उत्पन्न हाइड्रोजन। लेकिन एक नए अध्ययन ने इस हरित तकनीक पर भरोसा करने के खिलाफ चेतावनी दी है, इसे "जोखिम भरा दांव" कहा है।
- इसकी आपूर्ति अल्पावधि में कम और लंबी अवधि में अनिश्चित रहने की संभावना है, भले ही इसकी वृद्धि सौर और पवन ऊर्जा के बराबर हो।
- हरित हाइड्रोजन 2035 तक वैश्विक स्तर पर अंतिम ऊर्जा के 1 प्रतिशत से भी कम की आपूर्ति करेगा।
- जैसा कि अखबार ने कहा है कि यूरोपीय संघ 2030 तक 1 प्रतिशत अंक तक पहुंच सकता है, क्योंकि ऊर्जा की कीमतें बढ़ रही हैं।
- यूरोपीय संघ ने 18 मई, 2022 को 10 मिलियन टन घरेलू नवीकरणीय हाइड्रोजन उत्पादन प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है।
- यह कुछ उद्योगों और परिवहन क्षेत्रों में प्राकृतिक गैस, कोयला और तेल को बदलने के लिए 2030 तक 10 मिलियन टन आयात की योजना बना रहा है।
- इलेक्ट्रोलाइजर्स की आपूर्ति में तेजी लाने में चुनौतियों का विश्लेषण जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका के शोध कर्ताओं द्वारा किया गया था - एक उपकरण जिसमें ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन होता है।
- हरित हाइड्रोजन अल्पावधि में दुर्लभ रहेगा, जिससे आपूर्ति-मांग का अंतर पैदा होगा, भले ही प्रौद्योगिकी सौर और पवन के समान दर से बढ़ती हो, विश्लेषण से पता चलता है।
- पेरिस समझौते के अनुकूल जलवायु तटस्थता परिदृश्यों में योगदान करने के लिए वैश्विक इलेक्ट्रोलाइजर क्षमता को 2050 तक 6,000-8,000 गुना बढ़ने की जरूरत है।
- इसके विपरीत, अक्षय ऊर्जा के अधिक उपलब्ध और लागत-प्रतिस्पर्धी विकल्प को 10 गुना बढ़ने की जरूरत है, जैसा कि विशेषज्ञों ने बताया।
- हालांकि, अध्ययन कुछ आशा प्रदान करता है। मजबूत नीतियों को लागू करने से असफलताओं को दूर किया जा सकता है।
- हाइड्रोजन प्रोत्साहन उन क्षेत्रों की मदद कर सकता है जहां कोई अन्य विकल्प मौजूद नहीं है, जैसे कि स्टील, या कम हवा और सौर बिजली उत्पादन के घंटों में बिजली की आपूर्ति।
- शोधकर्ताओं ने इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और हीट पंप जैसी महत्वपूर्ण शून्य-कार्बन प्रौद्योगिकियों के रोल-आउट में तेजी लाने की सिफारिश की।
- हरित हाइड्रोजन को हाइड्रोजन के रूप में परिभाषित किया गया है जो नवीकरणीय बिजली का उपयोग करके पानी को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करके उत्पन्न होता है। यह ग्रे और ब्लू दोनों की तुलना में बहुत अलग मार्ग है।
- ग्रे हाइड्रोजन पारंपरिक रूप से मीथेन (CH_4) से उत्पन्न होता है, भाप के साथ CO_2 में विभाजित हो जाता है जो जलवायु परिवर्तन और H_2, हाइड्रोजन के लिए मुख्य अपराधी है।
- कोयले से भी ग्रे हाइड्रोजन का उत्पादन तेजी से हुआ है, जिसमें प्रति यूनिट हाइड्रोजन का काफी अधिक CO_2 उत्सर्जन होता है, इतना अधिक जिसे अक्सर ग्रे के बजाय भूरा या काला हाइड्रोजन कहा जाता है।
- यह आज औद्योगिक पैमाने पर उत्पादित किया जाता है, जिसमें यूके और इंडोनेशिया के संयुक्त उत्सर्जन की

तुलना में संबद्ध उत्सर्जन होता है। इसका कोई ऊर्जा संक्रमण मूल्य बिल्कुल विपरीत नहीं है।

- मीथेन (या कोयले से) हाइड्रोजन को अलग करने और इसे लंबे समय तक संग्रहीत करने के लिए उत्पादित CO2 को पकड़ने के लिए आवश्यक अतिरिक्त तकनीकों के साथ ब्लू हाइड्रोजन ग्रे के समान प्रक्रिया का पालन करता है।
- यह एक रंग नहीं है, बल्कि एक बहुत व्यापक ग्रेडेशन है, क्योंकि उत्पादित CO2 का 100% कब्जा नहीं किया जा सकता है, और इसे स्टोर करने के सभी साधन लंबी अवधि में समान रूप से प्रभावी नहीं होते हैं।
- मुख्य बात यह है कि CO2 के बड़े हिस्से पर कब्जा करके, हाइड्रोजन उत्पादन के जलवायु प्रभाव को काफी कम किया जा सकता है।

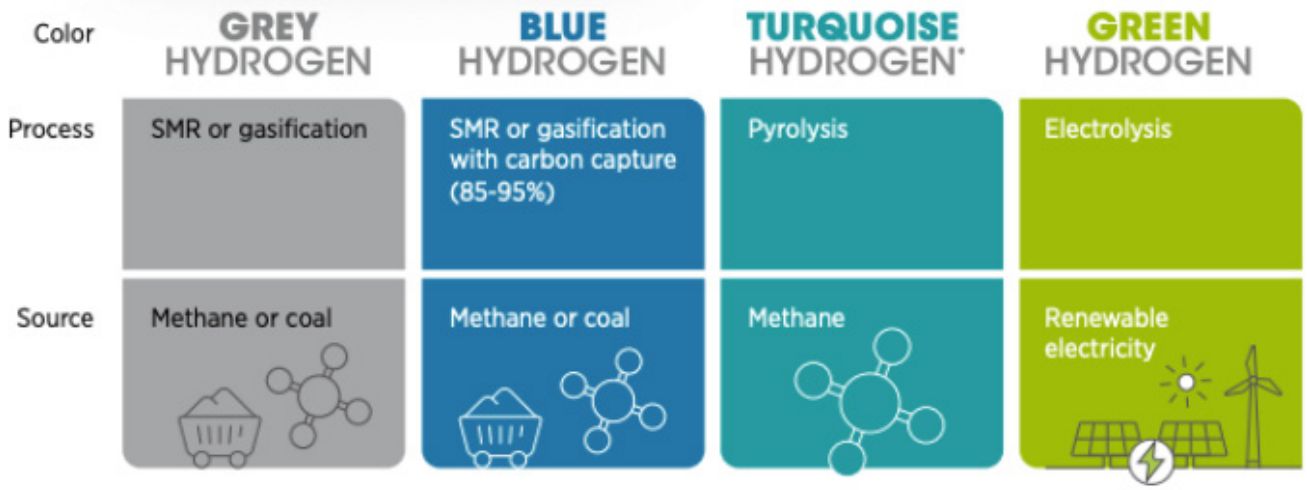

टिपिंग पॉइंट्स

खबरों में क्यों

एक प्रमुख अध्ययन के अनुसार, जलवायु संकट ने दुनिया को कई ष्विनाशकारीष् टिपिंग बिंदुओं के कगार पर पहुँचा दिया है।

- क्लाइमेट टिपिंग पॉइंट्स या CTPs एक वृहत जलवायु प्रणाली के मार्कर हैं जो एक सीमा से परे ट्रिगर होने पर स्वतः तापन को बनाए रखते हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- अध्ययन के अनुसार, मानव समुदाय के कारण 1.1 डिग्री सेल्सियस की वैश्विक तापन अब तक के पाँच खतरनाक टिपिंग पॉइंट पहले ही पार कर चुकी है।
  - ♦ इनमें ग्रीनलैंड की हिम छत्रक का पिघलना, समुद्र के जल स्तर में भारी वृद्धि, उत्तरी अटलांटिक में प्रमुख धारा का पतन, बारिश को बाधित करना जिस पर अरबों लोग भोजन के लिये निर्भर हैं और कार्बन युक्त पर्माफ्रॉस्ट का अचानक पिघलना शामिल है।
- 5°C पर फाइव टिपिंग पॉइंट संभव हो जाते हैं, जिसमें विशाल उत्तरी जंगलों में परिवर्तन और लगभग सभी पर्वतीय हिमनदों का पिघलना, उष्णकटिबंधीय प्रवाल भित्तियों का मरना तथा पश्चिम अफ्रीकी मानसून में परिवर्तन शामिल हैं।
- कुल मिलाकर शोधकर्त्ताओं को 16 टिपिंग पॉइंट्स के प्रमाण मिले, जिनमें से अंतिम छह को ट्रिगर करने के लिये कम-से-कम 2 डिग्री सेल्सियस के वैश्विक उष्मन की आवश्यकता होती है।
  - ♦ टिपिंग पॉइंट कुछ वर्षों से लेकर सदियों तक की समय-सारिणी पर प्रभावी होंगे।
- आर्कटिक में 2°C से अधिक पर चिह्नित 9 वैश्विक टिपिंग बिंदु ग्रीनलैंड पश्चिमी अंटार्कटिक का पतन और

पूर्वी अंटार्कटिक बर्फ की चादरों के दो हिस्से हैं, जो अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AMOC) का आंशिक और कुल पतन है।

- अन्य संभावित टिपिंग बिंदुओं का अभी भी अध्ययन किया जा रहा है, जिसमें समुद्री ऑक्सीजन की हानि और भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून में प्रमुख बदलाव शामिल हैं।

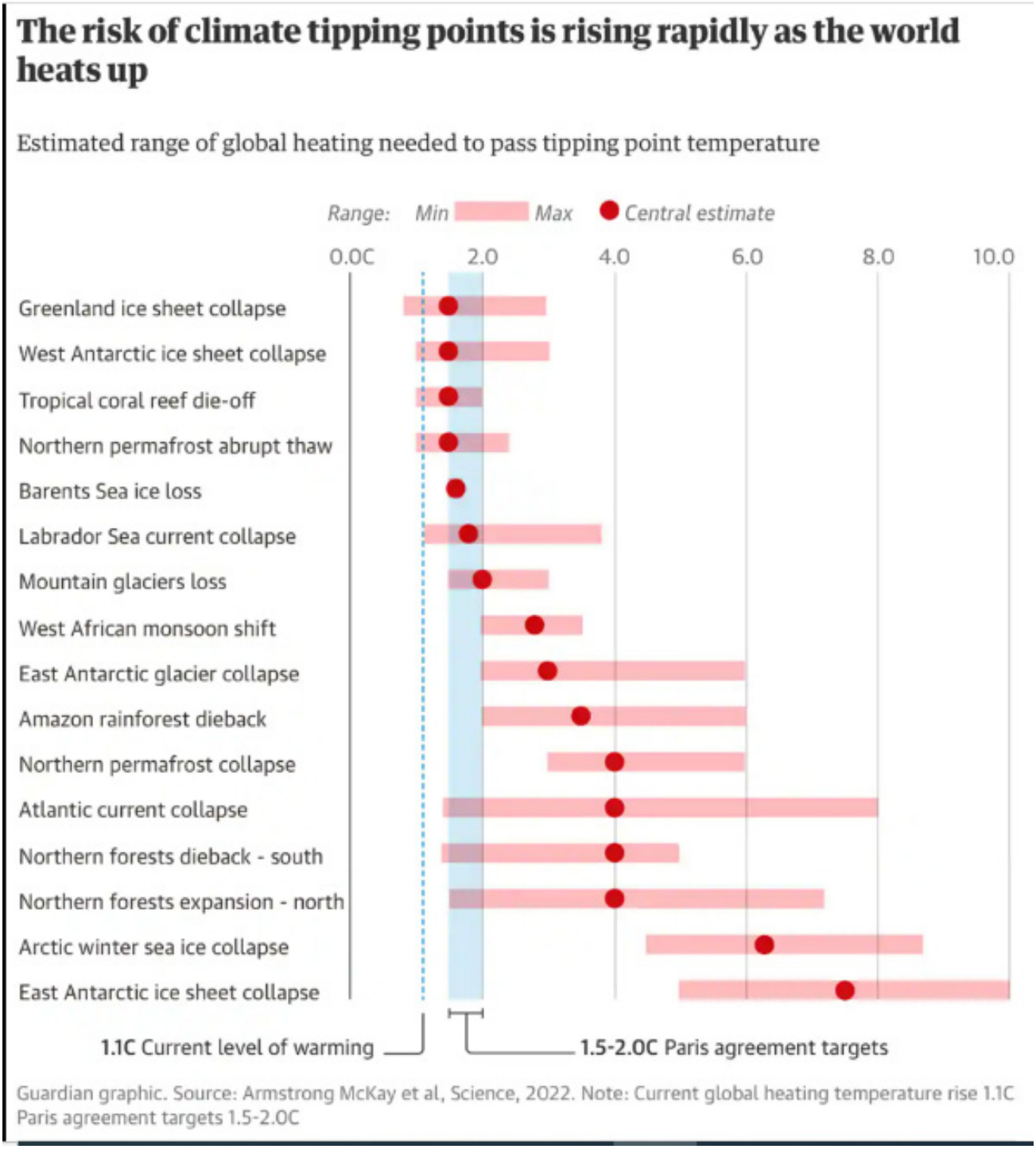

Warming level	Tipping Points possible/likely at this level
Current (2022) (1.1-1.2°C)	**0 likely 5 possible** (Greenland Ice Sheet [GrIS] from 0.8°C, West Antarctic Ice Sheet [WAIS] from 1.0C, Labrador-Irminger Sea Convection [LABC] from 1.1°C, Low-latitude coral reefs [REEF] from 1.0°C, Boreal permafrost abrupt thaw [PFAT] from 1.0°°C)
Paris Agreement, full ambition (1.5°C)	**4 likely** (GrIS from 1.5°C, WAIS from 1.5°C, REEF from 1.5°C, PFAT from 1.5°C) **6 possible** (LABC from 1.1°C, Atlantic Meridional Overturning Circulation [AMOC] from 1.4°C, Barents sea ice [BARI] from 1.5°C, Mountain glaciers [GLCR] from 1.5°C, Boreal forest (southern dieback) [BORF] from 1.4°C, Boreal forest (northern expansion) [TUND] from 1.5°C)
Paris Agreement, full range (1.5-<2 °C)	**6 likely** (GrIS from 1.5°C, WAIS from 1.5°C, REEF from 1.5°C, PFAT from 1.5°C, BARI from 1.6°C, LABC from 1.8°C) **4 possible** (AMOC from 1.4°C, GLCR from 1.5°C, BORF from 1.4°C, TUND from 1.5°C)
Current policies, best estimate (~2.6°C, based on Meinshausen et al., 2022)	**7 likely** (GrIS from 1.5°C, WAIS from 1.5°C, REEF from 1.5°C, PFAT from 1.5°C, BARI from 1.6°C, LABC from 1.8°C, GLCR from 2°C) **6 possible** (AMOC from 1.4°C, BORF from 1.4°C, TUND from 1.5°C, East Antarctic subglacial basins [EASB] from 2°C, Amazon rainforest [AMAZ] from 2°C, Sahel vegetation & West African Monsoon [SAHL] from 2°C)
Current policies, full range (1.9-3.7°C, based on Meinshausen et al., 2022)	**10 likely** (GrIS from 1.5°C, WAIS from 1.5°C, REEF from 1.5°C, PFAT from 1.5°C, BARI from 1.6°C, LABC from 1.8°C, GLCR from 2°C, EASB from 3°C, AMAZ from 3.5°C, SAHL from 2.8°C) **4 possible** (AMOC from 1.4°C, BORF from 1.4°C, TUND from 1.5°C, Boreal permafrost (collapse) [PFTP] from 3°C)

ग्रीन फिन्स हब

खबरों में क्यों

टिकाऊ समुद्री पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए यूएनईपी ने दुनिया भर में नया डिजिटल प्लेटफॉर्म लॉन्च किया

महत्वपूर्ण बिंदु

- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) ने यूके स्थित चौरिटी रीफ-वर्ल्ड फाउंडेशन के साथ मिलकर हाल ही में ग्रीन फिन्स हब लॉन्च किया, जो एक वैश्विक डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि यह स्थायी समुद्री पर्यटन को 'बड़ा बढ़ावा' देगा।
- यह प्लेटफॉर्म दुनिया भर में डाइविंग और स्नॉर्कलिंग ऑपरेटरों को आजमाए हुए और परीक्षण किए गए समाधानों का उपयोग करके अपनी दैनिक प्रथाओं में सरल, किफायती बदलाव करने में मदद करेगा।
- यह उन्हें अपने वार्षिक सुधारों पर नजर रखने और अपने समुदायों और ग्राहकों के साथ संवाद करने में भी मदद करेगा।
- ग्रीन फिन्स हब दो प्रकार की सदस्यता की मेजबानी करेगा। एक डिजिटल सदस्यता होगी जो विश्व स्तर पर डाइविंग, स्नोर्केलिंग और लिवबोर्ड संचालन के लिए उपलब्ध होगी।
- सदस्यता के प्रत्येक वर्ष के दौरान, ऑपरेटरों को विस्तृत ऑनलाइन स्व-मूल्यांकन और उनकी कार्य योजनाओं पर की गई प्रगति के आधार पर पर्यावरणीय स्कोर प्राप्त होंगे।
- ग्रीन फिन्स प्रमाणित सदस्यों का सालाना मूल्यांकन किया जाता रहेगा और उनके संचालन में व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षित किया जाएगा। मूल्यांकन प्रक्रिया एक स्कोरिंग प्रणाली (0-330 बिंदु प्रणाली, कम स्कोर के

साथ प्रवाल भित्तियों पर एक व्यवसाय के कम प्रभाव के साथ) का उपयोग करते हुए निर्धारित मानदंडों पर आधारित बनी रहेगी।

- ग्रीन फिन्स प्रमाणित सदस्य बनने के लिए न्यूनतम सीमा (अधिकतम पर्यावरणीय प्रभाव स्कोर का 200) और प्रदर्शन के अनुसार कांस्य, रजत या स्वर्ण प्रमाणित सदस्यों की रैंकिंग होगी।
- प्लेटफॉर्म में अन्य सुविधाएं भी होंगी। ग्रीन फिन्स कम्युनिटी फोरम दुनिया भर के ऑपरेटरों के लिए उद्योग की जरूरतों को बढ़ाने, पर्यावरणीय मुद्दों पर चर्चा करने और समान विचारधारा वाले उद्योग के नेताओं, गैर-लाभकारी और सरकारों के साथ सबक और विचारों को साझा करने के लिए होगा।
- उदाहरण के लिए, अपने गोता स्थलों पर क्राउन-ऑफ-थॉर्न्स सीस्टार जैसी आक्रामक प्रजातियों के प्रकोप का अनुभव करने वाले गोता केंद्र तत्काल संरक्षण कार्रवाई करने के लिए संसाधनों और विशेषज्ञता हासिल करने के लिए मंच का उपयोग कर सकते हैं।
- ग्रीन फिन्स सॉल्यूशंस लाइब्रेरी आम दैनिक परिचालन चुनौतियों के लिए 100 से अधिक सिद्ध पर्यावरणीय समाधानों तक पहुंच प्रदान करेगी।
- कार्य योजना ट्रैकर सदस्यों को निर्धारित लक्ष्यों के साथ एक वार्षिक स्थिरता कार्य योजना प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा। एक उन्नत यूजर इंटरफेस उन्हें समय के साथ अपनी प्रगति को ट्रैक करने की अनुमति देगा।
- ग्रीन फिन्स हब के आज 14 देशों के लगभग 700 ऑपरेटरों से दुनिया भर में संभावित 30,000 ऑपरेटरों तक पहुंच बनाने की उम्मीद है
- रीफ-वर्ल्ड फाउंडेशन ने हाल ही में 2,400 से अधिक गोता लगाने वाले पर्यटकों और पेशेवरों का सर्वेक्षण किया था, जिनमें से 83 प्रतिशत ने कहा कि वे अपनी छुट्टी पर आगे की स्थिरता शिक्षा की तलाश कर रहे थे।
- कुछ 75 प्रतिशत ने कहा कि वे इसके लिए अधिक भुगतान करेंगे, लेकिन 85 प्रतिशत ने कहा कि उन्हें यह देखना मुश्किल है कि कोई ऑपरेटर टिकाऊ है या नहीं।
- समुद्री जीवन के कम से कम 25 प्रतिशत के लिए घर, प्रवाल भित्तियाँ, समुद्री-संबंधित पर्यटन के लिए मक्का हैं, जो कुछ द्वीप राष्ट्रों में सकल घरेलू उत्पाद में 40 प्रतिशत या उससे अधिक का योगदान करती हैं।
- हालांकि, वे सबसे कमजोर पारिस्थितिकी तंत्र हैं, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के लिए 1.5 या 2 डिग्री सेल्सियस के वैश्विक तापमान वृद्धि के बीच अंतर के साथ चट्टान के लिए अस्तित्व में है।
- ग्रीन फिन्स हब के माध्यम से सर्वोत्तम अभ्यास, ज्ञान और नागरिक विज्ञान की बढ़ती पहुंच प्रवाल भित्तियों और अन्य नाजुक समुद्री पारिस्थितिकी प्रणालियों के भविष्य को सुनिश्चित करने में एक गेम चेंजर हो सकती है।

समुद्री खीरा

खबरों में क्यों

2015 और 2021 के बीच भारत में समुद्री खीरे की सबसे अधिक तस्करी की जाने वाली समुद्री प्रजातियां

महत्वपूर्ण बिंदु

- 2015 और 2021 के बीच भारत में समुद्री खीरे की सबसे अधिक तस्करी की जाने वाली समुद्री प्रजातियां थीं, जैसा कि वन्यजीव संरक्षण सोसायटी-इंडिया (WCS-इंडिया) द्वारा किए गए एक नए विश्लेषण से पता चला है।
- इस अवधि के दौरान तमिलनाडु में समुद्री वन्यजीवों की बरामदगी की सबसे अधिक संख्या दर्ज की गई, विश्लेषण में कहा गया है। राज्य के बाद महाराष्ट्र, लक्षद्वीप और कर्नाटक का स्थान है।
- भारत में समुद्री प्रजातियों में अवैध व्यापार 2015-2021 शीर्षक वाला विश्लेषण 2015 और 2021 के बीच भारत में समुद्री वन्यजीवों की बरामदगी के बारे में 187 मीडिया रिपोर्टों के आकलन पर आधारित है। इसने सात प्रजातियों के समूहों में अवैध समुद्री व्यापार दर्ज किया - समुद्री ककड़ी, मूंगा, समुद्री घोड़ा और पाइपफिश, शार्क और रे, सीशेल, समुद्री पंखा और समुद्री कछुआ।
- भारत का वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 वर्तमान में इलास्मोब्रांच की 10 प्रजातियों (शार्क, किरणों, आदि सहित), विशाल ग्रूपर (एपिनेफेलस लैंसोलेटस), समुद्री घोड़ों और समुद्री खीरे की सभी प्रजातियों, मोलस्क की 24 प्रजातियों, सभी स्क्लेरेक्टिनियन कोरल की रक्षा करता है। अंग पाइप मूंगा, समुद्री पंखे और स्पंज।
- यह कई सीतासियों (समुद्री स्तनधारियों), समुद्री कछुओं, ऊदबिलाव, मगरमच्छों और समुद्री सांपों को भी सुरक्षा

प्रदान करता है।

- WLPA इन प्रजातियों को चार अनुसूचियों (I, II, III और IV) में विभिन्न स्तरों की सुरक्षा प्रदान करता है। फिर भी, अवैध शिकार और अवैध व्यापार जारी है, जिससे ऐसी प्रजातियों की स्थानीय आबादी को खतरा है और बाद में वे जिस तटीय आवास में पनपते हैं, विश्लेषण में उल्लेख किया गया है।

अवैध व्यापार और व्यापार मार्ग

- शोधकर्ताओं ने पाया कि तमिलनाडु, लक्षद्वीप द्वीप समूह और अंडमान द्वीप समूह में प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा 64,172 किलोग्राम और 988 व्यक्तियों (बिना वजन के) समुद्री खीरे जब्त किए गए थे।
- तमिलनाडु में समुद्री ककड़ी बरामदगी की अधिकतम संख्या (105 घटनाएं), इसके बाद लक्षद्वीप (12 घटनाएं) और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (पांच घटनाएं) दर्ज की गईं।
- हर साल समुद्री ककड़ी बरामदगी से जुड़ी कम से कम 11 घटनाएं दर्ज की गईं, जिनमें 2020 में सबसे अधिक घटनाएं (21 घटनाएं) दर्ज की गईं, इसके बाद 2016 और 2017 (20 घटनाएं) दर्ज की गईं।
- समुद्री ककड़ी की 122 घटनाओं में से पड़ोसी देशों या व्यापार के लिए स्थापित बाजारों वाले देशों को अवैध रूप से समुद्री खीरे का निर्यात करने के लिए प्रयास किए गए।
- श्रीलंका (26 घटनाएं), चीन (छह घटनाएं) और मलेशिया (दो घटनाएं) उन देशों के रूप में दर्ज किए गए जो या तो पारगमन स्थान हैं या इच्छित व्यापार के गंतव्य हैं।
- श्रीलंका को निर्यात किए जाने वाले माल को 24 घटनाओं तमिलनाडु से और दो घटनाओं में लक्षद्वीप से उत्पन्न होने का दस्तावेजीकरण किया गया था।
- श्रीलंका को सबसे आम अंतरराष्ट्रीय स्थान के रूप में दर्ज किया गया था। लेकिन यह दक्षिण पूर्व एशिया में गंतव्य देशों की ओर आगे परिवहन के लिए एक पारगमन स्थान होने का इरादा था।
- समुद्री पंखे (20 घटनाएँ) और Syngnathidae, यानी, समुद्री घोड़े और पाइपफिश (18 घटनाएँ) दूसरे और तीसरे सबसे अधिक व्यापार करने वाले समूह थे। 2015-2016 के दौरान समुद्री पंखों का व्यापार रिकॉर्ड नहीं किया गया था। इसी तरह, 2020 में कोई समुद्री घोड़ा और पाइपफिश की घटनाएं दर्ज नहीं की गईं।
- दर्ज की गई 18 सीहॉर्स और पाइपफिश घटनाओं में से, छह घटनाओं में या तो पड़ोसी देशों या व्यापार के लिए स्थापित बाजारों वाले देशों में सीहॉर्स और पाइपफिश को अवैध रूप से निर्यात करने के प्रयासों का उल्लेख किया गया है।

घरेलू पारगमन के साथ अंतरराष्ट्रीय मार्ग दर्ज किए गए थे:

न्यू जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल से शेराथांग, सिक्किम (सड़क मार्ग से) और आगे चीन तक
थोंडी, तमिलनाडु से बेंगलुरु, कर्नाटक (सड़क मार्ग से) और आगे पाकिस्तान तक

- ♦ चेन्नई, तमिलनाडु से मुंबई, महाराष्ट्र (परिवहन मोड प्रलेखित नहीं) और चीन के लिए आगे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सीधे ले जाने के लिए दर्ज की गई खेप से थीं
- ♦ मुंबई, महाराष्ट्र से कुआलालंपुर, मलेशिया (हवाई द्वारा) थोंडी, तमिलनाडु से श्रीलंका (परिवहन मोड प्रलेखित नहीं) चेन्नई, तमिलनाडु से सिंगापुर (हवाई मार्ग से) 2017 से 2021 तक मांस, पंख, गिल रेकर्स, सूखी त्वचा और शार्क से संबंधित दांतों और WLPA के तहत वन्य जीवों एवं वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES) के प्रयासों की कुछ 15 घटनाओं की सूचना मिली थी।

- आठ घटनाओं में कुल 14,188 किलोग्राम संसाधित और सूखे पंखों की रिपोर्ट करते हुए शार्क फिन सबसे अधिक दर्ज किया गया उत्पाद था।

RAO'S ACADEMY

टाइगर रिजर्व

खबरों में क्यों

उत्तर प्रदेश ने बुंदेलखंड में अपना चौथा बाघ अभ्यारण्य बनाने की योजना बनाई है

महत्वपूर्ण बिंदु

- उत्तर प्रदेश कैबिनेट ने चित्रकूट जिले में रानीपुर वन्यजीव अभयारण्य (RWS) में राज्य के चौथे बाघ अभयारण्य

की अधिसूचना को मंजूरी दी।

- RWS का अपना कोई बाघ नहीं है। लेकिन जानवरों के पगमार्क अक्सर वहां देखे जाते हैं क्योंकि पास के पन्ना के बाघ अक्सर यहां आते हैं। दोनों संरक्षित क्षेत्र एक दूसरे से सिर्फ 150 किमी दूर हैं।
- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) द्वारा भारत में बाघों, सह-शिकारियों और शिकार की स्थिति की रिपोर्ट के अनुसार, RWS बाघों की आवाजाही के लिए एक महत्वपूर्ण गलियारा है।
- 2018 में एनटीसीए द्वारा बाघों के अंतिम आकलन के दौरान आरडब्ल्यूएस में वन विभाग द्वारा कैमरा ट्रैपिंग का आयोजन किया गया था। 12 बाघों के फोटो-कैप्चर से पता चला कि रानीपुर में तीन बाघ थे - एक नर और दो मादा।
- यूपी कैबिनेट ने 1972 के वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम की धारा 38(A) के तहत रानीपुर टाइगर रिजर्व की अधिसूचना को मंजूरी दी। बाघ अभयारण्य 529.89 वर्ग किलोमीटर (वर्ग किमी) में फैला होगा, जिसमें 299.58 वर्ग किमी बफर जोन होगा और 230 वर्ग किमी कोर क्षेत्र, जिसे पहले ही 1977 में RWS के रूप में अधिसूचित किया गया था।
- रानीपुर टाइगर रिजर्व में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन हैं और यह बाघ, तेंदुए, सुस्त भालू, चित्तीदार हिरण, सांभर, चिंकारा और कई पक्षियों और सरीसृपों जैसे जीवों का घर है।
- रानीपुर टाइगर रिजर्व दुधवा, पीलीभीत और अमानगढ़ (कॉर्बेट टाइगर रिजर्व का बफर) के बाद यूपी में चौथा होगा। यह बुंदेलखंड क्षेत्र के राज्य के हिस्से में भी पहला होगा, जिसे वह पड़ोसी मध्य प्रदेश के साथ साझा करता है।
- क्षेत्र में बाघों के संरक्षण और संवर्धन के लिए रानीपुर बाघ संरक्षण फाउंडेशन भी स्थापित किया जाएगा।
- रानीपुर टाइगर रिजर्व की अधिसूचना लंबे समय से पाइपलाइन में है। यूपी वन विभाग ने 2018 में ही आरडब्ल्यूएस को टाइगर रिजर्व के रूप में अधिसूचित करने के लिए राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजा था।
- भारत में 72,749 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैले 50 टाइगर रिजर्व हैं, जो भारत के भौगोलिक क्षेत्र का 2.21 प्रतिशत है। 2018 में एनटीसीए के अनुमान के अनुसार भारत में 2,967 बाघ थे। उत्तर प्रदेश में 173 बाघ थे, जिनमें दुधवा नेशनल पार्क में 107 और पीलीभीत में 65 थे।

NTCA के बारे में

- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत गठित एक वैधानिक निकाय है।
- NTCA की स्थापना 2005 में की गई थी, जो भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री द्वारा भारत में प्रोजेक्ट टाइगर और टाइगर रिजर्व के पुनर्गठित प्रबंधन के लिए गठित टाइगर टास्क फोर्स की सिफारिश के बाद किया गया था।
- एनटीसीए अवैध शिकार गतिविधियों के लिए अलर्ट जारी करके केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI), वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो (WCCB) और अन्य विभागों जैसे निकायों के साथ सहयोग करता है।

NTCA के उद्देश्य

- हमारे संघीय ढांचे के भीतर राज्यों के साथ समझौता ज्ञापन के लिए एक आधार प्रदान करके, टाइगर रिजर्व के प्रबंधन में टाइगर रिजर्व के प्रबंधन में अपने ड्रिटर-स्टेट का अनुपालन करने के लिए प्रोजेक्ट टाइगर को वैधानिक अधिकार प्रदान करना।
- संसद द्वारा निरीक्षण की व्यवस्था करना।
- टाइगर रिजर्व के आसपास के क्षेत्रों में स्थानीय लोगों के आजीविका हितों को संबोधित करना।

RAO'S ACADEMY

4 अर्थव्यवस्था

भारत के लिए प्रतिस्पर्धात्मकता रोडमैप/100

खबरों में क्यों

EAC-PM ने India/100 के लिए प्रतिस्पर्धात्मकता रोडमैप जारी किया

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत/100 के लिए प्रतिस्पर्धात्मकता रोडमैप प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (EAC-PM) द्वारा जारी किया गया था।
- रोडमैप EAC-PM और प्रतिस्पर्धात्मकता संस्थान के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास है।
- यह अगले वर्षों में देश की विकास यात्रा के लिए नए मार्गदर्शक सिद्धांतों को स्थापित करने और लक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए क्षेत्र-विशिष्ट रोडमैप विकसित करने के लिए भारत के विकास में विभिन्न राज्यों, मंत्रालयों और भागीदारों का मार्गदर्शन करने की कल्पना करता है।
- भारत/100 के लिए प्रतिस्पर्धात्मकता रोडमैप प्रोफेसर माइकल ई. पोर्टर द्वारा विकसित प्रतिस्पर्धात्मकता ढांचे पर आधारित है।
- प्रतिस्पर्धात्मकता दृष्टिकोण उत्पादकता के विचार को निरंतर समृद्धि के चालक के रूप में सामने रखता है।
- यह इस संदर्भ पर जोर देता है कि एक राष्ट्र फर्मों को अधिक उत्पादक बनाने में सक्षम है और व्यक्तियों को उनकी उत्पादकता के माध्यम से उत्पन्न मूल्य में भाग लेने में सक्षम होने के लिए।
- इस दृष्टिकोण के आधार पर, भारत/100 रोडमैप '4 एस' सिद्धांतों के आधार पर क्षेत्र-विशिष्ट और क्षेत्र-विशिष्ट नीतियों के माध्यम से 2047 तक भारत के लिए एक उच्च आय वाला देश बनने का मार्ग प्रशस्त करता है।
- रोडमैप नए मार्गदर्शक सिद्धांत देने के लिए निर्धारित है जो स्पष्ट रूप से परिभाषित समग्र लक्ष्यों और सामाजिक और आर्थिक एजेंडा को एकीकृत करने में अंतर्निहित एक नए विकास दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति पर आधारित हैं।
- '4S' के मार्गदर्शक सिद्धांत भारत के भीतर सभी क्षेत्रों में साझा की जाने वाली सामाजिक प्रगति से मेल खाने वाली समृद्धि वृद्धि की आवश्यकता पर बल देते हुए समृद्धि प्राप्त करने के लिए हमारे दृष्टिकोण को फिर से परिभाषित करते हैं ताकि पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ हो और बाहरी झटकों का सामना करने के लिए ठोस हो।
- इन चार महत्वपूर्ण पहलुओं को पकड़कर, '4S' मार्गदर्शक सिद्धांत लचीला और समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं।
- प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण को भारत की आर्थिक और सामाजिक नीति की आधारशिला के रूप में काम करना चाहिए ताकि हम दीर्घकालिक आर्थिक विकास को बनाए रखने में सक्षम हो सकें।
- भारत के अनूठे लाभों में रोडमैप कारक में उल्लिखित सिफारिशें और मार्गदर्शक सिद्धांतों के एक नए सेट, नीतिगत लक्ष्यों और एक कार्यान्वयन वास्तुकला पर आधारित हैं।
- यह भारत के वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मकता स्तर, सामना की गई प्राथमिक चुनौतियों और विकास के अवसरों का एक संपूर्ण नैदानिक मूल्यांकन प्रदान करता है।
- इसके अलावा, एक उच्च आय वाले देश बनने का मार्ग निर्धारित करते हुए, रोडमैप कार्रवाई के आवश्यक

RAO'S ACADEMY

क्षेत्रों का सुझाव देता है, जिसमें श्रम उत्पादकता में सुधार और श्रम जुटाना, प्रतिस्पर्धी नौकरी के अवसरों के निर्माण को बढ़ावा देना और विभिन्न मंत्रालयों में अधिक समन्वय के माध्यम से नीति कार्यान्वयन में सुधार करना शामिल है।

- भारत/100 के लिए प्रतिस्पर्धात्मकता रोडमैप भारत की वृद्धि और विकास रणनीति के लिए एक नए दृष्टिकोण का आधार प्रदान करता है।
- आगे बढ़ते हुए, देश के विभिन्न उद्योगों, मंत्रालयों और राज्यों के लिए केपीआई और रोडमैप विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा ताकि देश के शताब्दी वर्ष तक देश की महत्वाकांक्षाओं तक पहुंचने की यात्रा को आकार दिया जा सके।
- विभिन्न क्षेत्रों और राज्यों में विकास के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन न केवल आज की नीतिगत कार्रवाइयों को आकार देगा बल्कि भविष्य की नीतियों के डिजाइन और कार्यान्वयन पर भी प्रभाव डालेगा।

5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

खबरों में क्यों

दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए भारत ब्रिटेन को पीछे किया।

महत्वपूर्ण खबर

- भारत यूनाइटेड किंगडम को पछाड़कर विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया।
- ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने 2021 के पूर्ववर्ती तीन महीनों के दौरान इंग्लैंड को पीछे छोड़ दिया।
- ब्लूमबर्ग के एक अध्ययन के अनुसार, मार्च में समाप्त तिमाही में भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 'नाममात्र' नकद संदर्भ में +854.7 मिलियन था, जबकि यूके +816 मिलियन था।
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने घोषणा की कि भारत यूनाइटेड किंगडम से आगे बढ़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।
- रैंकिंग में नवीनतम बदलाव दिसंबर 2021 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए मौजूदा डॉलर में तिमाही सकल घरेलू उत्पाद (GDP) संख्या पर आधारित है।
- IMF के आंकड़ों से पता चलता है कि मार्च को समाप्त तिमाही में भारत ने यूके पर अपनी बढ़त बढ़ाई।
- समायोजित आधार पर और प्रासंगिक तिमाही के अंतिम दिन डॉलर विनिमय दर का उपयोग करते हुए, मार्च से तिमाही में भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 'नाममात्र' नकद शर्तों में +854.7 बिलियन था। उसी आधार पर, यू.के. 816 बिलियन डॉलर था।
- भारत की जनसंख्या यू.के. की 20 गुना है और इसलिए इसकी प्रति व्यक्ति जीडीपी कम है।
- अप्रैल-जून तिमाही में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 13.5% का विस्तार हुआ, दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था का टैग बनाए रखने के लिए एक वर्ष में सबसे तेज गति लेकिन बढ़ती ब्याज लागत और प्रमुविश्व अर्थव्यवस्थाओं में मंदी का खतरा आने वाली तिमाहियों में गति को धीमा कर सकता है।
- इस सप्ताह की शुरुआत में जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, सकल घरेलू उत्पाद में सालाना आधार पर 13.5 फीसदी की वृद्धि हुई है, जो एक साल पहले के 20.1 फीसदी के विस्तार और पिछले तीन महीनों में मार्च में 4.09 फीसदी की वृद्धि की तुलना में है।
- वृद्धि, हालांकि भारतीय रिजर्व बैंक के 16.2 प्रतिशत के अनुमान से कम थी, खपत से प्रेरित थी और विशेष रूप से सेवा क्षेत्र में घरेलू मांग के पुनरुद्धार का संकेत था।
- दबी हुई मांग से खपत बढ़ रही है, क्योंकि दो साल की महामारी के प्रतिबंधों के बाद उपभोक्ता बाहर निकल रहे हैं और खर्च कर रहे हैं।
- सेवा क्षेत्र में जोरदार उछाल देखा गया है जिसे त्योहारी सीजन से बढ़ावा मिलेगा।

- लेकिन विनिर्माण क्षेत्र की 4.8 प्रतिशत की धीमी वृद्धि चिंता का विषय है। साथ ही, निर्यात से अधिक आयात होना चिंता का विषय है।
- इसके अतिरिक्त, असमान मानसून का कृषि विकास और ग्रामीण मांग पर भार पड़ने की संभावना है।
- जीडीपी प्रिंट, हालांकि, आरबीआई को मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देगा, जो लगातार सात महीनों के लिए 6% के आराम क्षेत्र से ऊपर रहा है।
- केंद्रीय बैंक ने मई से तीन किस्तों में बेंचमार्क नीति दर में 140 आधार अंकों की वृद्धि की है और मुद्रास्फीति को नियंत्रण में लाने के लिए और अधिक करने की कसम खाई है।
- सख्त मौद्रिक स्थितियों के अलावा, एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था को उच्च ऊर्जा और कमोडिटी की कीमतों से प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसका उपभोक्ता मांग और कंपनियों की निवेश योजनाओं पर असर पड़ने की संभावना है।
- चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि अप्रैल-जून में चीन के 0.4% विस्तार से अधिक थी।

विश्व की शीर्ष अर्थव्यवस्थाएं

1. संयुक्त राज्य अमेरिका
2. चीन
3. जापान
4. जर्मनी
5. भारत
6. यूनाइटेड किंगडम
7. फ्रांस
8. इटली
9. कनाडा
10. दक्षिण कोरिया

केंद्रः

- नॉमिनल जीडीपी (मुद्रास्फीति सहित) बनाम वास्तविक जीडीपी (मुद्रास्फीति की गणना के बिना)
- वर्तमान मूल्य (वे समय में एक निश्चित समय पर इंगित किए जाते हैं, और नॉमिनल मूल्य में कहा जाता है) बनाम स्थिर मूल्य वास्तविक मूल्य में होते हैं, यानी बेसलाइन या संदर्भ डेटा के संबंध में कीमतों में बदलाव के लिए सही किया जाता है।

डिजिटल ऋण देने के लिए आरबीआई के दिशानिर्देश

खबरों में क्यों

धोखाधड़ी के कई मामलों को देखते हुए आरबीआई ने डिजिटल ऋण देने के नियमों को सख्त कर दिया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने कहा कि डिजिटल ऋण के माध्यम से ऋण वितरण में लगी विनियमित संस्थाओं के पास मौजूदा डिजिटल ऋणों के लिए उधार मानदंडों का पालन करने के लिए 30 नवंबर तक का समय होगा।
- हालांकि, नए और मौजूदा ग्राहकों के लिए जो नए ऋण प्राप्त कर रहे हैं, ये मानदंड तुरंत लागू होंगे।
- आरबीआई ने यह भी बताया कि विनियमित संस्थाओं के दायित्व कम नहीं होंगे, भले ही वे उधार सेवा प्रदाताओं (LSP)/डिजिटल ऋण देने वाले ऐप (DLA) के साथ आउटसोर्सिंग व्यवस्था में प्रवेश करें।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

- यह सुनिश्चित करना विनियमित संस्थाओं का कर्तव्य है कि ये संस्थाएं नियामक द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों का पालन करें।
- आरबीआई ने कार्य समूह की सिफारिशों पर विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए हैं जिन्हें पिछले महीने तत्काल लागू करने के लिए स्वीकार किया गया था।
- दिशानिर्देश वाणिज्यिक बैंकों, गैर-बैंकिंग वित्त कंपनियों (एनबीएफसी), और प्राथमिक, राज्य और जिला-स्तरीय केंद्रीय सहकारी बैंकों द्वारा दिए गए सभी प्रकार के डिजिटल ऋणों पर लागू होते हैं।
- स्वीकृत सिफारिशों में से यह थी कि सभी ऋण संवितरण और पुनर्भुगतान केवल उधारकर्ता और विनियमित संस्थाओं के बैंक खातों के बीच निष्पादित किए जाने की आवश्यकता है। यह एलएसपी या किसी तीसरे पक्ष के किसी पास पूल खाते के बिना होना चाहिए।

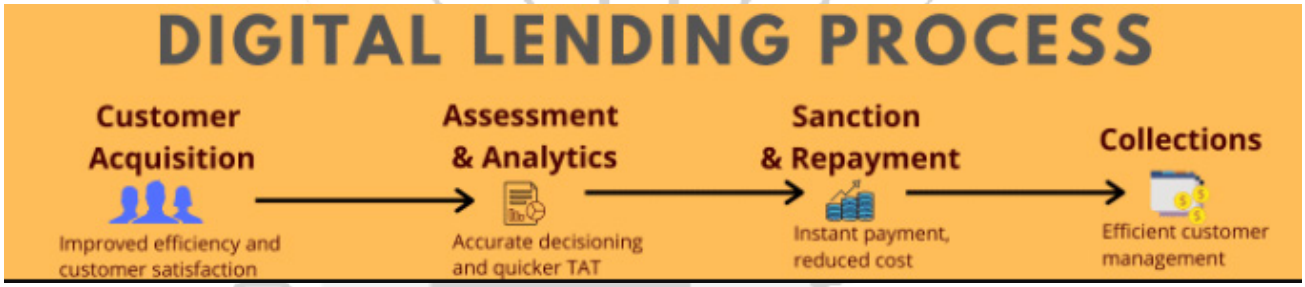

दिशानिर्देश

आरबीआई ने डिजिटल ऋण पर कार्य समूह की सिफारिशों पर दिशानिर्देश जारी किए हैं-

- दिशानिर्देश वाणिज्यिक बैंकों, एनबीएफसी, शहरी सहकारी बैंकों और राज्य सहकारी बैंकों पर लागू होते हैं
- ऋण संवितरण और पुनर्भुगतान केवल उधारकर्ता के बैंक खातों और आरई के बीच निष्पादित किए जाने की आवश्यकता है
- किसी भी परिस्थिति में, एलएसपी के खातों और उनके डिजिटल ऋण देने वाले ऐप्स सहित किसी तीसरे पक्ष के खाते में संवितरण नहीं किया जाता है
- केंद्रीय बैंक ने स्पष्ट किया है कि संवितरण हमेशा उधारकर्ता के बैंक खाते में किया जाना चाहिए।
- अपवाद केवल सांविधिक या नियामक अधिदेश के तहत कवर किए गए संवितरण के लिए हैं, सह-उधार के लिए विनियमित संस्थाओं के बीच धन का प्रवाह, और विशिष्ट अंतिम उपयोग के लिए संवितरण, बशर्ते ऋण सीधे अंतिम-लाभार्थी के बैंक खाते में वितरित किया गया हो।
- आरबीआई ने स्पष्ट रूप से कहा है कि किसी भी मामले में, एलएसपी और उनके डीएलए के खातों सहित किसी तीसरे पक्ष के खाते में संवितरण नहीं किया जाना है।
- विनियमित संस्थाओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि एलएसपी को भुगतान किए जाने वाले शुल्क का भुगतान उनके द्वारा सीधे किया जाए। उनसे एलएसपी द्वारा सीधे उधारकर्ता से शुल्क नहीं लिया जाना चाहिए। केंद्रीय बैंक ने यह भी स्पष्ट किया है कि उधारकर्ताओं पर दंडात्मक ब्याज ऋण की बकाया राशि पर आधारित होना चाहिए।
- कूलिंग ऑफ पीरियड वह होता है जहां एक उधारकर्ता को इस अवधि के दौरान बिना किसी दंड के मूलधन और आनुपातिक एपीआर का भुगतान करके डिजिटल ऋण से बाहर निकलने का विकल्प मिलता है।

ऋण ऐप्स

खबरों में क्यों

FM ने आरबीआई को कर्जदारों की सुरक्षा के लिए कानूनी ऋण ऐप्स को 'श्वेतसूची' में डालने का काम किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- अवैध ऋण ऐप्स के खतरे को रोकने के लिए, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) को कानूनी ऋण ऐप्स की एक 'श्वेतसूची' तैयार करने के लिए कहा गया है और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeITY) के संचालन को रोकने के लिए कार्यदायी कार्रवाई की गई है। RBI, MeITY और वित्त और कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालयों के शीर्ष अधिकारियों के साथ वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में एक बैठक के बाद इस तरह के अवैध ऋण ऐप'।

- सरकार ने ऐसे ऐप्स पर चिंता व्यक्त की जो ऋण या माइक्रो क्रेडिट की पेशकश करते हैं, विशेष रूप से कमजोर और निम्न-आय वर्ग के लोगों को अत्यधिक उच्च ब्याज दरों पर और ऐसे ऋणों की वसूली के लिए ब्लैकमेल और आपराधिक धमकी का सहारा लेते हैं।
- वित्त मंत्रालय ने मनी लॉन्ड्रिंग, कर चोरी, गोपनीयता और डेटा के उल्लंघन, और अनियमित भुगतान एग्रीगेटर्स, शेल कंपनियों, निष्क्रिय एनबीएफसी के दुरुपयोग की संभावना को भी हरी झंडी दिखाई।
- केंद्रीय बैंक को 'खच्चर या किराए के' खातों की निगरानी करने का भी काम सौंपा गया है जिनका उपयोग मनी लॉन्ड्रिंग के लिए किया जा सकता है और ऐसे ऐप ऑपरेटरों द्वारा उनके दुरुपयोग से बचने के लिए निष्क्रिय गैर-बैंकिंग वित्त कंपनियों (NBFC) की समीक्षा और रद्द कर सकते हैं।
- आरबीआई यह सुनिश्चित करेगा कि भुगतान एग्रीगेटर्स का पंजीकरण एक समय सीमा के भीतर पूरा हो जाए और उसके बाद किसी भी अपंजीकृत भुगतान एग्रीगेटर को काम करने की अनुमति न हो।
- ग्राहकों, बैंक कर्मचारियों, कानून प्रवर्तन एजेंसियों और अन्य हितधारकों के लिए साइबर जागरूकता बढ़ाने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए।
- वित्त मंत्रालय ने कहा कि वह नियमित आधार पर अनुपालन के लिए कार्रवाई योग्य बिंदुओं की निगरानी करेगा।
- भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार, गैर-पंजीकृत संस्थाओं के खिलाफ आरबीआई द्वारा स्थापित एक पोर्टल "सचेत" को जनवरी 2020 की शुरुआत से मार्च 2021 के अंत तक डिजिटल ऋण देने वाले ऐप्स के खिलाफ लगभग 2,562 शिकायतें मिली हैं।
- इसके अलावा, 27 गैरकानूनी ऋण देने वाले ऐप्स को सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 69A के तहत अधिसूचित सूचना प्रौद्योगिकी (जनता के लिए सूचना की पहुंच को अवरुद्ध करने के लिए प्रक्रिया और

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

सुरक्षा) नियम, 2009 में निर्दिष्ट तकनीकी प्रक्रिया के बाद अवरुद्ध कर दिया गया था।

- सबसे अधिक शिकायतें महाराष्ट्र (572), उसके बाद कर्नाटक (394), दिल्ली (352), हरियाणा (314), तेलंगाना (185), आंध्र प्रदेश (144), उत्तर प्रदेश (142), पश्चिम बंगाल (138), तमिलनाडु (57), गुजरात (56) से प्राप्त हुई।
- चीन जैसे देशों में ऐसे ऐप्स के खिलाफ कार्रवाई के बावजूद, भारत में इनकी संख्या सबसे अधिक है।
- सरकार द्वारा उठाए गए लाल झंडों के बाद, Google जैसे टेक दिग्गज, जिसका Android प्लेटफॉर्म भारत में सबसे लोकप्रिय है, ने अपने Play Store पर उपलब्ध ऐप्स पर एक विस्तृत समीक्षा अभ्यास किया।
- भारतीय कानूनी क्षेत्राधिकार से परे अपतटीय संस्थाओं द्वारा बहुत सारे उधार प्लेटफॉर्म संचालित किए जाते हैं।

IBC में परिवर्तन

न्यूज में क्यों

इनसॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी बोर्ड ऑफ इंडिया (IBBI) ने इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड (IBC) में संशोधन किया है, ताकि बदलाव में तेजी लाई जा सके और रिकवरी को अधिकतम किया जा सके।

महत्वपूर्ण बिंदु

- दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड द्वारा दिवाला और दिवालियापन संहिता में कई संशोधन और स्पष्टीकरण।
- भारत (IBBI) लेनदारों को संकटग्रस्त आस्तियों के लिए बेहतर मूल्य प्राप्त करने और शिथिल वसूली दरों को उठाने में मदद करेगा।
- अलग-अलग अधिसूचनाओं में, IBBI ने लेनदारों को अधिक मूल्य मिलने पर आंशिक संपत्ति बेचने की अनुमति दी।
- इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि नियामक ने समाधान पेशेवरों (आरपी) के लिए प्रदर्शन-आधारित वेतन संरचना की भी घोषणा की। दोनों कदमों से रिकवरी में दूरगामी बदलाव होंगे।
- आरपी को वसूली मूल्य के आधार पर प्रोत्साहन देना सभी हितधारकों के उद्देश्यों के अनुरूप है।
- लेनदार अब तक एक प्रदर्शन-आधारित शुल्क योजना के साथ काम करने के खिलाफ थे और इससे संकल्प की गुणवत्ता में गिरावट आई है और परिणामस्वरूप वसूली मूल्य में गिरावट आई है।
- प्रोत्साहन समाधान पेशेवरों को कॉर्पोरेट देनदार के मूल्य को अनुकूलित करने का प्रयास करेंगे।
- एक अधिसूचना में, आईबीबीआई ने पहली बार आरपी के लिए न्यूनतम निर्धारित शुल्क निर्धारित किया है। स्वीकार किए गए दावों के आकार के आधार पर, आरपी अब प्रति माह 1 लाख रुपये से 5 लाख रुपये के बीच कमा सकते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि समय पर समाधान और मूल्य अधिकतम दोनों के लिए प्रोत्साहन दिए गए हैं।
- यदि समाधान योजना राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण (NCLT) को 165 दिनों से कम समय में प्रस्तुत की जाती है तो एक आरपी अब वसूली योग्य मूल्य के 1% के लिए हकदार है। इसके विपरीत, 330 दिनों से अधिक समय के बाद योजना प्रस्तुत करने पर उसे कुछ नहीं मिलता है।
- आरपी मूल्य को अधिकतम करने के लिए प्रोत्साहन के रूप में वास्तविक मूल्य और परिसमापन मूल्य के बीच अंतर के 1% का भी हकदार है। यह बदलाव 1 अक्टूबर से प्रभावी है।
- आईबीबीआई ने लेनदारों को उन मामलों में अलग से संपत्ति बेचने की अनुमति दी है जहां समग्र रूप से कॉर्पोरेट देनदार के लिए कोई समाधान योजना प्राप्त नहीं हुई है, जिससे मूल्य को अधिकतम किया जा सके।

IBC के बारे में

- इसे खराब ऋणों से निपटने और दिवाला समाधान के लिए 2016 में पेश किया गया था।

- लेखांकन में, दिवाला परिपक्वता पर, किसी व्यक्ति या कंपनी के ऋणों का भुगतान करने में असमर्थ होने की स्थिति है; दिवालिया होने की स्थिति में उन्हें दिवालिया कहा जाता है।

इनसॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड (संशोधन) बिल, 2021: इसने प्री-पैकेज्ड इन्सॉल्वेंसी रिजॉल्यूशन प्रोसेस (PIRP) का प्रस्ताव रखा, जिसे सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) के लिए एक दिवाला समाधान तंत्र के रूप में 'प्री-पैक' भी कहा जाता है।

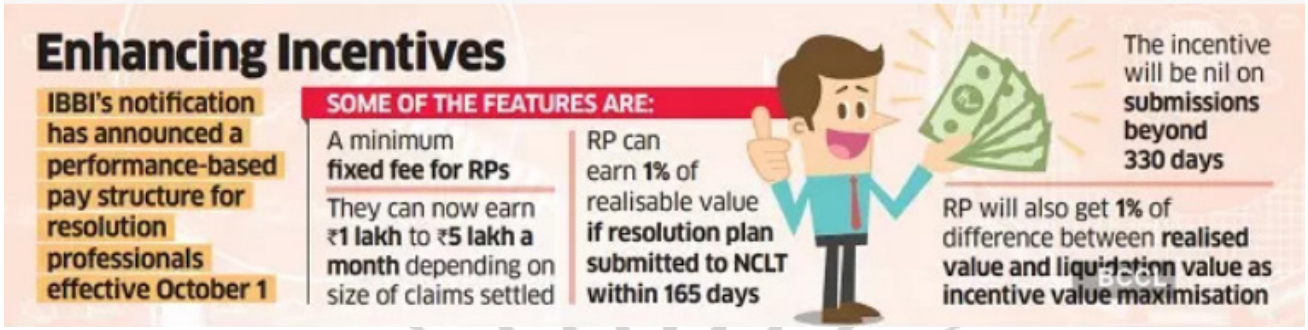

राष्ट्रीय रसद नीति

खबरों में क्यों

पीएम नरेंद्र मोदी ने नेशनल लॉजिस्टिक्स पॉलिसी लॉन्च किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारतीय उद्योग के अनुसार, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अनावरण की गई राष्ट्रीय रसद नीति, व्यापार करने में आसानी को बेहतर बनाने और परिवहन लागत को काफी कम करने में मदद करेगी।
- नीति परिवहन क्षेत्र के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने और आने वाले वर्षों में व्यवसायों की रसद लागत को सकल घरेलू उत्पाद के 13-14 प्रतिशत से एक अंक तक लाने का प्रयास करती है।
- कम लॉजिस्टिक्स लागत और बढ़ी हुई लॉजिस्टिक क्षमताएं विभिन्न क्षेत्रों में अर्थव्यवस्था को कई तरह से सक्रिय करेंगी और भारत को वैश्विक विनिर्माण पावरहाउस के रूप में उभरने के कई कदम आगे ले जाएंगी।
- व्यापार करने में आसानी में सुधार के अलावा, यह माल और लोगों के परिवहन के साधनों जैसे पानी, हवा, सड़क, रेलवे में तेज और निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित करने में मदद करेगा।
- नीति से पूरी आपूर्ति श्रृंखला में लेनदेन की लागत में काफी कमी आएगी। विभिन्न तकनीकों द्वारा सक्षम, नीति सड़कों, रेल, बंदरगाहों, हवाई अड्डों और गोदामों सहित विभिन्न रसद मोड में एकीकृत उपायों पर केंद्रित है, जो भारत में व्यापार करने में आसानी के लिए एक निर्णायक बढ़त देगी।
- यह रसद मूल्य श्रृंखला के सभी पहलुओं की दक्षता बढ़ाने का एक समग्र प्रयास है।
- पिछले पांच वित्तीय वर्षों में, सरकार ने सड़कों, रेल, बंदरगाहों और हवाई अड्डों जैसे कठिन बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए करीब 15 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया है।
- यह नीति भारत के लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को कम और अनुमानित डिलीवरी समयसीमा के साथ अधिक लागत प्रतिस्पर्धी, पर्यावरण के अनुकूल, औपचारिक, पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से जारी पहलों के एक समूह का प्रतिनिधित्व करती है।
- नीति के कुछ प्रमुख स्तंभों में प्रथम और अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी पर विशेष जोर देने के साथ गुणवत्तापूर्ण लॉजिस्टिक अवसंरचना सुनिश्चित करना शामिल है; और मांग और आपूर्ति से मेल खाने के लिए यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफेस प्लेटफॉर्म जैसी पहलों के माध्यम से डिजिटल तकनीकों और एनालिटिक्स का उपयोग।
- इस नीति से सड़कों पर मौजूदा अति निर्भरता (वर्तमान में वैश्विक स्तर पर 25 प्रतिशत के मुकाबले 60 प्रतिशत से अधिक) से रेलवे (वर्तमान में 30 प्रतिशत) और जलमार्ग (वर्तमान में केवल 5 प्रतिशत) पर रसद

में एक सामान्य बदलाव की सुविधा की उम्मीद है। जिससे औसत रसद लागत के साथ-साथ कार्बन फुटप्रिंट भी कम हो जाता है।

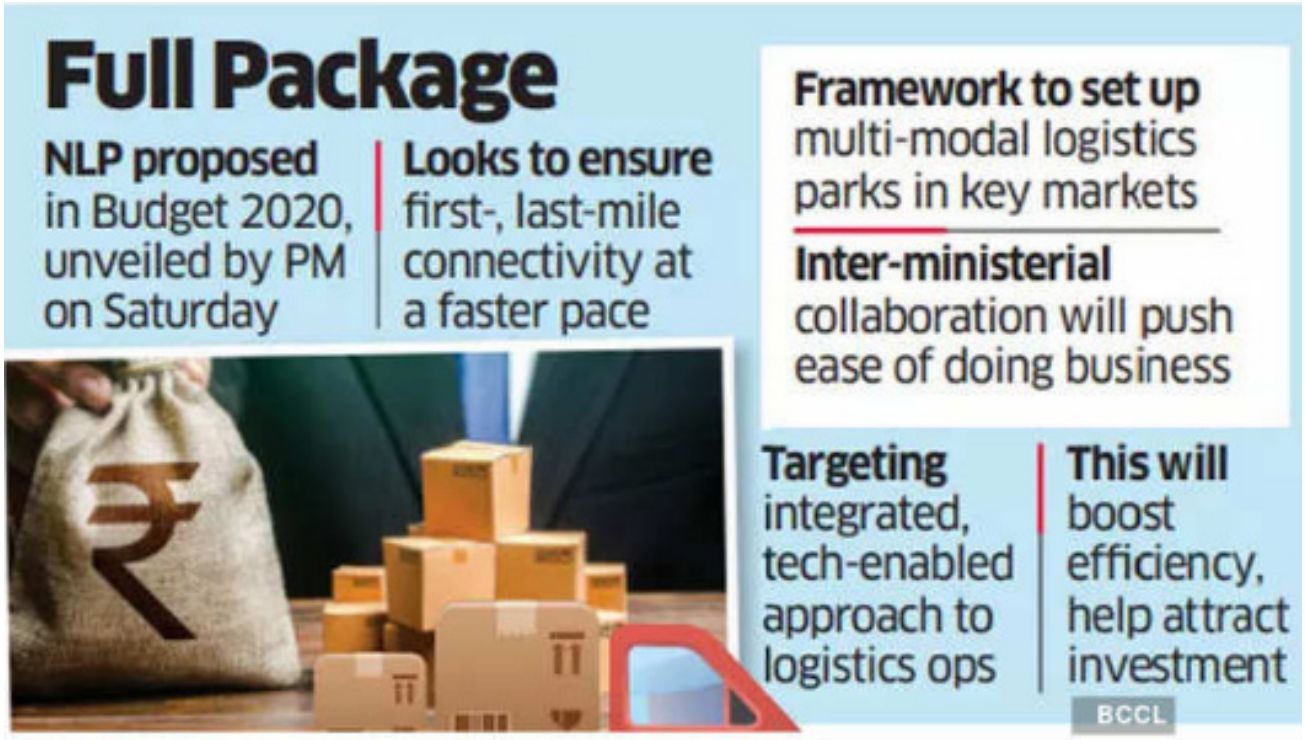

- इससे विश्व बैंक के लॉजिस्टिक्स प्रदर्शन सूचकांक जैसे वैश्विक अध्ययनों में भारत की रैंकिंग में उल्लेखनीय सुधार होने की भी उम्मीद है, जहां 2018 में भारत 160 देशों में से 47वें स्थान पर था।
- यह सरकार द्वारा उठाया गया एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है जो ऑटोमोबाइल क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देगा क्योंकि नीति 35 मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स हब जैसे बेहतर बुनियादी ढांचे के निर्माण पर केंद्रित है, जो माल के निर्बाध परिवहन को बढ़ावा देगा।
- उम्मीद है कि यह नीति निर्माताओं के लिए पारगमन समय और रसद लागत को कम करेगी और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारतीय वस्तुओं की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करेगी, जिससे भारत के निर्यात में मदद मिलेगी।
- एक एकीकृत और कुशल रसद पारिस्थितिकी तंत्र का विकास भारत के लिए 5 ट्रिलियन अमरीकी डालर की अर्थव्यवस्था बनने और व्यापार प्रतिस्पर्धा में सुधार करने के लिए एक महत्वपूर्ण संबल है।
- जैसा कि भारत बुनियादी ढांचे और आपूर्ति श्रृंखलाओं का आधुनिकीकरण करना चाहता है, यह स्पष्ट है कि प्रौद्योगिकी सभी शामिल हितधारकों को एकजुट करने और जटिलता को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में मदद करने की कुंजी है।
- राष्ट्रीय रसद नीति (एनएलपी) इस क्षेत्र के लिए एक बड़े प्रोत्साहन के रूप में आती है, क्योंकि इसका उद्देश्य पूरे भारत में माल की निर्बाध आवाजाही को बढ़ावा देना है और संभावित रूप से रसद की लागत में कमी और सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में तेजी ला सकता है।
- मानव पूंजी और परिचालन मानकों को बढ़ाने पर नीति का बढ़ा हुआ ध्यान इस क्षेत्र की औपचारिकता बढ़ाने के लिए स्वागत योग्य पहल है।
- नीति का देश की आपूर्ति श्रृंखला पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और भंडारण क्षमता को बढ़ाने में मदद मिलेगी, और उत्पादों को खपत बिंदुओं के करीब ले जाएगा।
- एनएलपी की शुरुआत से गति और दक्षता बढ़ाने के अलावा डिजिटल एकीकरण के माध्यम से पारदर्शिता आएगी। यह तेज गति वाले लॉजिस्टिक्स इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास, कई हितधारकों के बीच बेहतर समन्वय, प्रक्रियाओं और

प्रलेखन को सरल बनाने और अंतिम-मील कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने में सक्षम होगा।

- रसद लागत को 25 प्रतिशत तक कम करने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के साथ, यह भारत में रसद उद्योग में एक आदर्श बदलाव ला सकता है और वैश्विक बाजार में भारत की निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देगा।
- नीति कुशल आपूर्ति-पक्ष प्रबंधन और रसद लागत को लगभग 10 प्रतिशत के वैश्विक मानकों तक कम करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।
- यह भारतीय विनिर्माताओं को वैश्विक स्तर पर अपने पदचिह्नों का विस्तार करने की अनुमति देते हुए निर्यात वृद्धि को अत्यधिक आवश्यक गति प्रदान करेगा। गतिशक्ति विश्वविद्यालय लॉजिस्टिक्स वैल्यू चेन में कौशल वृद्धि पर जोर देते हुए रोजगार के अवसरों को बढ़ाएगा।
- भीतरी इलाकों को जोड़ने पर अपने फोकस के साथ, यह बदले में, रिटर्न लोड और कम डेड मील सुनिश्चित करेगा क्योंकि आपूर्ति और मांग पूरे भारत में एक पारदर्शी बाजार में एक साथ आती है।

भारत के लिए विकास पूर्वानुमान

खबरों में क्यों

फिच ने भारत के वित्त वर्ष 2023 के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि का अनुमान 7.8% से घटाकर 7% कर दिया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- फिच रेटिंग्स ने चालू वित्त वर्ष के लिए भारत के आर्थिक विकास (जीडीपी) के अनुमान को 7.8 प्रतिशत के पिछले अनुमान से घटाकर 7 प्रतिशत कर दिया।
- वैश्विक रेटिंग एजेंसी को उम्मीद है कि 2022-23 में अर्थव्यवस्था 7 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी, साथ ही अगले वित्तीय वर्ष में भी 7.4 प्रतिशत के पहले के अनुमान से 6.7 प्रतिशत तक धीमी हो जाएगी।
- भारतीय अर्थव्यवस्था वर्ष-दर-वर्ष 13.5 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 2022 में ठीक हुई, लेकिन यह 18.5 प्रतिशत की वृद्धि की अपेक्षा से कम थी।
- मौसमी रूप से समायोजित अनुमान 2022 में तिमाही-दर-तिमाही 3.3 प्रतिशत की गिरावट दिखाते हैं, हालांकि यह उच्च आवृत्ति संकेतकों के विपरीत प्रतीत होता है।
- यह उम्मीद करता है कि वैश्विक आर्थिक पृष्ठभूमि, उच्च मुद्रास्फीति और सख्त मौद्रिक नीति को देखते हुए भारतीय आर्थिक विकास धीमा हो जाएगा।
- अपनी रिपोर्ट में, फिच ने कहा कि यूरोपीय गैस संकट, उच्च मुद्रास्फीति और वैश्विक मौद्रिक नीति की गति में तेज तेजी से आर्थिक संभावनाओं पर भारी असर पड़ रहा है।
- जून ग्लोबल इकोनॉमिक आउटलुक (GEO) के बाद से इसने विकास के पूर्वानुमानों में तेजी से और व्यापक रूप से कटौती की है।
- फिच को अब उम्मीद है कि 2022 में विश्व सकल घरेलू उत्पाद में 2.4 प्रतिशत की वृद्धि होगी, जो पिछले अनुमानों से 0.5 प्रतिशत कम है।
- 2023 में, रेटिंग एजेंसी विश्व जीडीपी विकास दर केवल 1.7 प्रतिशत देखती है।
- यूरोजोन और यूके के 2022 में बाद में मंदी में प्रवेश करने की उम्मीद है और अमेरिका को 2023 के मध्य में हल्की मंदी का सामना करना पड़ सकता है।
- इससे पहले, मूडीज इन्वेस्टर्स सर्विस ने भी 2022 के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद के विकास के अनुमान को तेजी से घटाकर 7.7 प्रतिशत कर दिया था।
- इसमें कहा गया है कि बढ़ती ब्याज दरें, असमान मानसून और धीमी वैश्विक वृद्धि क्रमिक आधार पर आर्थिक विकास को प्रभावित करेगी।
- मूडी ने 2022 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 8.8 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया था। क्रेडिट

रेटिंग एजेंसी ने अगले वर्ष 2023 के लिए देश के सकल घरेलू उत्पाद के पूर्वानुमान को पहले के अनुमानित 5.4 प्रतिशत से घटाकर 5.2 प्रतिशत कर दिया।

- पिछले वर्ष 2021 में अर्थव्यवस्था का विस्तार 8.3 प्रतिशत था, जो 2020 में 6.7 प्रतिशत सिकुड़ने के बाद जब देश में महामारी ने दस्तक दी थी।
- ग्लोबल मैक्रो आउटलुक 2022-23 के अपने अपडेट में, मूडीज ने कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) इस साल कठोर बना रह सकता है और घरेलू मुद्रास्फीति के दबावों को नियंत्रित करने के लिए 2023 में काफी सख्त नीतिगत रुबनाए रख सकता है।
- इससे पहले सिटीग्रुप इंक ने भी वित्तीय वर्ष के लिए मार्च 2023 के लिए अपने विकास अनुमान मंर तेजी से 6.7 प्रतिशत की कटौती की, जो पहले 8 प्रतिशत थी, जबकि गोल्डमैन सैक्स समूह ने इसे संशोधित कर 7.2 प्रतिशत से घटाकर 7 प्रतिशत कर दिया, जब डेटा भारत की सकल घरेलू उत्पाद पिछली तिमाही में अपेक्षा से कम बढ़ा।

रेटिंग एजेंसी क्या है?

- रेटिंग एजेंसियां इक्विटी, ऋण या देश की साख या क्षमता का आकलन करती हैं।
- उनकी रिपोर्ट को निवेशकों द्वारा पढ़ा जाता है ताकि इस बारे में सूचित निर्णय लिया जा सके कि किसी विशेष देश या उस भौगोलिक क्षेत्र की कंपनियों में निवेश करना है या नहीं।
- किसी देश की कम रेटिंग संभावित रूप से किसी विदेशी निवेशक द्वारा निवेश को बेचने में घबराहट का कारण बन सकती है।

YOUR SUCCESS OUR PRIDE
RAO'S ACADEMY

5 विज्ञान और तकनीक

मोक्सी

खबरों में क्यों

मार्स ऑक्सीजन इन-सीटू रिसोर्स यूटिलाइजेशन एक्सपेरिमेंट (MOXIE) ने मानव की जरूरतों को पूरा करने के लिए किसी ग्रह के वातावरण में संसाधनों के उपयोग का पहला उदाहरण तैयार किया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- यूनाइटेड स्टेट्स नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन के पर्सवेरेंस रोवर के साथ भेजे गए एक छोटे से बॉक्स ने ग्रह के वायुमंडल से घटकों के साथ मंगल ग्रह में ऑक्सीजन का उत्पादन किया है।
- मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) द्वारा मंगल ऑक्सीजन इन-सीटू रिसोर्स यूटिलाइजेशन एक्सपेरिमेंट (MOXIE) एक पेड़ की तरह काम करता है, शुद्ध ऑक्सीजन का उत्पादन करने के लिए वातावरण से अवशोषित कार्बन डाइऑक्साइड को विभाजित करता है।

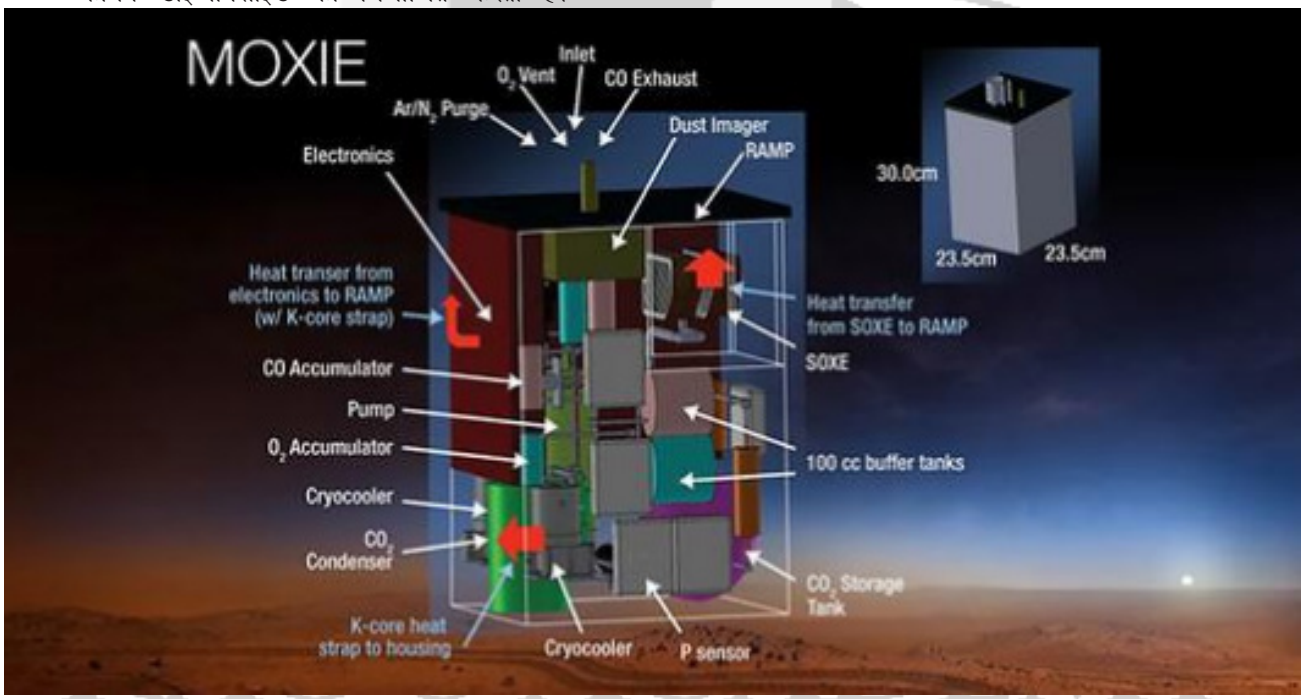

- पहला सफल रूपांतरण अप्रैल 2021 में रोवर के मंगल पर उतरने के दो महीने बाद हुआ था। तब से, रिपोर्ट के अनुसार, दिन और वर्ष के विभिन्न समयों में मोक्सी के साथ सात दौर के प्रयोग सफलतापूर्वक किए गए।
- यह पहली बार है जब मंगल ग्रह पर मानव मिशन के लिए आवश्यक सामग्री को ग्रह से संसाधनों के साथ उत्पन्न किया गया था, न कि पृथ्वी से लाए गए संसाधनों के साथ, MOXIE के उप प्रधान अन्वेषक जेफरी हॉफमैन ने कहा कि एमआईटी के एरोनॉटिक्स और एस्ट्रोनॉटिक्स विभाग में अभ्यास के प्रोफेसर हैं।
- इस उपकरण ने एक मध्यम आकार के पेड़ के समान प्रति घंटे 6 ग्राम ऑक्सीजन का उत्पादन किया। "कई

सौ पेड़ों की दर से" लगातार ऑक्सीजन का उत्पादन करने के लिए इस परियोजना को मानव मिशन से आगे बढ़ाया जा सकता है।

- मोक्सी के अंदर, मार्टियन हवा को पहले फिल्टर किया जाता है और दबाव डाला जाता है। इसके बाद इसे सॉलिड ऑक्साइड इलेक्ट्रोलाइजर (SOXE) के माध्यम से भेजा जाता है, जो ऑक्सऑन एनर्जी द्वारा विकसित और निर्मित एक उपकरण है, जो कार्बन डाइऑक्साइड युक्त हवा को ऑक्सीजन आयनों और कार्बन मोनोऑक्साइड में विद्युत रूप से विभाजित करता है।
- ऑक्सीजन आयनों को अलग किया जाता है और सांस लेने योग्य, आणविक ऑक्सीजन (O2) बनाने के लिए पुनः संयोजित किया जाता है, अंत में, वायुमंडल में छोड़ने से पहले गैस को मापा जाता है और शुद्धता के लिए परीक्षण किया जाता है।
- लेखकों के अनुसार, निर्बाध ऑक्सीजन उत्पादन के कई पहलुओं को अभी भी देखा जाना बाकी है। टीम को अभी सुबह और शाम के साथ-साथ मंगल ग्रह के वर्ष के निश्चित समय में मशीन का परीक्षण करना है।
- लाल ग्रह पर वातावरण दिन के दौरान और विभिन्न मौसमों में बहुत भिन्न होता है। हवा का घनत्व वर्ष के दौरान दो के कारक से भिन्न हो सकता है, और तापमान 100 डिग्री तक भिन्न हो सकता है।

CERVAVAC

खबरों में क्यों

सर्वाइकल कैंसर के लिए भारत का पहला स्वदेशी रूप से विकसित टीका।

महत्वपूर्ण बिंदु

- केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के लिए भारत के पहले स्वदेशी रूप से विकसित क्वाड्रिवेलेंट ह्यूमन पेपिलोमावायरस (QHPV) वैक्सीन ब्मतअंअंब के वैज्ञानिक समापन की घोषणा की।
- व्यापक रूप से रोके जाने योग्य होने के बावजूद, विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, सर्वाइकल कैंसर दुनिया भर में महिलाओं में चौथा सबसे आम कैंसर है। 2018 में, अनुमानित 57,000 महिलाओं को इस बीमारी का पता चला था और इससे दुनिया भर में 3,11,000 मौतें हुईं।
- सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया से मिले संकेतों के मुताबिक इसकी कीमत 200 से 400 रुपये के बीच होगी।

भारत में सर्वाइकल कैंसर कितना आम है ?

- भारत में सर्वाइकल कैंसर के वैश्विक बोझ का लगभग पांचवां हिस्सा है, जिसमें 1.23 लाख मामले हैं और प्रति वर्ष लगभग 67,000 मौतें होती हैं
- लगभग सभी सर्वाइकल कैंसर के मामले ह्यूमन पैपिलोमावायरस (एचपीवी) के कुछ उपभेदों से जुड़े होते हैं, जो एक सामान्य वायरस है जो यौन संपर्क के माध्यम से फैलता है।
- रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्रों के अनुसार, जबकि शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली आमतौर पर दो साल के भीतर स्वाभाविक रूप से एचपीवी संक्रमण से छुटकारा पाती है, जबकि वायरस समय के साथ रुक सकता है और कुछ सामान्य कोशिकाओं को असामान्य कोशिकाओं और फिर कैंसर में बदल सकता है (CDC)।
- स्क्रीनिंग और टीकाकरण दो शक्तिशाली उपकरण हैं जो सर्वाइकल कैंसर को रोकने के लिए उपलब्ध हैं। फिर भी, इस कैंसर की रोकथाम के बारे में महिलाओं में बहुत कम जागरूकता है और 10% से भी कम भारतीय महिलाओं की जांच की जाती है।
- 30-49 आयु वर्ग की सभी महिलाओं को सर्वाइकल कैंसर की जांच करवानी चाहिए, भले ही उनमें कोई लक्षण न हों और अपनी किशोर बेटियों को एचपीवी वैक्सीन का टीका लगवाएं।

नया QHPV वैक्सीन किसने विकसित किया?

- Cervavac को भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) के समन्वय में पुणे स्थित सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया द्वारा विकसित किया गया था।

कितना कारगर है नया टीका?

- एचपीवी के टीके दो खुराक में दिए जाते हैं और आंकड़ों से पता चला है कि दोनों के प्रशासित होने के बाद विकसित होने वाले एंटीबॉडी छह या सात साल तक चल सकते हैं।

चुनौतियां क्या हैं?

- सबसे बड़ा कार्य 9 से 15 वर्ष की आयु की किशोरियों के बड़े पैमाने पर जनसांख्यिकीय टीकाकरण के लिए पर्याप्त संसाधन और जनशक्ति आवंटित करना होगा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे एचपीवी से जल्दी सुरक्षित हैं।

आगे क्या?

- विशेषज्ञों का सुझाव है कि स्कूल आधारित टीकाकरण कार्यक्रम प्रभावी ढंग से काम करेंगे।

BPaL

खबरों में क्यों

लघु क्षय रोग उपचार 'बीपल' ने 84 से 94% टीबी रोगियों के लिए अनुकूल परिणाम दिखाए हैं और इसलिए इसे वैश्विक स्वीकृति दी गई है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- सामान्य 18-महीने के प्रोटोकॉल के मुकाबले छह महीने के एक लघु तपेदिक उपचार आहार ने वैज्ञानिक मत जीता है और कई देशों में परीक्षणों से पता चला है कि सबसे बीमार रोगियों में से 84% से 94% में इसके "अनुकूल परिणाम" थे।
- "बेडक्वीलिन-प्रीटोमेनिड-लाइनजोलिड" रेजिमेन, जिसे बीपीएएल रेजिमेन के रूप में संक्षिप्त किया गया है, अत्यधिक दवा प्रतिरोधी तपेदिक के खिलाफ लगभग 90% प्रभावकारिता की सूचना दी गई है, लेकिन प्रतिदिन 1,200 मिलीग्राम लाइनजोलिड के साथ प्रतिकूल घटनाओं की घटनाएं अधिक रही हैं।
- अत्यधिक दवा प्रतिरोधी तपेदिक के खिलाफ प्रभावकारिता बनाए रखते हुए विषाक्त प्रभाव को कम करने के लिए इस एजेंट के साथ उपचार की अवधि, लाइनजोलिड की उचित खुराक, आहार में तीन दवाओं में से एक, और उपचार की अवधि का पता लगाने के लिए आयोजित किया गया था।
- अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि समग्र जोखिम-लाभ अनुपात उस समूह के पक्ष में था जिसने 26 सप्ताह के लिए 600 मिलीग्राम की खुराक पर लाइनजोलिड के साथ तीन-दवा आहार प्राप्त किया, जिसमें प्रतिकूल घटनाओं की कम घटना और कम लाइनजोलिड खुराक संशोधन शामिल थे।

बीपीएल क्या है?

- टीबी के लिए एक नई दवा अंततः भारत सहित वैश्विक रोल-आउट की प्रक्रिया में है। एक गैर-लाभकारी संगठन, टीबी एलायंस द्वारा विकसित, प्रीटोमैनिड नवीनतम टीबी विरोधी दवा है, जिसे बीपीएएल रेजिमेन के हिस्से के रूप में निर्धारित किया गया है, जिसमें बेडैक्विलाइन और लाइनजोलिड शामिल हैं।
- चिकित्सकों का मानना है कि बीपीएएल संयोजन में यह नई दवा उपचार की अवधि को आधा (और अधिक) कम कर देगी, और उपचार के दौरान एमडीआर-टीबी रोगी द्वारा ली जाने वाली दवा की मात्रा को कम कर देगी।
- 18 से 24 महीने की उपचार अवधि से, BPaL के समय को लगभग 6 महीने तक लाने की संभावना है।

- इसके अलावा, पुराने "ऑल ओरल ड्रग रेजिमेन" में रोगी को प्रतिदिन लेने के लिए लगभग 14 अलग-अलग टीबी विरोधी दवाएं शामिल थीं।
- बीपीएएल के साथ, यह केवल तीन दैनिक गोलियां लेने की संभावना है। एक छोटा आहार, जो सभी मौखिक है और प्रति दिन कम खुराक की आवश्यकता होती है, रोगी के लिए पालन करना और उपचार पूरा करना आसान बनाता है।

BPaL भारत के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

- बीपीएएल आहार के हिस्से के रूप में नई दवा की शुरूआत ऐसे समय में हुई है जब भारत टीबी रिपोर्ट के आंकड़ों से पता चला है कि टीबी या बहु-दवा प्रतिरोधी टीबी के दवा प्रतिरोधी रूपों की स्थिति को तत्काल कम करने की आवश्यकता है।
- ग्लोबल टीबी रिपोर्ट 2021 के अनुसार, भारत में 2019 और 2020 के बीच टीबी के सभी रूपों के कारण मृत्यु दर में 11% की वृद्धि हुई है। कुल संख्या में, एचआईवी को छोड़कर, टीबी के सभी रूपों से अनुमानित मौतों की कुल संख्या, देश में 2020 के लिए 4.93 लाख (4.53-5.36 लाख) थी, जो 2019 के अनुमान से 13% अधिक है।
- भारत भी टीबी, एचआईवी से जुड़े टीबी, और एमडीआर/आरआर-टीबी के लिए शीर्ष उच्च बोझ वाले देशों में से एक है, जैसा कि 2021-2025 के लिए डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुमान लगाया गया है।
- बीपीएएल की विघटनकारी क्षमता को स्वीकार करते हुए, डब्ल्यूएचओ ने टीबी उपचार के लिए तेजी से संचार भी साझा किया है ताकि बीपीएएल के प्रोग्रामेटिक कार्यान्वयन की अनुमति मिल सके।

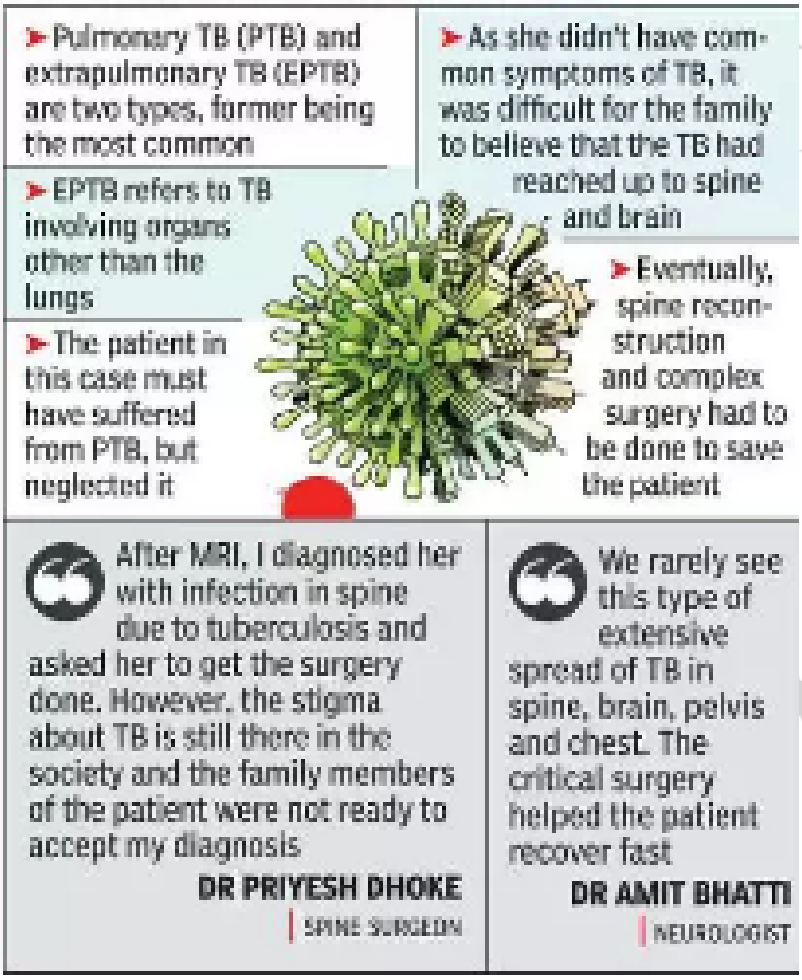

टीबी के बारे में

- क्षय रोग (टीबी) माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक जीवाणु के कारण होता है।
- बैक्टीरिया आमतौर पर फेफड़ों पर हमला करते हैं, लेकिन टीबी के बैक्टीरिया शरीर के किसी भी हिस्से जैसे कि किडनी, रीढ़ और मस्तिष्क पर हमला कर सकते हैं। टीबी बैक्टीरिया से संक्रमित हर व्यक्ति बीमार नहीं होता है।
- परिणामस्वरूप, टीबी से संबंधित दो स्थितियां मौजूद हैं: गुप्त टीबी संक्रमण (एलटीबीआई) और टीबी रोग। अगर ठीक से इलाज न किया जाए तो टीबी की बीमारी जानलेवा हो सकती है।

सेव-द-वर्ल्ड प्रयोग: नासा

खबरों में क्यों

अपनी तरह के पहले, सेव-द-वर्ल्ड प्रयोग में, नासा का डबल क्षुद्रग्रह पुनर्निर्देशन परीक्षण (DART) अंतरिक्ष यान डिमोर्फोस नामक एक छोटे चंद्रमा में दुर्घटनाग्रस्त हो जाएगा।

महत्वपूर्ण बिंदु

- अपनी तरह के पहले, सेव-द-वर्ल्ड प्रयोग में, नासा लाखों मील दूर एक छोटे से हानिरहित क्षुद्रग्रह को पकड़ने वाला है।
- डार्ट नाम का एक अंतरिक्ष यान सोमवार को क्षुद्रग्रह पर शून्य हो जाएगा, जो इसे 14,000 मील प्रति घंटे (22,500 किलोमीटर प्रति घंटे) की गति से टकराएगा।
- प्रभाव इतना पर्याप्त होना चाहिए कि क्षुद्रग्रह को उसके साथी अंतरिक्ष चट्टान के चारों ओर थोड़ी तंग कक्षा में धकेल दिया जाए - यह दर्शाता है कि यदि एक हत्यारा क्षुद्रग्रह कभी हमारे रास्ते में आता है, तो हम इसे मोड़ने का एक लड़ने का मौका देंगे।
- कैमरा और दूरबीन दुर्घटना को देखेंगे, लेकिन यह पता लगाने में महीनों लगेंगे कि क्या इसने वास्तव में कक्षा को बदल दिया है। + 325 मिलियन का ग्रह रक्षा परीक्षण डार्ट के प्रक्षेपण के अंतिम पतन के साथ शुरू हुआ।
- पृथ्वी से लगभग 7 मिलियन मील (9.6 मिलियन किलोमीटर) दूर, इस पर सांड की आंख वाला क्षुद्रग्रह डिमोर्फोस है।
- यह वास्तव में जुड़वा के लिए डिडिमोस ग्रीक नामक 2,500-फुट (780-मीटर) क्षुद्रग्रह की छोटी साइडकिक है।
- 1996 में खोजा गया, डिडिमोस इतनी तेजी से घूम रहा है कि वैज्ञानिकों का मानना है कि इसने ऐसी सामग्री को फेंक दिया जिसने अंततः एक चांदनी का निर्माण किया। डिमोर्फोस - लगभग 525 फीट (160 मीटर) के पार - एक मील (1.2 किलोमीटर) से भी कम दूरी पर अपने मूल शरीर की परिक्रमा करता है।
- नासा का कहना है कि इस बात की कोई संभावना नहीं है कि या तो क्षुद्रग्रह पृथ्वी के लिए खतरा होगा - अभी या भविष्य में। इसलिए इस जोड़ी को चुना गया।
- जॉन्स हॉपकिन्स ने डबल क्षुद्रग्रह पुनर्निर्देशन परीक्षण के लिए डार्ट शॉर्ट को विकसित करने में एक न्यूनतम दृष्टिकोण अपनाया, यह देखते हुए कि यह अनिवार्य रूप से एक पस्त करने वाला राम है और निश्चित रूप से विनाश का सामना करता है।
- इसमें एक ही उपकरण है: नेविगेट करने, लक्ष्यीकरण और क्रॉनिकिएंटिस्ट के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कैमरा आश्वस्त है कि डार्ट गलती से बड़े डिडिमोस में नहीं टूटेगा। अंतरिक्ष यान के नेविगेशन को दो क्षुद्रग्रहों के बीच अंतर करने और अंतिम 50 मिनट में छोटे को लक्षित करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- 1,260 पाउंड (570 किलोग्राम) पर एक छोटी वेंडिंग मशीन का आकार, अंतरिक्ष यान लगभग 11 बिलियन पाउंड (5 बिलियन किलोग्राम) क्षुद्रग्रह में टकराएगा।
- जब तक डार्ट चूकता है- NASA 10% से कम होने की संभावना रखता है — यह डार्ट के लिए सड़क

का अंत होगा। यदि यह दोनों अंतरिक्ष चट्टानों के पीछे चिल्लाता है तो यह दो साल में टेक 2 के लिए फिर से उनका सामना करेगा।

क्षुद्रग्रहों के लिए अन्य मिशन:

- OSIRIS-Rex (NASA) 2020 में क्षुद्रग्रह बेन्नू से एकत्र किए गए नमूनों को वितरित करने के लिए पृथ्वी पर वापस जाने के रास्ते में है।
- नासा का लुसी अंतरिक्ष यान बृहस्पति के निकट क्षुद्रग्रहों की ओर अग्रसर है।
- 2026 में, नासा एक गणना लेने वाली दूरबीन का शुभारंभ करेगा ताकि मुश्किल से खोजे जाने वाले क्षुद्रग्रहों की पहचान की जा सके जो जोखिम पैदा कर सकते हैं
- नासा का साइके अंतरिक्ष यान मंगल और बृहस्पति के बीच एक धातु-समृद्ध क्षुद्रग्रह के लिए एक नियोजित मिशन है।
- हायाबुसा-2 (जापान) एक क्षुद्रग्रह नमूना-वापसी मिशन है।
- चीन 2025 में तियानवेन-2 क्षुद्रग्रह-नमूना मिशन शुरू करेगा।

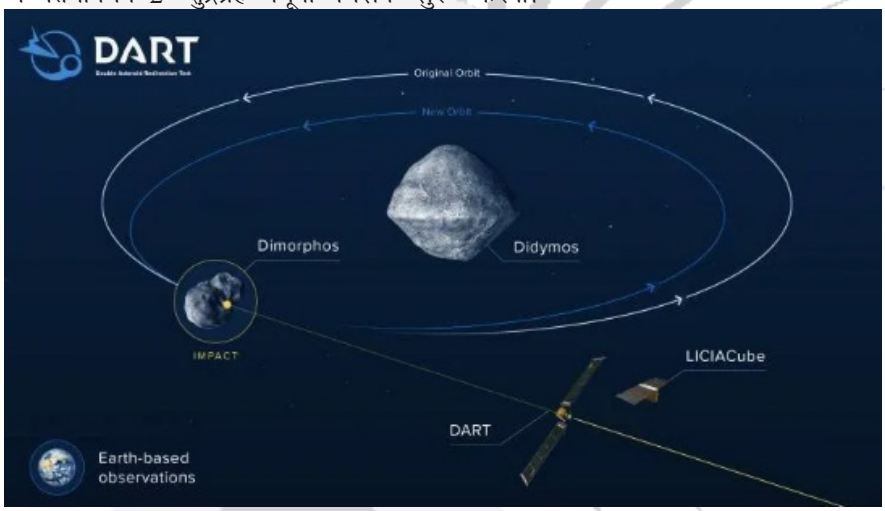

5जी

खबरों में क्यों

DGCA ने 5G रोलआउट पर जताई चिंता, दूरसंचार विभाग को लिखा पत्र।

महत्वपूर्ण बिंदु

- दुनिया भर की प्रमुख एयरलाइनों जैसे अमीरात, जापान एयरलाइंस और ऑल निप्पॉन एयरवेज ने देश में सी-बैंड 5जी मोबाइल सेवा के रोलआउट पर चिंताओं का हवाला देते हुए अमेरिका के लिए उड़ानें रद्द या फेरबदल की हैं।
- एयर इंडिया ने भी "अमेरिका में 5जी संचार की तैनाती के कारण" कम से कम 8 उड़ानें रद्द कर दी थीं, लेकिन अमेरिकी अधिकारियों से मंजूरी मिलने के बाद से परिचालन फिर से शुरू कर दिया है।

एयरलाइंस किस बारे में चिंतित हैं?

- एयरलाइंस चिंतित हैं कि सी-बैंड 5G विमान सुरक्षा प्रणालियों में हस्तक्षेप करेगा। रेडियो अल्टीमीटर, विशेष रूप से, जमीन से एक विमान की दूरी को मापने के लिए उच्च आवृत्ति रेडियो तरंगों (4.2-4.4 गीगाहर्ट्ज के बीच) का उपयोग करते हैं।

- यू.एस. में सी-बैंड 5जी स्पेक्ट्रम दूरसंचार वाहकों को 3.9–3.98 गीगाहर्ट्ज बैंड तक पहुंच प्रदान करता है, जो उस आवृत्ति के बहुत करीब है जिस पर अल्टीमीटर काम करते हैं, और संभावित रूप से हस्तक्षेप कर सकते हैं।
- रेडियो अल्टीमीटर बैरोमेट्रिक अल्टीमीटर की तुलना में अधिक सटीक होते हैं और उनका उपयोग किया जाता है जहां विमान की ऊंचाई को सटीक रूप से मापने की आवश्यकता होती है, विशेष रूप से कम ऊंचाई और कम दृश्यता संचालन के दौरान।
- दूरसंचार प्रदाताओं के लिए उच्च आवृत्ति बैंड का अर्थ है तेज सेवा। उनका तर्क है कि 5G पहले से ही अन्य देशों में तैनात किया जा चुका है और इससे विमानों के लिए कोई परेशानी नहीं हुई है।
- वेरिजोन और एटीएंडटी ने संभावित हस्तक्षेप को कम करने के लिए छह महीने के लिए लगभग 50 अमेरिकी हवाई अड्डों के लिए बफर जोन बनाने पर सहमति व्यक्त की है।
- उन्होंने रोलआउट के लिए योजना बनाने के लिए समय का उपयोग जिम्मेदारी से नहीं करने के लिए सरकार पर निराशा भी व्यक्त की है।

कौन से विमान मॉडल प्रभावित हैं?

- यह मुद्दा शुरू में बोइंग 777 को प्रभावित करता हुआ दिखाई दिया, जो एक लंबी दूरी का और चौड़ा शरीर वाला विमान है जिसका व्यापक रूप से अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए उपयोग किया जाता है। यही कारण है कि एयर इंडिया और अन्य प्रमुख एयरलाइंस, जो अपने अमेरिकी मार्गों पर इस विमान का उपयोग करती हैं, ने कुछ उड़ानों को अस्थायी रूप से रद्द कर दिया था।
- हालांकि, बोइंग और एफएए ने अब कम दृश्यता की स्थिति में भी, अमेरिका में काम करने के लिए विमान को मंजूरी दे दी है।

स्वीकृत अल्टीमीटर वाले अन्य विमान मॉडल हैं:

बोइंग 717, 737, 747, 757, 767

एमडी-10/-11

एयरबस I300, I310, I319, I320, I321, I330, I340, I350, I380

थ। का अनुमान है कि 62% अमेरिकी वाणिज्यिक बेड़े 5G हस्तक्षेप के बिना काम करेंगे। इस सूची में जिन विमानों का उल्लेख नहीं है, उन्हें अभी तक प्राधिकरण द्वारा मंजूरी नहीं दी गई है।

क्या इसका असर भारत पर भी पड़ेगा?

- 6,000 पायलटों की सदस्यता के साथ फेडरेशन ऑफ इंडियन पायलट्स (एफआईपी) ने विमान उपकरणों के साथ 5जी सिग्नल के संभावित हस्तक्षेप पर चिंता व्यक्त की।

- नागरिक उड्डयन मंत्रालय को लिखे पत्र में, DGCA और भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI) ने 5G के सुरक्षित कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करने को कहा।

Airlines warn of 5G threat

Airlines are warning that new U.S. C-Band 5G services could potentially interfere with aircraft instruments such as radio altimeters, which display the height between the runway and wheels when landing

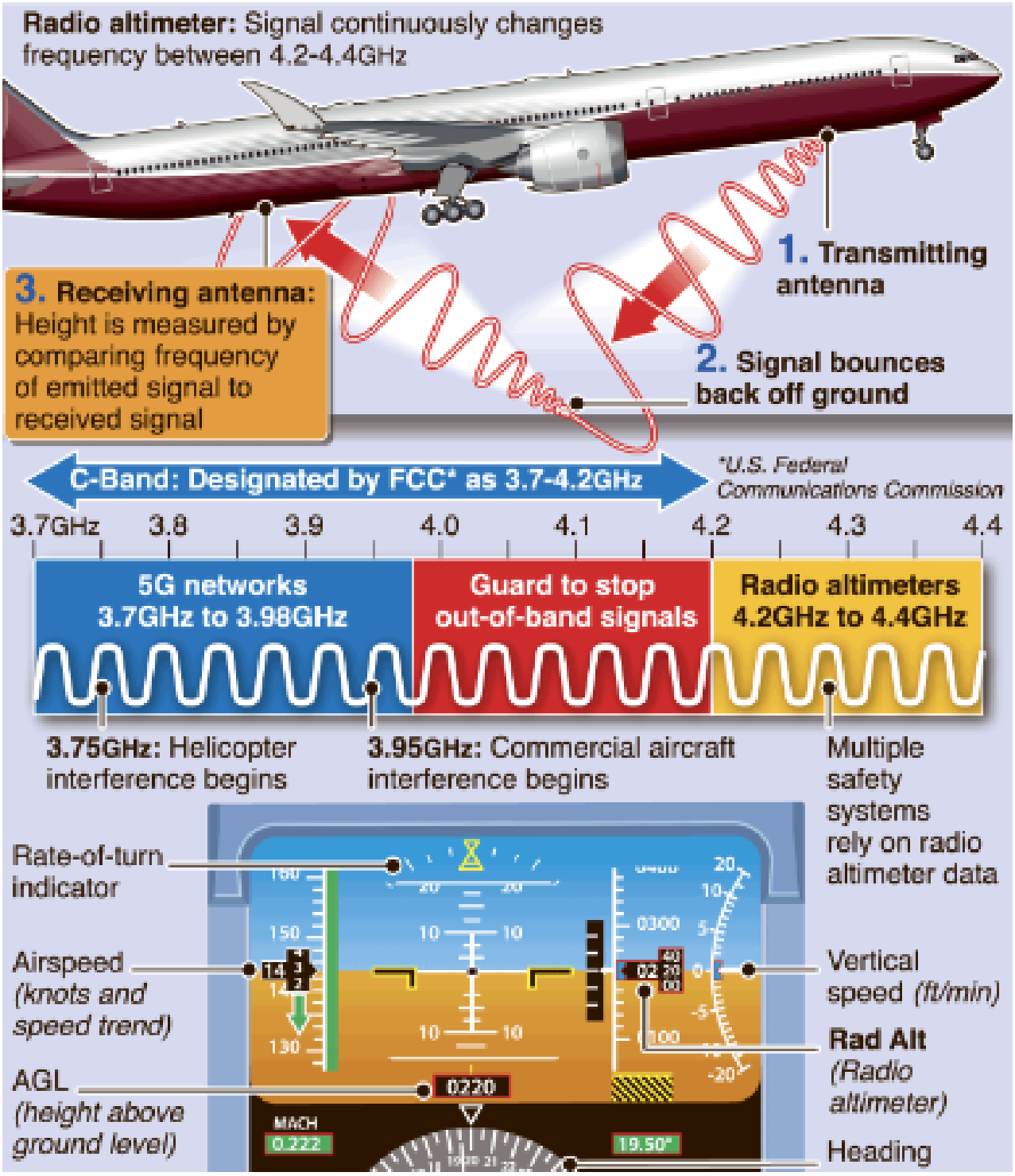

eSIM

खबरों में क्यों

सिम फिर से खबरों में आ गए हैं क्योंकि नया Apple iPhone 14 पूरी तरह से यूएस में eSIMs पर निर्भर होगा।

महत्वपूर्ण बिंदु

- iPhone 14 सीरीज के साथ, Apple ने US में बेचे जा रहे उपकरणों में एक बड़ा बदलाव किया है।
- ये फिजिकल सिम स्लॉट के बिना आते हैं और मोबाइल नेटवर्क तक पहुंचने के लिए उपयोगकर्ता को एक eSIM पर निर्भर रहना होगा।
- eSIM कोई नई बात नहीं है, ये कुछ समय से मौजूद हैं।
- न ही एप्पल अपने फोन से फिजिकल सिम स्लॉट को हटाने वाली पहली कंपनी है।
- Samsung Galañy Z Fold, और Z Flip Series में भारत में बेची जाने वाली इकाइयों सहित एक भौतिक सिम स्लॉट नहीं है और काम करने के लिए केवल एक eSIM की आवश्यकता होती है।
- Apple ने कुछ समय के लिए eSIM का समर्थन किया है (iPhone XS और इसके बाद के संस्करण के बाद से), हालांकि दोहरी eSIM समर्थन iPhone 12 श्रृंखला के साथ शुरू हुआ।
- अब तक अमेरिका में उपयोगकर्ताओं के पास एक नियमित सिम और एक eSIM का उपयोग करने का विकल्प था, लेकिन अब उन्हें एक eSIM से चिपके रहना होगा।

ई-सिम क्या है?

- यदि नाम पहले से ही इसे दूर नहीं करता है, तो एक eSIM एक एम्बेडेड सिम है, अनिवार्य रूप से एक नियमित सिम कार्ड चिप का एक ही हार्डवेयर, लेकिन अब एक पारंपरिक सिम कार्ड, एक मैप्ड में कुछ घटक भी होते हैं, जो अब एक हिस्सा हैं आपके फोन के आंतरिक अंगों की। वे भी उसी तरह कार्य करते हैं, दूरसंचार ऑपरेटरों और अन्य उपभोक्ताओं के लिए एक विशिष्ट पहचानकर्ता के रूप में कार्य करते हुए जब वे कॉल करते हैं या टेक्स्ट भेजते हैं तो आपके सटीक स्मार्टफोन तक पहुंचते हैं।

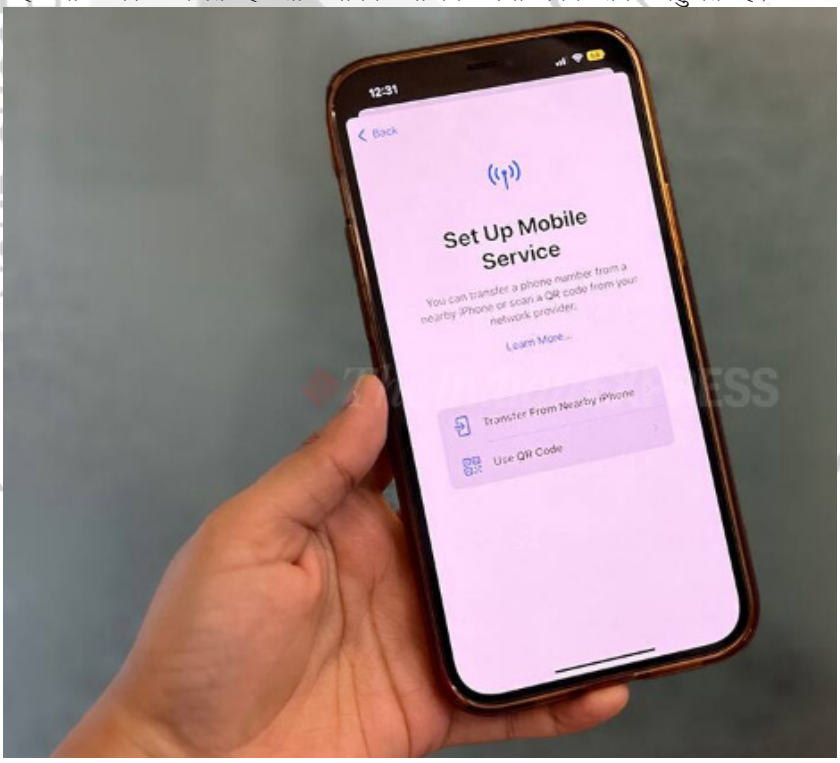

Apple eSIM: यह कैसे काम करता है?

- Apple नोट करता है कि "eSIM वाहकों द्वारा समर्थित एक उद्योग-मानक डिजिटल सिम है"।
- यह भी जोड़ता है कि eSIM अधिक लाभ प्रदान करेगा, खासकर विदेश यात्रा करते समय क्योंकि यदि आपका पचीवदम चोरी हो गया है।
- ऐसा इसलिए है क्योंकि चोर सिम को हटा नहीं सकते हैं और उस तक पहुंच नहीं सकते हैं, खासकर यदि आपका आईफोन लॉक है।
- Apple एक अन्य पेज पर यह भी नोट करता है कि यूएस में खरीदे गए मॉडलों के लिए, iPhone eSIM के साथ सक्रिय होता है।

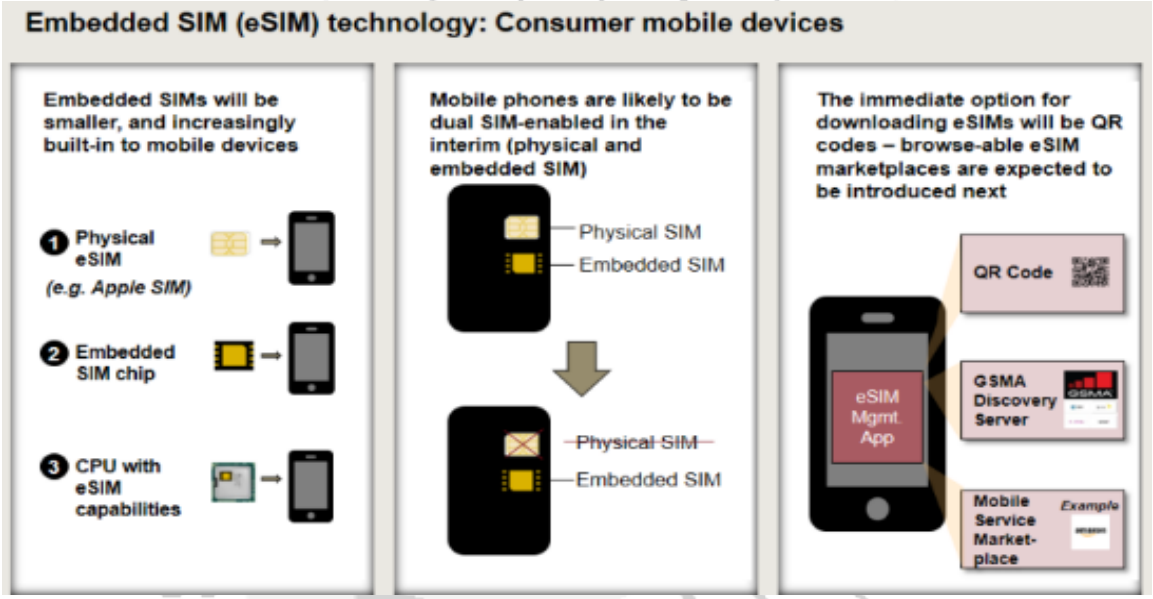

Apple eSIM: iPhone 14 सीरीज में आप कितने स्टोर कर सकते हैं?

- ग्राहक iPhone 14 सीरीज पर आठ या अधिक eSIM स्टोर कर सकते हैं। लेकिन एक उपयोगकर्ता के पास एक ही समय में समर्थित iPhone मॉडल पर दो eSIM सक्रिय हो सकते हैं। तो आप कई eSIM स्टोर कर सकते हैं लेकिन किसी भी समय इनमें से केवल दो का ही उपयोग कर सकते हैं।
- उपयोगकर्ता सेटिंग में चयनों को बदलकर सक्रिय eSIM के बीच अदला-बदली कर सकेंगे। विदेश यात्रा करते समय यह उपयोगी होगा।

Apple eSIM: आपने iPhone 14 को US में खरीदा है, लेकिन इसे भारत में उपयोग करने की योजना है। क्या यह eSIM एक मुद्दा होगा?

- अगर आपने युनाइटेड स्टेट्स में अनलॉक किया हुआ पचीवदम 14 मॉडल खरीदा है, तो यह भारत में ठीक काम करेगा।
- लेकिन आपको iPhone सेट करते समय eSIM के लिए अनुरोध करना होगा और सुनिश्चित करना होगा कि आपके पास स्कैन करने के लिए QR कोड तैयार है। यूएस से iPhone 14 सीरीज को एक्टिवेशन के लिए eSIM की जरूरत होती है।
- भारत में, श्रपव, Airtel और Vi सभी eSIM का समर्थन करते हैं ताकि आप कवर हो सकें। आपको वाहक को एक संदेश भेजने की आवश्यकता होगी जो उन्हें मैप्ड सक्रिय करने के लिए कहेगा और वे आमतौर पर एक कोड भेजते हैं जिसे नए डिवाइस के माध्यम से स्कैन करना होता है जिस पर आप eSIM का उपयोग करना चाहते हैं।

ई-सिम के फायदे

- **सुविधा:** आपके eSIM में एकाधिक सिम प्रोफाइल संग्रहीत करने की क्षमता का अर्थ यह भी है कि आप किसी सिम को बार-बार सक्रिय करने या कार्ड को बार-बार भौतिक रूप से बदलने की आवश्यकता के बिना, आसानी से प्रोफाइल के बीच स्विच कर सकते हैं।
- **सुरक्षा:** एक eSIM सिम को बाहर निकालने से रोकता है, क्योंकि बाहर निकालने और किसी अन्य डिवाइस में उपयोग करने के लिए कोई भौतिक तत्व नहीं है।

eSIM के नुकसान

- **आपात स्थिति:** यदि आपका फोन काम करना बंद कर देता है, बैटरी खत्म हो जाती है या बस गिर जाती है और स्क्रीन फट जाती है, तो आपका संचार eSIM के साथ पूरी तरह से ठप हो जाता है। इस बीच, पारंपरिक सिम को प्रभावित फोन से और दूसरे बैकअप डिवाइस या सेकेंडरी फोन में जल्दी से निकाला जा सकता है।
- **बिना मैप्ड समर्थन वाले देशों में अनुपयोगी:** आप उस देश में मैप्ड फोन का उपयोग नहीं कर सकते जहां दूरसंचार ऑपरेटर अभी तक तकनीक का समर्थन नहीं करते हैं।
- **समर्थन केवल प्रीमियम फोन में उपलब्ध है:** भारत में, eSIM समर्थन वर्तमान में Apple iPhones, Google Piñel श्रृंखला और Samsung Galaxy S-सीरीज फोन, Samsung Galaxy Z सीरीज जैसे अधिक महंगे उपकरणों पर उपलब्ध है, ये सभी उपयोगकर्ता के लिए औसत के लिए महंगे हो सकते हैं। एक मैप्ड पर स्विच करने से, उपयोगकर्ता खुद को तकनीक का समर्थन करने वाले उपकरणों के बहुत छोटे चयन से चुनने के लिए प्रतिबंधित कर देंगे।
- **दूरसंचार कंपनियों का अधिक नियंत्रण होता है:** एक eSIM आपको अपना सिम कार्ड प्राप्त करने के लिए दूरसंचार ऑपरेटर के स्टोर की प्रारंभिक यात्रा से बचा सकता है, लेकिन जब भी आप अपना फोन स्विच करना चाहते हैं तो आप अपने ऑपरेटर पर भरोसा करने पर भरोसा कर सकते हैं।

हाइब्रिड प्रणोदन प्रणाली

खबरों में क्यों

इसरो ने सफलतापूर्वक हाइब्रिड मोटर का परीक्षण किया, रॉकेट के लिए नई प्रणोदन प्रणाली पर नजर।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एक हाइब्रिड मोटर का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है, जो आगामी प्रक्षेपण वाहनों के लिए एक नई प्रणोदन प्रणाली का मार्ग प्रशस्त करेगी।
- परीक्षण तरल प्रणोदन प्रणाली केंद्र (एलपीएससी) द्वारा समर्थित तमिलनाडु के महेंद्रगिरि में इसरो प्रणोदन परिसर (आईपीआरसी) में आयोजित किया गया था।
- तरल पदार्थों का उपयोग थ्रॉटलिंग में मदद करता है और LOX की प्रवाह दर पर नियंत्रण फिर से शुरू करने की क्षमता को सक्षम बनाता है।
- जबकि HTPB और LOX दोनों हरे हैं, LOX को संभालना सुरक्षित है।
- तमिलनाडु के महेंद्रगिरी में इसरो प्रोपल्शन कॉम्प्लेक्स (आईपीआरसी) में मंगलवार को परीक्षण किया गया 30 केएन हाइब्रिड मोटर स्केलेबल और स्टैकेबल है।
- परीक्षण को इसरो के तरल प्रणोदन प्रणाली केंद्र (एलपीएससी) द्वारा समर्थित किया गया था। मोटर ने हाइड्रॉक्सिल-टर्मिनेटेड पॉलीब्यूटाडाइन (HTPB) को ईंधन के रूप में और तरल ऑक्सीजन (LOX) को ऑक्सीडाइजर के रूप में इस्तेमाल किया।
- ठोस-ठोस या तरल-तरल संयोजनों के विपरीत, एक हाइब्रिड मोटर ठोस ईंधन और तरल ऑक्सीकारक का

उपयोग करती है।

- ग्राउंड-आधारित परीक्षण में, उड़ान समकक्ष 30 kN हाइब्रिड मोटर ने हाइड्रॉक्सिल-टर्मिनेटेड पॉलीब्यूटाडाइन (HTPB)-आधारित एल्युमिनाइज्ड ठोस ईंधन और तरल ऑक्सीजन (LOX) को ऑक्सीडाइजर के रूप में इस्तेमाल किया। परीक्षण 15 सेकंड के लिए 300 मिमी की ध्वनि वाले रॉकेट मोटर पर किया गया था।
- तरल पदार्थों का उपयोग थ्रॉटलिंग की सुविधा देता है, और स्व की प्रवाह दर पर नियंत्रण फिर से शुरू करने की क्षमता को सक्षम बनाता है।
- रॉकेट में प्रयुक्त पारंपरिक एचटीपीबी-आधारित ठोस प्रणोदक मोटरें अमोनियम परक्लोरेट को आक्सीकारक के रूप में उपयोग करती हैं। पारंपरिक सॉलिड मोटर्स, हाइब्रिड तकनीक मोटर पर रीस्टार्टिंग और थ्रॉटलिंग क्षमताओं की अनुमति देती है।

- तरल पदार्थों के उपयोग से LOX की प्रवाह दर पर थ्रॉटलिंग और नियंत्रण की सुविधा होती है।
- प्रौद्योगिकी प्रदर्शन हाइब्रिड प्रणोदन-आधारित परिज्ञापी रॉकेटों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है और स्पेंड-स्टेज रिकवरी के लिए ऊर्ध्वाधर लैंडिंग प्रयोगों के लिए एक रोमांचक मंच है।
- प्रौद्योगिकी को बेहतर बनाने के हिस्से के रूप में, इसरो भविष्य में इसे एक ध्वनि रॉकेट प्रक्षेपण पर आजमाएगा।

कागज का उपयोग कर संवेदन दबाव

खबरों में क्यों

बेंगलुरु स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) के शोधकर्ताओं की एक टीम ने अब दबाव सेंसर तैयार किए हैं जो कागज का उपयोग माध्यम के रूप में करते हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- कई औद्योगिक, मोटर वाहन और स्वास्थ्य देखभाल अनुप्रयोग दबाव के सटीक और सटीक माप पर निर्भर करते हैं। इसके लिए प्रेशर सेंसर का इस्तेमाल किया जाता है। वे भौतिक दबाव का पता लगाते हैं और इसे एक विद्युत संकेत में परिवर्तित करते हैं जो परिमाण के संकेतक के रूप में प्रदर्शित होता है।
- कई अनुप्रयोगों के लिए लचीले और पहनने योग्य दबाव सेंसर की आवश्यकता होती है। वे आम तौर पर पेट्रोलियम आधारित पॉलिमर का उपयोग करके गढ़े जाते हैं। लेकिन, ये नॉन-डिग्रेडेबल हैं और इनके इस्तेमाल से उत्पन्न होने वाला ठोस कचरा पर्यावरण के लिए हानिकारक है।
- इस समस्या से बचने के लिए, बेंगलुरु स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) के शोधकर्ताओं की एक टीम ने अब दबाव सेंसर तैयार किए हैं जो कागज को माध्यम के रूप में उपयोग करते हैं।

- किसी भी सेंसर में संवेदनशीलता और गतिशील रेंज के बीच हमेशा समझौता होता है। नया सेंसर इस समस्या को भी दूर करता है। वैज्ञानिकों के अनुसार, यह अत्यधिक संवेदनशील है और केवल एक मिलीसेकंड के प्रतिक्रिया समय के साथ दबावों की एक विस्तृत श्रृंखला (0–120 kPa) का भी पता लगा सकता है।
- सेंसर सादे और नालीदार सेलूलोज पेपर से बना होता है जो रासायनिक टिन–मोनोसल्फाइड (एसएनएस) के साथ लेपित होता है, जो एक बहु–स्तरित वास्तुकला बनाने के लिए वैकल्पिक रूप से ढेर होता है। टिन–मोनोसल्फाइड एक अर्धचालक है जो विशिष्ट परिस्थितियों में बिजली का संचालन करता है।

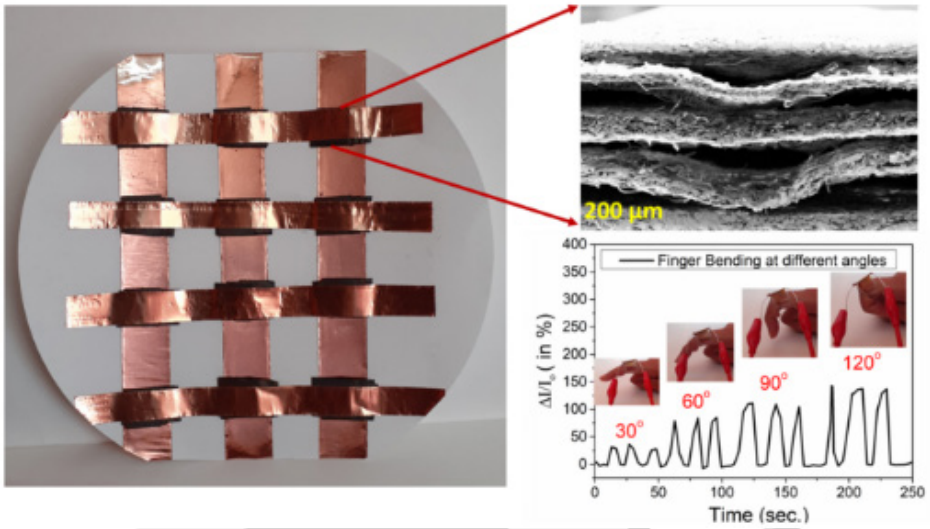

- जब सेंसर की सतह पर दबाव डाला जाता है, तो कागज की परतों के बीच हवा का अंतराल कम हो जाता है। यह इन परतों के बीच संपर्क क्षेत्र को बढ़ाता है, जिससे विद्युत चालकता में वृद्धि होती है।
- दाब छोड़ने पर, वायु अंतराल फिर से बढ़ जाता है, जिससे विद्युत चालन कम हो जाता है। विद्युत चालकता का यह मॉड्यूलेशन नए सेंसर के संवेदन तंत्र को संचालित करता है।
- कागज अपने आप में एक कुचालक है। कागज को प्रवाहकीय गुण देने के लिए एक उपयुक्त 3D उपकरण संरचना और सामग्री का चयन करना प्रमुख चुनौती थी।
- जब सेंसर की सतह पर दबाव डाला जाता है, तो कागज की परतों के बीच हवा का अंतराल कम हो जाता है, जिससे इन परतों के बीच संपर्क क्षेत्र बढ़ जाता है।
- उच्च संपर्क क्षेत्र बेहतर विद्युत चालकता की ओर ले जाता है। दबाव छोड़ने पर, वायु अंतराल फिर से बढ़ जाता है, जिससे विद्युत चालन कम हो जाता है। विद्युत चालकता का यह मॉड्यूलेशन पेपर सेंसर के सेंसिंग मैकेनिज्म को संचालित करता है।
- अनुसंधान दल ने अपने उपकरण की व्यवहार्यता का परीक्षण करने के लिए कई प्रयोग किए। चबाने में शामिल गति की जांच के लिए उन्होंने इसे एक मानव गाल पर लगाया।
- फिर उन्होंने मांसपेशियों के संकुचन की निगरानी करने के लिए और उंगलियों के आसपास अपनी टैपिंग को ट्रैक करने के लिए इसे एक हाथ से बांध दिया। टीम ने अपने सेंसर का उपयोग करके एक संख्यात्मक, फोल्डेबल कीपैड भी डिजाइन किया है।
- सेंसर विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में एक लचीले और पहनने योग्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण के रूप में विकसित होने का वादा दिखाता है। उदाहरण के लिए, अनुसंधान दल ने चबाने में शामिल गति की जांच करने के लिए इसे एक मानव गाल पर लगाया, मांसपेशियों के संकुचन की निगरानी के लिए और उंगलियों के चारों ओर अपने टैपिंग को ट्रैक करने के लिए इसे एक हाथ से बांध दिया।
- टीम ने डिवाइस की उपयोगिता को प्रदर्शित करने के लिए इन–हाउस पेपर–आधारित प्रेशर सेंसर का उपयोग करके निर्मित एक संख्यात्मक, फोल्डेबल कीपैड भी डिजाइन किया।

RAO'S ACADEMY

CRISPR

खबरों में क्यों

जीन-एडिटिंग तकनीक जिसने दवा, विकास और कृषि में नवाचारों को जन्म दिया है, ने नवाचार के 10 साल पूरे कर लिए हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- पिछले ढाई वर्षों में जब कोरोना वायरस महामारी ने दुनिया को तहस-नहस कर दिया और नई बीमारियों के प्रति मनुष्यों की कमजोरियों को उजागर कर दिया, वैज्ञानिकों ने कुछ सबसे कठिन स्वास्थ्य के लिए स्थायी इलाज के लिए एक रोमांचक हालिया तकनीक का उपयोग करने में महत्वपूर्ण प्रगति के साथ आगे बढ़ना जारी रखा।
- विकसित होने के बाद से 10 वर्षों में, CRISPR नामक जीनोम-संपादन तकनीक ने लगभग असीमित क्षमता प्रदान करना शुरू कर दिया है, वैज्ञानिकों का कहना है कि इसे मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।
- प्रौद्योगिकी जीवित जीवों के आनुवंशिक कोड को 'संपादित' करने के लिए एक सरल लेकिन उल्लेखनीय रूप से कुशल तरीके को सक्षम करती है, इस प्रकार बीमारियों को ठीक करने, शारीरिक विकृतियों को रोकने, या यहां तक कि कॉस्मेटिक संवर्द्धन का उत्पादन करने के लिए आनुवंशिक जानकारी को 'सुधार' करने की संभावना को खोलती है।
- पिछले तीन वर्षों में, विशेष रूप से, थैलेसीमिया या सिकल सेल एनीमिया जैसी बीमारियों के लिए CRISPR का उपयोग करने वाले कई चिकित्सीय उपायों का नैदानिक परीक्षण किया गया है, मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में, और प्रारंभिक परिणाम निर्दोष रहे हैं।
- पिछले साल, भारत सरकार ने सिकल सेल एनीमिया को ठीक करने के लिए इस तकनीक को विकसित करने के लिए पांच साल की परियोजना को मंजूरी दी थी, जो मुख्य रूप से देश की आदिवासी आबादी को प्रभावित करती है।
- दुनिया भर में सैकड़ों शोध समूह और कंपनियां CRISPR का उपयोग करके विशिष्ट समाधानों की एक श्रृंखला विकसित करने के लिए काम कर रही हैं।
- प्रौद्योगिकी के विकासकर्ता, जेनिफर डौडना और इमैनुएल चारपेंटियर ने 2020 में रसायन विज्ञान के लिए नोबेल पुरस्कार जीता, जो एक सफलता के बाद नोबेल समिति द्वारा प्रदान की गई सबसे तेज मान्यता में से एक है।

जीनोम एडिटिंग क्या है?

- जीनोम संपादन या जीन संपादन प्रौद्योगिकियों का एक समूह है जो वैज्ञानिकों को किसी जीव के डीएनए को बदलने की क्षमता प्रदान करता है।
- इन प्रौद्योगिकियों के माध्यम से, जीनोम में किसी विशेष स्थान पर आनुवंशिक सामग्री को जोड़ा, हटाया या बदला जा सकता है।
- आनुवंशिक संपादन के कई तरीकों में से CRISPR-CAS9 उनमें से एक है।
- CRISPR-Cas9 प्रणाली ने वैज्ञानिक समुदाय में बहुत चर्चा उत्पन्न की है क्योंकि यह डीएनए संपादन की पिछली तकनीकों की तुलना में तेज, सस्ता, अधिक सटीक और अधिक कुशल है और इसमें संभावित अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला है।

CRISPR प्रौद्योगिकी के बारे में

- CRISPR क्लस्टर्ड रेगुलर इंटरस्पेस्ड शॉर्ट पैलिंड्रोमिक रिपीट के लिए संक्षिप्त है, जो बैक्टीरिया में पाए जाने वाले डीएनए के क्लस्टर और दोहराव वाले अनुक्रमों का एक संदर्भ है, जिसका कुछ वायरल रोगों से लड़ने के लिए प्राकृतिक तंत्र इस जीन-एडिटिंग टूल में दोहराया गया है।
- किसी जीव में विशिष्ट गुणों को खत्म करने या पेश करने के लिए जीन अनुक्रमों का संपादन, या संशोधन,

कोई नया विकास नहीं है।

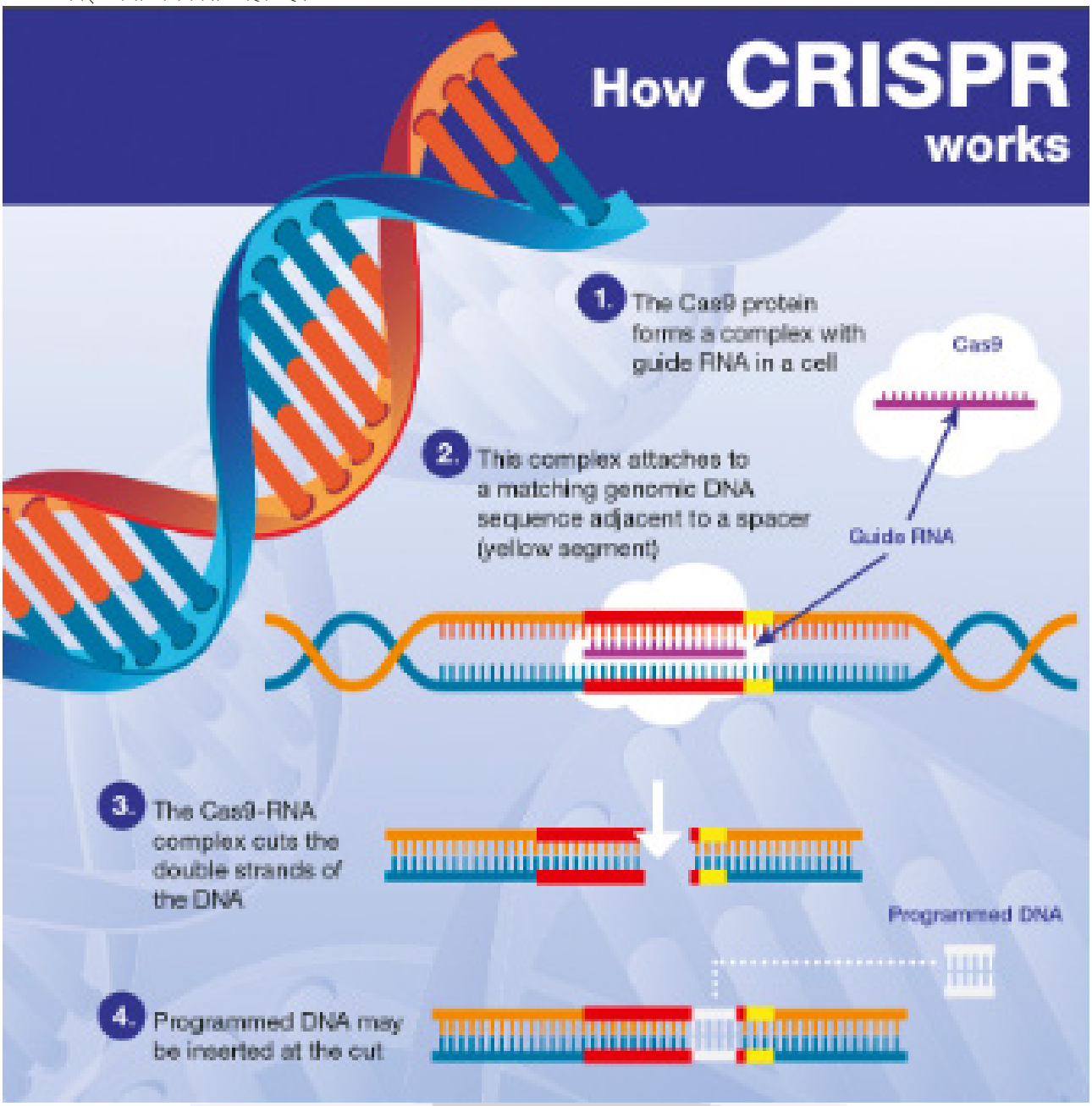

- यह कई दशकों से हो रहा है, विशेष रूप से कृषि के क्षेत्र में, जहां विशिष्ट वांछनीय लक्षणों के साथ आनुवंशिक रूप से संशोधित रूप नियमित रूप से विकसित किए जाते हैं।
- इसमें आमतौर पर एक नए जीन का परिचय, या एक मौजूदा जीन का दमन शामिल होता है, जिसे आनुवंशिक इंजीनियरिंग के रूप में वर्णित प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है।
- सीआरआईएसपीआर तकनीक अलग है। यह सरल है, और अभी भी अधिक सटीक है – और इसमें बाहर से किसी भी नए जीन की शुरूआत शामिल नहीं है।
- इसके तंत्र की तुलना अक्सर सामान्य कंप्यूटर प्रोग्रामों में 'कट-कॉपी-पेस्ट', या 'ढूंढें-बदलें' कार्यों से की जाती है।
- डीएनए अनुक्रम में एक खराब खिंचाव, जो बीमारी या विकार का कारण है, स्थित है, काट दिया गया है, और हटा दिया गया है – और फिर एक 'सही' अनुक्रम के साथ बदल दिया गया है।

RAUS ACADEMY

- और इसे प्राप्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण यांत्रिक नहीं हैं, बल्कि जैव रासायनिक - विशिष्ट प्रोटीन और RNA अणु हैं।
- तकनीक कुछ बैक्टीरिया में एक प्राकृतिक रक्षा तंत्र की नकल करती है जो खुद को वायरस के हमलों से बचाने के लिए एक समान विधि का उपयोग करता है
- CRISPR-Cas9 प्रणाली में दो प्रमुख अणु होते हैं जो डीएनए में परिवर्तन उत्परिवर्तन का परिचय देते हैं।
- Cas9- एक एंजाइम जो 'आणविक कैंची' की एक जोड़ी के रूप में कार्य करता है जो जीनोम में एक विशिष्ट स्थान पर डीएनए के दो स्ट्रैंड को काट सकता है।
- गाइड आरएनए (GRNA) - GRNA को DNA में एक विशिष्ट अनुक्रम को खोजने और बांधने के लिए डिजाइन किया गया है।
- किए गए संपादन की प्रकृति के आधार पर, प्रक्रिया को तीन श्रेणियों में बांटा गया है - एसडीएन 1, एसडीएन 2 और एसडीएन-3 ।
- SDN1 परपोषी जीनोम के डीएनए में विदेशी आनुवंशिक सामग्री को शामिल किए बिना छोटे सम्मिलन/विलोपन के माध्यम से परिवर्तन प्रस्तुत करता है।
- एसडीएन 2 के मामले में, संपादन में विशिष्ट परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए एक छोटे डीएनए टेम्पलेट का उपयोग करना शामिल है।
- इन दोनों प्रक्रियाओं में विदेशी आनुवंशिक सामग्री शामिल नहीं है और अंतिम परिणाम पारंपरिक रूप से नस्ल वाली फसल की किस्मों से अलग नहीं है।
- एसडीएन-3 प्रक्रिया में बड़े डीएनए तत्व या विदेशी मूल के पूर्ण लंबाई वाले जीन शामिल होते हैं जो इसे आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (जीएमओ) के विकास के समान बनाता है।

कार्यवाई में प्रौद्योगिकी

- पहला काम जीन के उस विशेष क्रम की पहचान करना है जो परेशानी का कारण है।
- एक बार यह हो जाने के बाद, डीएनए स्ट्रैंड पर इस क्रम का पता लगाने के लिए एक आरएनए अणु को प्रोग्राम किया जाता है, ठीक उसी तरह जैसे कंप्यूटर पर 'ढूंढें' या 'खोज' कार्य करता है।
- इसके बाद, कास नामक एक विशेष प्रोटीन, जिसे अक्सर 'जेनेटिक कैंची' के रूप में वर्णित किया जाता है, का उपयोग विशिष्ट बिंदुओं पर डीएनए स्ट्रैंड को तोड़ने और खराब अनुक्रम को हटाने के लिए किया जाता है।
- एक डीएनए स्ट्रैंड, जब टूट जाता है, तो फिर से जुड़ने और खुद को ठीक करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है।
- लेकिन अगर ऑटो-मरम्मत तंत्र को जारी रखने की अनुमति दी जाती है, तो खराब क्रम फिर से बढ़ सकता है।
- इसलिए, वैज्ञानिक आनुवंशिक कोड के सही अनुक्रम की आपूर्ति करके ऑटो-मरम्मत प्रक्रिया के दौरान हस्तक्षेप करते हैं, जो टूटे हुए डीएनए स्ट्रैंड से जुड़ जाता है।
- यह एक लंबे जिपर के क्षतिग्रस्त हिस्से को काटने और इसे सामान्य रूप से काम करने वाले हिस्से से बदलने जैसा है।
- पूरी प्रक्रिया प्रोग्राम करने योग्य है, और इसमें उल्लेखनीय दक्षता है, हालांकि त्रुटि की संभावना को पूरी तरह से खारिज नहीं किया जाता है।

RAO'S ACADEMY

CRISPR प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग

- स्वास्थ्य- बड़ी संख्या में रोग और विकार आनुवंशिक प्रकृति के होते हैं, जो कि जीन में अवांछित परिवर्तन या उत्परिवर्तन के कारण होते हैं।
- इनमें सामान्य रक्त विकार जैसे सिकल सेल एनीमिया, आंखों के रोग जिनमें रंगांधता, कई प्रकार के कैंसर, मधुमेह, एचआईवी और यकृत और हृदय रोग शामिल हैं।
- इनमें से कई वंशानुगत भी हैं। यह तकनीक इनमें से कई बीमारियों का स्थायी इलाज खोजने की संभावना

को खोलती है।

- भारत में सीएसआईआर के इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी ने सिकल सेल एनीमिया के लिए स्वदेशी रूप से एक सीआरआईएसपीआर-आधारित चिकित्सीय समाधान विकसित किया है, जिसे अब नैदानिक परीक्षणों के लिए तैयार किया जा रहा है।
- जीन असामान्यताएं - यह जीन अनुक्रमों में असामान्यताओं से उत्पन्न होने वाली विकृतियों के लिए भी सही है, जैसे कि रुका हुआ या धीमा विकास, भाषण विकार, या खड़े होने या चलने में असमर्थता।
- इसके अलावा, सीआरआईएसपीआर सिर्फ एक मंच है; जीन अनुक्रमों को संपादित करने के लिए एक उपकरण। क्या संपादित किया जाना है और विभिन्न मामलों में कहां भिन्न है।
- इसलिए, हर बीमारी या विकार के लिए एक विशिष्ट समाधान तैयार करने की आवश्यकता है जिसे ठीक किया जाना है।
- समाधान विशिष्ट जनसंख्या या नस्लीय समूहों के लिए विशिष्ट हो सकते हैं, क्योंकि ये भी जीन पर निर्भर होते हैं।
- CRISPR-आधारित चिकित्सीय समाधान गोली या दवा के रूप में नहीं हैं।
- इसके बजाय, प्रत्येक रोगी की कुछ कोशिकाओं को निकाला जाता है, जीन को प्रयोगशाला में संपादित किया जाता है, और ठीक किए गए जीन को फिर से रोगियों में इंजेक्ट किया जाता है।
- ये मुख्य रूप से रक्त विकार, मधुमेह, विरासत में मिले नेत्र रोग और कुछ प्रकार के कैंसर से संबंधित हैं।
- सिकल सेल एनीमिया से पीड़ित विक्टोरिया ग्रे के मामले को व्यापक रूप से ट्रैक किया गया है, जो रोगियों के पहले बैच में थे, जिनका इलाज CRISPR-आधारित समाधानों का उपयोग करके किया गया था।
- धूसर रंग को अब रोग ठीक करने वाला माना जाता है। परीक्षणों के लिए उनके साथ स्वेच्छा से काम करने वाले कई अन्य लोगों ने भी उपचार के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है।
- कृषि-जापान ने पहले ही टमाटर की एक किस्म की व्यावसायिक खेती को मंजूरी दे दी है जिसे CRISPR-आधारित हस्तक्षेप का उपयोग करके बेहतर बनाया गया है।
- प्रदर्शन-जैविक या रासायनिक युद्ध के खिलाफ सैनिकों की सहनशीलता बढ़ाना। इस तकनीक में मानव प्रदर्शन अनुकूलन को प्रभावित करने की क्षमता है।
- मानव रोगों की नकल करने के लिए पशु मॉडल बनाएं और जीन को उत्परिवर्तित या मौन करके रोग के विकास को समझें।
- **वाणिज्यिक:** CRISPR का उपयोग पहली बार व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए किया गया था ताकि पनीर और दही के उत्पादन में इस्तेमाल होने वाले जीवाणु संस्कृतियों को वायरल संक्रमणों के लिए प्रतिरोधी बनाया जा सके।

इस तकनीक के फायदे

- **तेज और सस्ता**- यह डीएनए संपादन की पिछली तकनीकों की तुलना में तेज और सस्ता है।
- **उच्च सटीकता**- आनुवंशिक इंजीनियरिंग ने वैज्ञानिकों को विशेषता विकास पर अधिक नियंत्रण रखने की अनुमति देकर कार्य को और अधिक सटीक बना दिया है।
- **जीएमओ की तुलना में व्यवहार्य**- CRISPR तकनीक आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों GMO) की आलोचनाओं के खिलाफ व्यवहार्य साबित होती है।

इस तकनीक से जुड़े मुद्दे

- दुरुपयोग-किसी व्यक्ति में नाटकीय परिवर्तन लाने के लिए CRISPR की शक्ति के कारण, मुख्य विकासकर्ता डौडना सहित वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी के दुरुपयोग की संभावना के बारे में चेतावनी देते रहे हैं।
- डिजाइनर बेबी-2018 में, एक चीनी शोधकर्ता ने खुलासा किया कि उसने एचआईवी के संक्रमण को रोकने के लिए एक मानव भ्रूण के जीन को बदल दिया था।

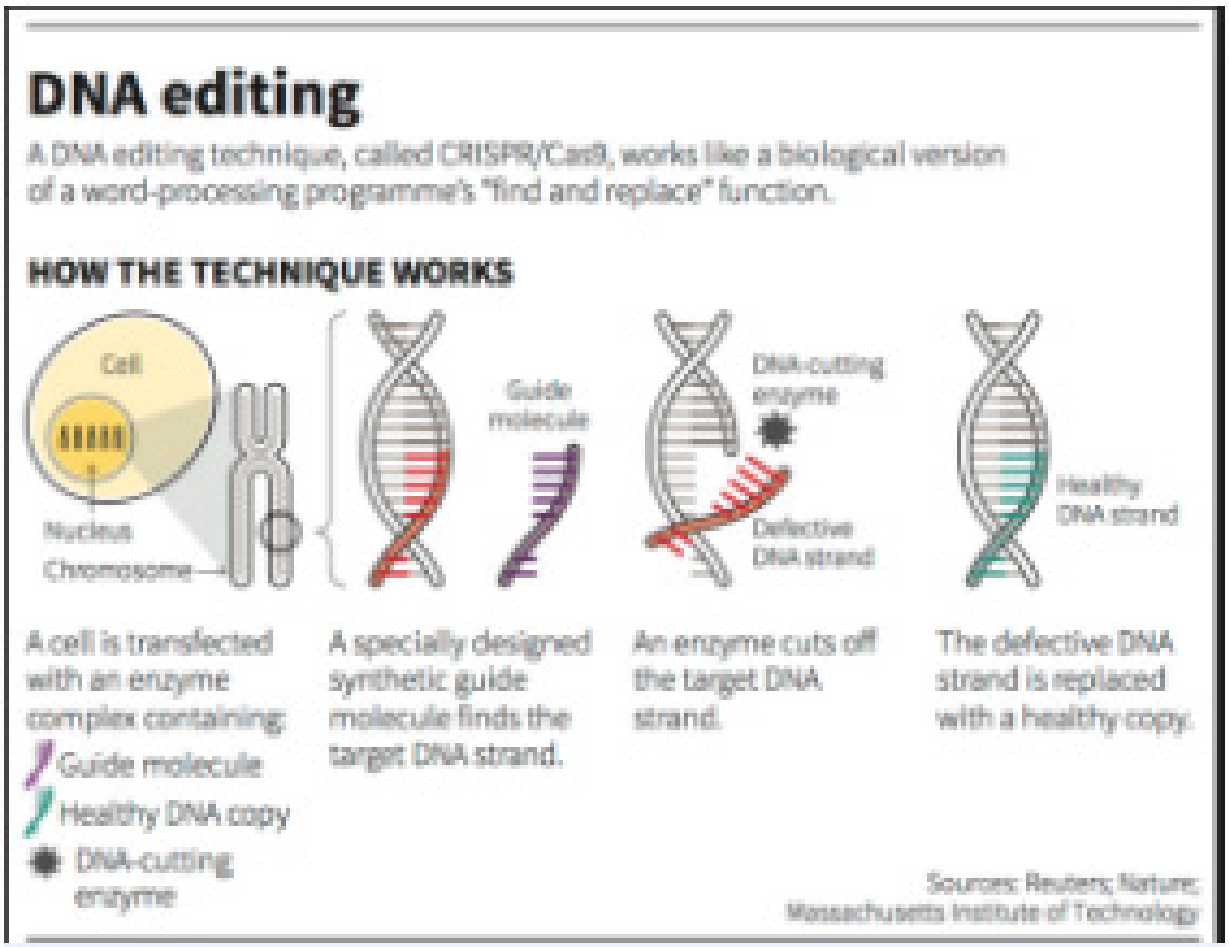

- 'डिजाइनर बेबी' बनाने का यह पहला प्रलेखित मामला था, और इसने वैज्ञानिक समुदाय में व्यापक चिंता पैदा की।
- विशेष लक्षण प्राप्त करने के लिए निवारक हस्तक्षेप कुछ ऐसा नहीं है जिसके लिए वैज्ञानिक वर्तमान में प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चाहते हैं।
- इसके अलावा, क्योंकि भ्रूण में ही परिवर्तन किए गए थे, नए अधिग्रहीत लक्षणों के आने वाली पीढ़ियों को पारित होने की संभावना थी।
- हालांकि तकनीक काफी सटीक है, यह 100 प्रतिशत सटीक नहीं है, और कुछ त्रुटियों को भी प्रेरित कर सकती है, जिससे अन्य जीन में परिवर्तन हो सकता है।
- इसके उत्तरोत्तर पीढ़ियों को विरासत में मिलने की संभावना है।
- प्रभाव विविधता- जानवरों की सभी प्रजातियों में विविधता पृथ्वी पर विकास की कुंजी है। आनुवंशिक रूप से इंजीनियरिंग हमारी प्रजातियों का हमारी आनुवंशिक विविधता पर हानिकारक प्रभाव पड़ेगा- जैसा कि क्लोनिंग जैसी किसी चीज में होता है।

RAO'S ACADEMY

आगे बढ़ने का रास्ता

- अनुसंधान और भूख, कुपोषण, बीमारियों आदि में निवेश।
- प्रौद्योगिकी के साथ काम करने वाले वैज्ञानिक के लिए एक आचार संहिता और आचरण का विकास करना ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि इसका उपयोग जिम्मेदारी से और सही भावना से किया जा रहा है।
- भारत को इसके संभावित दुरुपयोग को रोकने के लिए एक मजबूत कानूनी और नियामक ढांचा विकसित करना चाहिए।

भारत की क्वांटम छलांग

खबरों में क्यों

IIT मद्रास आईबीएम ग्लोबल नेटवर्क के साथ गठजोड़ करने वाला पहला संस्थान बन गया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- आईबीएम ने घोषणा की कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास (आईआईटी-मद्रास) भारत में क्वांटम कंप्यूटिंग कौशल विकास और अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए आईबीएम क्वांटम नेटवर्क में शामिल होने वाला पहला भारतीय संस्थान बन गया है।
- आईबीएम क्वांटम नेटवर्क के एक सदस्य के रूप में, आईआईटी मद्रास को आईबीएम के सबसे उन्नत क्वांटम कंप्यूटिंग सिस्टम और आईबीएम की क्वांटम विशेषज्ञता के लिए क्लाउड-आधारित पहुंच प्राप्त होगी ताकि व्यावहारिक अनुप्रयोगों का पता लगाया जा सके और व्यापार और समाज के लिए इस तकनीक के व्यापक लाभों का एहसास हो सके।
- आईआईटी मद्रास सेंटर फॉर क्वांटम इंफॉर्मेशन, कम्युनिकेशन एंड कंप्यूटिंग (CQuICC) क्वांटम मशीन लर्निंग, क्वांटम ऑप्टिमाइजेशन और वित्त में एप्लिकेशन रिसर्च जैसे अनुसंधान क्षेत्रों में कोर एल्गोरिदम को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करेगा।
- आईआईटी मद्रास के शोधकर्ता आईबीएम रिसर्च इंडिया के समर्थन से क्वांटम कंप्यूटिंग के अनुप्रयोग में अनुसंधान की प्रगति का नेतृत्व ऐसे डोमेन में करेंगे जो भारत के लिए प्रासंगिक हैं।
- यह घोषणा क्वांटम प्रौद्योगिकियों और अनुप्रयोगों पर अपने राष्ट्रीय मिशन (एनएम-क्यूटीए) को सशक्त बनाने के लिए भारत के नए प्रयासों में योगदान देने के लिए भी तैयार है।

क्वांटम विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में

- क्वांटम विज्ञान और प्रौद्योगिकी का क्षेत्र आईआईटी मद्रास में अनुसंधान का एक अत्याधुनिक क्षेत्र है।
- क्वांटम सूचना, संचार और कंप्यूटिंग केंद्र (CQuICC) में, IIT मद्रास सुरक्षित क्वांटम संचार, क्वांटम सेंसिंग और मेट्रोलॉजी, साथ ही क्वांटम कंप्यूटिंग और क्वांटम सूचना सिद्धांत सहित क्वांटम प्रौद्योगिकियों के विभिन्न पहलुओं को विकसित करने पर केंद्रित है।
- सहयोग से भारत में अनुसंधान में तेजी लाने, क्वांटम को वास्तविक बनाने और एक जीवंत क्वांटम पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए उद्योग भागीदारों के साथ काम करने के नए रास्ते खुलेंगे।
- आईबीएम और आईआईटी मद्रास का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसे शिक्षा और अनुसंधान क्षेत्रों में एक लंबा जुड़ाव है।
- पिछले साल, आईआईटी मद्रास आईबीएम के क्वांटम शिक्षा कार्यक्रम में शामिल हो गया ताकि शिक्षा और अनुसंधान उद्देश्यों के लिए अपने छात्रों और शिक्षकों को आईबीएम क्वांटम लर्निंग रिसोर्सेज, क्वांटम टूल्स और क्वांटम सिस्टम तक पहुंच प्रदान की जा सके।
- आईआईटी मद्रास वर्तमान में भौतिकी और कंप्यूटर इंजीनियरिंग के छात्रों के लिए क्वांटम कंप्यूटिंग पर दो उन्नत अंतर-अनुशासनात्मक पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

भविष्य की चुनौतियों का समाधान

- जबकि पारंपरिक कंप्यूटर बिट्स में 1 या 0 के रूप में जानकारी संग्रहीत करते हैं, क्वांटम कंप्यूटर डेटा को क्वैबिट में या तो 1, 0 या दोनों के रूप में एक साथ संग्रहीत करते हैं, जो इसे किसी भी शास्त्रीय कंप्यूटर की तुलना में लाखों गुना तेज बनाता है। यह वही है जो शोधकर्ताओं के लिए कई गणितीय गणनाओं और अनुकूलन मुद्दों को हल करने के लिए दरवाजे खोलता है।
- चाहे वह दवा की खोज हो, ईवी के लिए सामग्री की तलाश हो, स्थिरता या जलवायु परिवर्तन के मुद्दे हों,

या केवल व्यावसायिक दक्षता में सुधार हो, क्वांटम कंप्यूटर कई उभरती चुनौतियों का समाधान करने में मदद कर सकते हैं, जो वर्तमान शास्त्रीय या सुपर कंप्यूटर भी नहीं कर सकते हैं।

पहली फ्लेक्स-फ्यूल कार

खबरों में क्यों

टोयोटा भारत की पहली फ्लेक्स-फ्यूल कार लॉन्च करेगी।

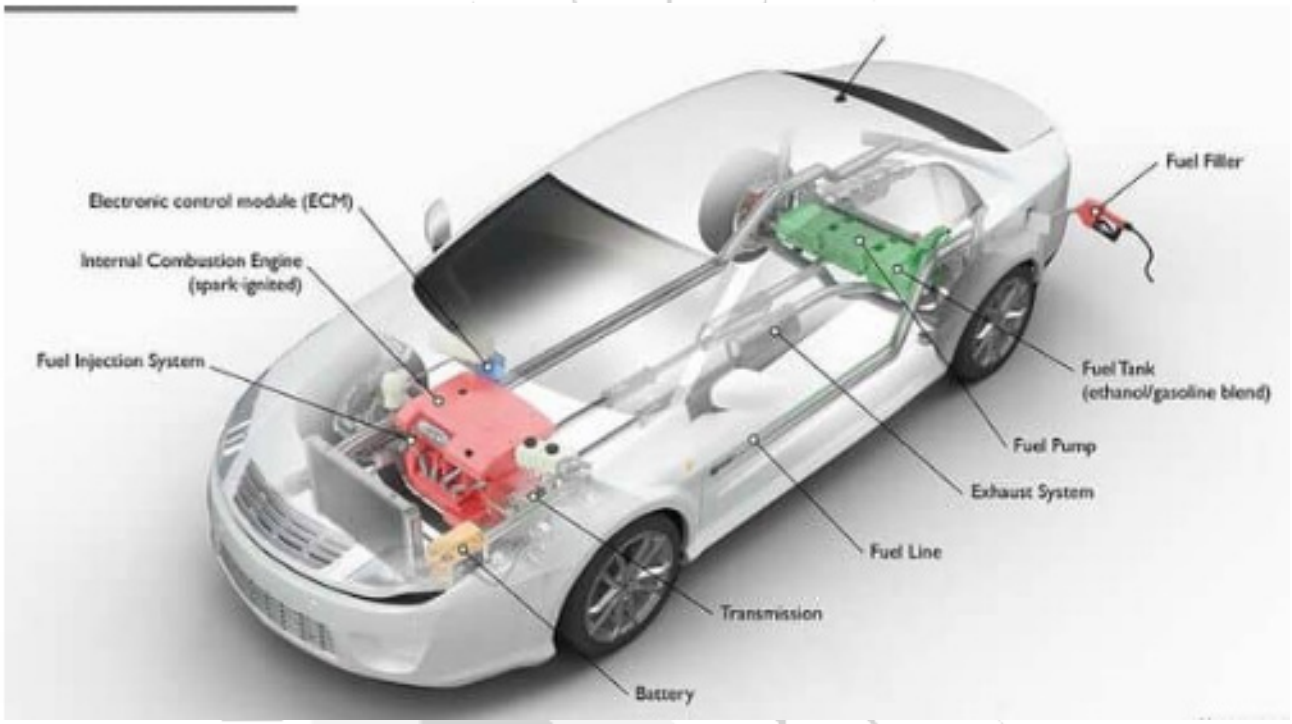

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत टोयोटा द्वारा अपनी पहली फ्लेक्स-फ्यूल कार प्राप्त करने के लिए पूरी तरह तैयार है। केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने घोषणा की कि वह टोयोटा की नई कार को शामिल करते हुए एक नई परीक्षण परियोजना शुरू करेंगे जो हाल ही में एक कार्यक्रम के दौरान फ्लेक्स-फ्यूल द्वारा संचालित होगी।
- यह पहल अगले 25 वर्षों में वाहनों के हर वर्ग में शीर्ष वैश्विक उत्पादकों में शामिल होने के भारत के लक्ष्य को शक्ति प्रदान करेगी।
- टोयोटा के साथ-साथ अन्य ऑटोमोबाइल कंपनियां भी भारत के ऑटोमोबाइल बाजार में फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों को लाने के लिए काम कर रही हैं।
- हालांकि, इन वाहनों को शोरूम से खरीदने के लिए भारतीयों को कुछ और समय इंतजार करना होगा।

RAO'S ACADEMY

फ्लेक्स-फ्यूल तकनीक क्या है?

- अपने नाम की तरह, ये फ्लेक्स ईंधन वाहन एक निश्चित प्रकार के ईंधन तक ही सीमित नहीं हैं और लचीले ढंग से पेट्रोल और इथेनॉल के मिश्रण पर 83% तक चल सकते हैं।
- अभी तक, फ्लेक्स फ्यूल वाहन संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील और कनाडा में उपलब्ध हैं।
- एक आधिकारिक अमेरिकी वेबसाइट के अनुसार, 2018 तक, लगभग 21 मिलियन फ्लेक्सी फ्यूल वाहन संयुक्त राज्य की सड़कों पर चल रहे थे।

- अमेरिकी ऊर्जा विभाग के अनुसार, एफएफवी अधिक कुशल होते हैं और जब वे उच्च इथेनॉल मिश्रणों के साथ ईंधन भरते हैं तो बेहतर त्वरण प्रदर्शन दिखाते हैं।

फ्लेक्स फ्यूल कारों को पेट्रोल कारों से अलग क्या बनाता है?

- अमेरिकी ऊर्जा विभाग के अनुसार, लचीले ईंधन वाले वाहनों के अधिकांश भाग केवल पेट्रोल वाले वाहनों के समान होते हैं।
- FFV में मुख्य रूप से एक आंतरिक दहन इंजन होता है और यह पेट्रोल या इसके मिश्रण पर 83% तक इथेनॉल के साथ काम कर सकता है।
- जो बात इन वाहनों को केवल पेट्रोल वाले वाहनों से अलग बनाती है, उनमें एथनॉल-संगत घटकों का एक सेट लगा होता है।
- ईंधन पंप और ईंधन इंजेक्शन प्रणाली में संशोधन किए गए हैं।
- इंजन नियंत्रण मॉड्यूल के साथ उच्च ऑक्सीजन को समायोजित करने के लिए।
- यह ईंधन मिश्रण, प्रज्वलन समय और उत्सर्जन प्रणाली की निगरानी और नियंत्रण करता है।
- इसके साथ ही, मॉड्यूल वाहन के संचालन पर भी नजर रखता है और इंजन की अति प्रयोग से सुरक्षा सुनिश्चित करता है।
- यह समस्याओं का पता लगाने और उनका निवारण करने के लिए भी जिम्मेदार है।

फ्लेक्स फ्यूल कार के क्या फायदे हैं?

- पेट्रोल कार मालिकों की तुलना में फ्लेक्स-फ्यूल कार मालिकों के प्रमुख लाभों में से एक यह है कि वे जब चाहें इथेनॉल पर स्विच कर सकते हैं।
- उनके पास ईंधन का एक व्यापक विकल्प होगा जो उन्हें अत्यधिक अस्थिर ईंधन कीमतों से बचा सकता है।
- अभी तक, इथेनॉल भारत में पेट्रोल की तुलना में काफी सस्ता है, जिससे फ्लेक्स ईंधन कार मालिकों को अपने ईंधन बिलों को बचाने के लिए ईंधन का उपयोग करने की गुंजाइश मिलती है।
- यह भारत को ईंधन आयात पर अपनी निर्भरता कम करने में भी मदद करेगा।

AVGAS 100LL

खबरों में क्यों

इंडियन ऑयल ने विमानन ईंधन AVGAS 100 LL का स्वदेशी उत्पादन शुरू किया

महत्वपूर्ण बिंदु

- ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए आयात पर निर्भरता को कम करने की दिशा में एक बड़े कदम में, सरकार द्वारा संचालित इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (IOC) ने AVGAS 100 LL का स्वदेशी उत्पादन शुरू किया है, जो पिस्टन इंजन वाले विमानों और मानव रहित एरियल वाहनों के लिए एक विशेष विमानन ईंधन है।
- हिंडन वायु सेना स्टेशन पर इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन द्वारा आयोजित लॉन्च कार्यक्रम में भारतीय वायु सेना, उड़ान प्रशिक्षण संगठनों और पेट्रोलियम और नागरिक उड्डयन मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

AVGAS 100LL

- विमानन गैसोलीन, जिसे आमतौर पर "AVGAS" के रूप में जाना जाता है, और जेट ईंधन दो अलग-अलग प्रकार के पेट्रोलियम-आधारित ईंधन हैं जिनका उपयोग हवाई जहाजों और अन्य शिल्पों को चलाने के लिए किया जाता है।
- एविएशन गैसोलीन 100LL (AVGAS 100LL) एविएशन गैसोलीन 100 (0.56gलेड/लीटर मैक्स) का निचला लीड

संस्करण है। यह पिस्टन इंजन से चलने वाले निजी, वाणिज्यिक और सैन्य प्रशिक्षण विमानों में उपयोग के लिए उत्कृष्ट है।

- विमानन ईंधन का उपयोग मुख्य रूप से पायलटों को प्रशिक्षण देने के लिए एफटीओ और रक्षा बलों द्वारा किया जाता है।

आयात निर्भरता को कम करना

- वर्तमान में, AVGAS 100 LL मुख्य रूप से यूरोपीय देशों से पूरी तरह से आयात किया जाता है। भारत में प्रति वर्ष लगभग 3,000 किलो लीटर की खपत होती है, जिसे आईओसी द्वारा आयात किया गया था।
- घरेलू उत्पादन यह सुनिश्चित करेगा कि एवी गैस 100 एलएल का उपयोग करने वाले सभी उड़ान स्कूल और अन्य सभी छोटे विमान इसे स्थानीय रूप से खरीद सकें और पैसे बचा सकें।
- एवी गैस में आत्मनिर्भर बनने से भारत लगभग 20,000-30,000 रुपये प्रति लीटर की बचत करेगा, देश में उड़ान प्रशिक्षण को और अधिक किफायती बना देगा।

गुजरात में उत्पादन

- IOCL गुजरात के वडोदरा में अपनी प्रमुख रिफाइनरी में एवी गैस 100 एलएल का उत्पादन शुरू करेगा, जो न केवल भारतीय मांग को पूरा करेगा, बल्कि निर्यात भी कर सकता है।
- इंडियन ऑयल को अपनी रिफाइनिंग क्षमता और इन-हाउस विशेषज्ञता का लाभ उठाकर इस विशेष ईंधन को पेश करने पर गर्व है।
- वास्तव में, स्वदेशी ईंधन आयातित ग्रेड की तुलना में बेहतर है।
- एवी गैस बाजार के 2029 तक मौजूदा 1.92 अरब डॉलर से बढ़कर 2.71 अरब डॉलर होने की उम्मीद है।
- ईंधन का परीक्षण और राष्ट्रीय नागर विमानन नियामक महानिदेशालय (डीजीसीए) द्वारा प्रमाणित किया गया है।

एकाधिक लाभ

- एवी गैस 100 एलएल की स्वदेशी उपलब्धता आयात पर निर्भरता को कम करने और संबंधित लॉजिस्टिक चुनौतियों का समाधान करने में मदद करेगी। भारत इस उत्पाद की घरेलू उपलब्धता से कीमती विदेशी मुद्रा बचाने में सक्षम होगा।
- इससे पूरे भारत में 35 से अधिक एफटीओ को भी लाभ होगा।
- इस उत्पाद की घरेलू उपलब्धता के साथ नागरिक उड्डयन मंत्रालय देश में और अधिक प्रशिक्षण संस्थान खोलने पर विचार कर रहा है।
- उड्डयन यातायात में वृद्धि को देखते हुए, प्रशिक्षित पायलटों की आवश्यकता बढ़ने की उम्मीद है।

YOUR SUCCESS OUR RIGHT
RAO'S ACADEMY

6 सामाजिक मुद्दे

व्हाट्सएप गोपनीयता नीति

खबरों में क्यों

व्हाट्सएप की नई गोपनीयता नीति ने कई लोगों को परेशान कर दिया है क्योंकि डेटा गोपनीयता चिंता का एक महत्वपूर्ण कारण बन गई है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- व्हाट्सएप ने फरवरी की शुरुआत में अपनी नई डेटा गोपनीयता नीति की घोषणा की और उपयोगकर्ताओं को 8 फरवरी, 2021 तक इसका पालन करने के लिए प्रेरित किया।
- हालांकि, एक गहन सार्वजनिक गलत धारणा और भ्रम के कारण, व्हाट्सएप ने अंततः 15 मई, 2021 तक कार्यान्वयन में देरी की और फिर भारत में व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक के अधिनियमन के बाद इसे लागू करने योग्य बनाने के लिए सहमत हो गया।
- नई व्हाट्सएप गोपनीयता नीति व्हाट्सएप बिजनेस खातों के साथ आदान-प्रदान से संबंधित डेटा को प्रभावित करती है न कि नियमित व्हाट्सएप खातों को।
- महत्वपूर्ण बात यह है कि यह नीति व्हाट्सएप की फेसबुक के साथ डेटा साझा करने की क्षमता का विस्तार नहीं करती है।
- व्हाट्सएप वर्तमान में उपयोगकर्ताओं को तीन सेवाएं प्रदान करता है, अर्थात् व्हाट्सएप (व्यक्तिगत चौट के लिए), व्हाट्सएप बिजनेस (छोटे सेवा प्रदाताओं और व्यवसायों के लिए) और व्हाट्सएप एपीआई (बड़े संगठनों के अनुप्रयोगों को एकीकृत करने के लिए और सरकार द्वारा भी उपयोग किया जाता है)।
- व्हाट्सएप की गोपनीयता नीति में बदलाव व्हाट्सएप बिजनेस एप्लिकेशन को प्रमुख रूप से प्रभावित करता है न कि अन्य सेवाओं को। नई प्राइवेसी पॉलिसी के मुताबिक, व्हाट्सएप यूजर-डेटा को अन्य फेसबुक कंपनियों के साथ ही साझा करेगा।
- आम उपयोगकर्ता इस गलत धारणा के तहत हैं कि व्हाट्सएप इस मेटाडेटा के माध्यम से हमारी चौट, संचार और मीडिया साझाकरण में टैप करेगा और सभी संचारों के एंड-टू-एंड एन्क्रिप्टेड बने रहने के बावजूद उन्हें सार्वजनिक कर देगा।

मेटाडेटा क्या है?

- मेटाडेटा ज्यादातर आपके डिवाइस के सामान्य स्थान, आईपी पते, समय क्षेत्र, फोन मॉडल, ओएस, बैटरी स्तर, सिग्नल शक्ति, ब्राउजर, मोबाइल नेटवर्क, आईएसपी, भाषा, समय क्षेत्र, उपयोग पैटर्न, नैदानिक रिपोर्ट(यदि आपका एप्लिकेशन क्रैश हो जाता है) और यहां तक कि IMEI में भी की पहचान करने के लिए उपयोग किया जाने वाला डेटा है।

भारत का स्टैंड

- दिल्ली उच्च न्यायालय ने माना है कि व्हाट्सएप की 2021 की गोपनीयता नीति अपने उपयोगकर्ताओं को "इसे ले लो या छोड़ दो" स्थिति में रखती है, वस्तुतः उन्हें विकल्पों की एक मृगतृष्णा प्रदान करके और फिर अपनी

मूल कंपनी फेसबुक के साथ अपना डेटा साझा करके एक समझौते में मजबूर करती है।

WHAT YOU GET ON WHATSAPP, OTHER APPS

FEATURES	WHATSAPP	SIGNAL	TELEGRAM
End-to-End Encryption (E2E)	Yes	Yes	Only 'Secret Chats' and all calls
Disappearing Messages	Yes	Yes	Yes
Chat backups	Yes, but third-party	No, stored locally on device	Yes, but on Telegram's Cloud
Screen Lock	Yes	Yes	Yes
Advertisements	No	No	No, but plans to add
Group Chat Security	Yes, E2E	Yes, E2E	No
Video and Voice Calls	Yes	Yes	Yes

- भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) द्वारा इंस्टेंट मैसेजिंग प्लेटफॉर्म की 2021 की अद्यतन गोपनीयता नीति में जांच के आदेश को चुनौती देने के आदेश के खिलाफ व्हाट्सएप और फेसबुक की अपील को खारिज करते हुए उच्च न्यायालय का फैसला आया।
- मुख्य न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा और न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद की खंडपीठ ने कहा कि एकल न्यायाधीश का 22 अप्रैल, 2021 का आदेश अच्छी तरह से तर्कपूर्ण था और अपील योग्यता और सार से रहित हैं जो इस अदालत के हस्तक्षेप को वारंट करेंगे।
- उच्च न्यायालय ने कहा कि इंस्टेंट मैसेजिंग प्लेटफॉर्म, व्हाट्सएप, भारत में स्मार्टफोन के माध्यम से ओटीटी (ओवर-द-टॉप) मैसेजिंग ऐप के लिए बाजार में एक प्रमुख स्थान रखता है।
- पिछले साल अप्रैल में, उच्च न्यायालय के एकल न्यायाधीश ने व्हाट्सएप एलएलसी और फेसबुक इंक- अब मेटा प्लेटफॉर्म द्वारा दायर याचिकाओं पर सीसीआई द्वारा निर्देशित जांच में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया था।
- पिछले साल जनवरी में, सीसीआई ने अपने आप से संबंधित समाचार रिपोर्टों के आधार पर व्हाट्सएप की अद्यतन गोपनीयता नीति को देखने का फैसला किया था।
- आपको व्हाट्सएप की नई गोपनीयता नीति को स्वीकार करने की आवश्यकता क्यों है?
- यदि आप नई गोपनीयता नीति को स्वीकार नहीं करते हैं, तो आप तुरंत पूर्ण कार्यक्षमता नहीं खोएंगे क्योंकि कंपनी धीरे-धीरे सभी सुविधाओं को अक्षम कर देगी।
- व्हाट्सएप कह रहा है कि वह नई नीति को स्वीकार करने के लिए रिमाइंडर भेजना जारी रखेगा, और कई हफ्तों की अवधि के बाद, कंपनी उन लोगों के लिए कार्यक्षमता को सीमित कर देगी जो अपडेट स्वीकार नहीं करते हैं।
- जैसे ही व्हाट्सएप "लगातार रिमाइंडर" भेजना शुरू करेगा, उपयोगकर्ताओं को व्हाट्सएप पर सीमित कार्यक्षमता का सामना करना पड़ेगा जब तक कि वे अपडेट स्वीकार नहीं करते।

नई WhatsApp गोपनीयता नीति का त्वरित पुनर्कथन

- व्हाट्सएप ने दोहराया है कि उसका मैसेजिंग ऐप एंड-टू-एंड एन्क्रिप्टेड है और इसकी आपकी निजी चैट या स्थान तक पहुंच नहीं है।

- कंपनी Facebook के साथ निजी संदेश या अन्य डेटा साझा नहीं करती है। लेकिन, नया अपडेट व्हाट्सएप को विज्ञापन के लिए सोशल नेटवर्क के साथ होस्ट की गई कुछ "व्यावसायिक बातचीत" का उपयोग करने में सक्षम करेगा।

NDPS अधिनियम

खबरों में क्यों

कर्नाटक उच्च न्यायालय ने हाल ही में भांग और गांजे के लिए गिरफ्तार एक व्यक्ति को जमानत दे दी है, और तर्क दिया है कि NDPS अधिनियम में कहीं भी इसे प्रतिबंधित पेय / दवा के रूप में उल्लेख नहीं किया गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- 29 किलो भांग और 400 ग्राम गांजा रखने के आरोप में गिरफ्तार एक व्यक्ति को जमानत देते हुए, कर्नाटक उच्च न्यायालय ने हाल ही में पाया कि नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस (NDPS) अधिनियम में कहीं भी भांग को प्रतिबंधित पेय या प्रतिबंधित दवा के रूप में संदर्भित नहीं किया गया है।
- बरामद गांजा व्यावसायिक मात्रा से कम होने के कारण आरोपी को 2 लाख रुपये के निजी मुचलके पर जमानत दे दी गई।
- सिंगल जज बेंच ने पहले के दो फैसलों, मधुकर बनाम महाराष्ट्र राज्य, 2002 और अर्जुन सिंह बनाम हरियाणा राज्य, 2004 पर भरोसा किया, जहां अदालतों ने फैसला सुनाया था कि भांग गांजा नहीं है, और इसलिए एनडीपीएस अधिनियम के तहत कवर नहीं किया गया है।

भांग क्या है?

- भांग भांग के पौधे की पत्तियों से बनाई जाने वाली खाद्य तैयारी है, जिसे अक्सर विभिन्न खाद्य पदार्थों के साथ ठंडाई और लस्सी जैसे पेय में शामिल किया जाता है। भांग का सेवन भारतीय उपमहाद्वीप में सदियों से किया जाता रहा है, और अक्सर होली और महाशिवरात्रि के त्योहारों के दौरान इसका सेवन किया जाता है।
- इसके व्यापक उपयोग ने यूरोपीय लोगों का ध्यान आकर्षित किया, एक पुर्तगाली चिकित्सक गार्सिया दा ओर्टा के साथ, जो 16वीं शताब्दी में गोवा आया था, यह देखते हुए कि "[भांग] इतना आम तौर पर और इतने सारे लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है कि इसके बारे में कोई रहस्य नहीं है"।

भांग और कानून

- 1985 में अधिनियमित, NDPS अधिनियम मुख्य कानून है जो ड्रग्स और उनकी तस्करी से संबंधित है। अधि नियम के विभिन्न प्रावधान चिकित्सा और वैज्ञानिक उद्देश्यों को छोड़कर, प्रतिबंधित दवाओं के उत्पादन, निर्माण, बिक्री, कब्जे, उपभोग, खरीद, परिवहन और उपयोग को दंडित करते हैं।
- एनडीपीएस अधिनियम भांग (गांजा) को एक मादक दवा के रूप में परिभाषित करता है जो पौधे के उन हिस्सों पर आधारित होता है जो इसके दायरे में आते हैं। अधिनियम इन भागों को इस प्रकार सूचीबद्ध करता है:
  i. चरस: "अलग किए गए राल, चाहे किसी भी रूप में, चाहे कच्चा या शुद्ध, भांग के पौधे से प्राप्त किया जाता है और इसमें केंद्रित तैयारी और राल भी शामिल है जिसे हशीश तेल या तरल हशीश के रूप में जाना जाता है।"
  ii. गांजा: "भांग के पौधे के फूल या फलने वाले शीर्ष (बीज और पत्तियों को छोड़कर जब शीर्ष के साथ नहीं होते हैं), चाहे वे किसी भी नाम से जाने या नामित हों।"
  iii. "उपरोक्त किसी भी प्रकार की भांग या उससे तैयार किए गए किसी भी पेय के किसी भी तटस्थ सामग्री के साथ या बिना कोई मिश्रण।"
- अधिनियम, इसकी परिभाषा में, बीज और पत्तियों को शामिल नहीं करता है जब शीर्ष के साथ नहीं। भांग,

जो पौधे की पत्तियों से बनता है, का उल्लेख एनडीपीएस अधिनियम में नहीं है।

- एक "विशेष प्रावधान" के रूप में, अधिनियम में कहा गया है कि सरकार "केवल फाइबर या बीज प्राप्त करने या बागवानी उद्देश्यों के लिए औद्योगिक उद्देश्यों के लिए किसी भी भांग के पौधे की खेती की अनुमति दे सकती है"।

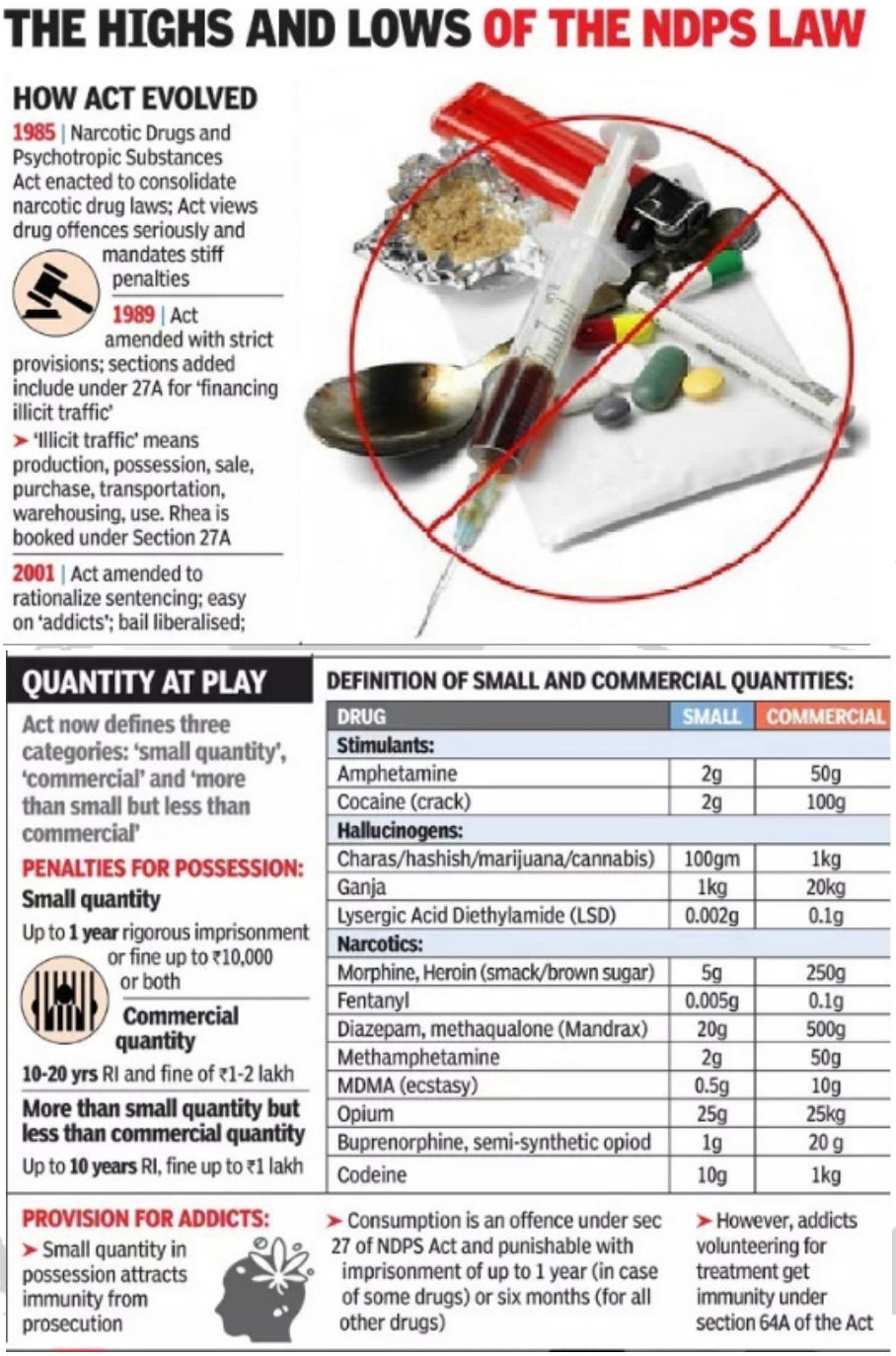

भांग और आपराधिक दायित्व

- एनडीपीएस अधिनियम की धारा 20 अधिनियम में परिभाषित भांग के उत्पादन, निर्माण, बिक्री, खरीद, आयात और अंतर-राज्यीय निर्यात के लिए दंड का प्रावधान करती है। निर्धारित सजा जब्त की गई दवाओं की मात्रा पर आधारित है।
- उल्लंघन जिसमें कम मात्रा (100 ग्राम चरस / हशीश या 1 किलो गांजा) शामिल है, के परिणामस्वरूप एक

वर्ष तक की अवधि के लिए कठोर कारावास और/या जो 10,000 रुपये तक जुर्माना हो सकता है।

- व्यावसायिक मात्रा (1 किलो चरस/ हशीश या 20 किलो गांजा) के लिए कम से कम 10 साल की कठोर कारावास जो 20 साल तक हो सकती है, जिसमें जुर्माना 1,00,000 रुपये से कम नहीं है लेकिन 2,00,000 रुपये तक हो सकता है।

जिज्ञासा 2.0

खबरों में क्यों

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने हाल ही में अक्षय ईंधन कार्यक्रम के लिए जिज्ञासा 2.0 का आयोजन किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

CSIR-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम, देहरादून में सिंधिया कन्या विद्यालय, ग्वालियर के ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों के लिए जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के तहत चार दिवसीय "नवीकरणीय ईंधन के लिए जिज्ञासा" कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

- कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अखाद्य वनस्पति तेलों, प्रयुक्त खाना पकाने के तेल और अपशिष्ट प्लास्टिक के विभिन्न प्रकार के ईंधनों के उपयोग के लिए विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी देना है।
- कार्यक्रम छात्रों को अपने दैनिक जीवन में उत्पन्न होने वाले विभिन्न प्रकार के कचरे की तलाश करने के लिए प्रेरित करता है और अपशिष्ट उत्पादन को कम करने और ऊर्जा और ईंधन के आगे उपयोग के लिए मार्ग सुझाता है।
- इस कार्यक्रम के दौरान छात्रों को सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान के वैज्ञानिकों और तकनीकी अधिकारियों के साथ बातचीत करने का अवसर मिला।
- अक्षय ईंधन, वैकल्पिक ईंधन, भविष्य के ईंधन के रूप में H2, विद्युत वाहन रेट्रोफिटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग, पेट्रोकेमिकल्स और पॉलिमर जैसे विभिन्न विषयों पर व्याख्यान की एक श्रृंखला दी गई।
- छात्रों को बायोडीजल के लिए रूको की प्रक्रिया के साथ-साथ CO2 से शुष्क बर्फ बनने का भी अनुभव मिलता है।
- इसके अलावा, छात्रों ने जैव-प्रौद्योगिकी और जैव रसायन प्रयोगशाला, सोखना और झिल्ली पृथक्करण प्रयोगशाला सीएफआर इंजन, उत्सर्जन परीक्षण प्रयोगशाला, थर्मो उत्प्रेरक प्रक्रिया प्रयोगशाला, उन्नत कच्चे तेल अनुसंधान केंद्र, आईआर और जीसी-एमएस प्रयोगशाला जैसी विभिन्न प्रयोगशालाओं का भी दौरा किया।

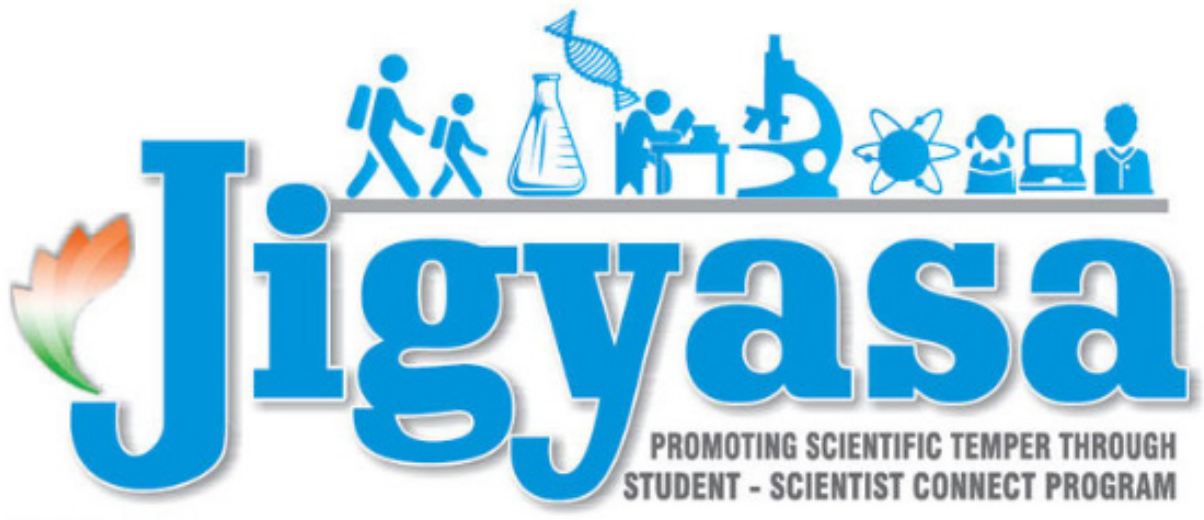

CSIR वर्चुअल लैब

- CSIR जिज्ञासा वर्चुअल लैब (सीजेवीएल) सीएसआईआर जिज्ञासा कार्यक्रम का एक विस्तार है।
- CSIR जिज्ञासा के सफल प्रक्षेपण और बहुतायत में रुचि के परिणामस्वरूप वर्चुअल लैब की स्थापना हुई।
- CSIR-एनसीएल द्वारा मौजूदा भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय आभासी प्रयोगशालाओं पर अनुसंधान सर्वेक्षण किया गया था और एनईपी और एसटीआईपी नीतियों पर एक अध्ययन किया गया था। चर्चा बैठकें और प्रस्तुतियां दी गईं।
- 2020 में, छात्रों के लिए विज्ञान पर आधारित मनोरंजक गतिविधियों को विकसित करने के लिए सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा छह महीने का एक प्रायोगिक चरण चलाया गया।
- सॉफ्टवेयर विकास CSIR-NCL और IITB के बीच हस्ताक्षरित एक समझौता ज्ञापन पर आईआईटीबी, मुंबई को आउटसोर्स किया गया है।
- सीजेवीएल का उद्देश्य वैज्ञानिक मॉडल बनाना और उन्हें छात्रों के लिए दिलचस्प बनाना है ताकि छात्र मस्ती करके विज्ञान के साथ जुड़ सकें। यह प्लेटफॉर्म छात्रों को ऑनलाइन के साथ-साथ ऑफलाइन भी मुफ्त एक्सेस प्रदान करता है।
- मंच में शामिल हैं
- यह एक ओर जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच और दूसरी ओर प्रौद्योगिकी उन्मुख सोच, स्व-शिक्षण, वैज्ञानिक स्वभाव को प्रोत्साहित करने और विकसित करने को बढ़ावा देता है।
- यह मौजूदा जुड़ाव मॉड्यूल के साथ जारी रहेगा और छात्रों के उत्साह को बनाए रखने के लिए नए मॉड्यूल भी पेश करेगा।

CSIR- जिज्ञासा कार्यक्रम के तहत सगाई के मॉडल

- छात्र आवासीय कार्यक्रम
- वैज्ञानिक शिक्षक के रूप में और शिक्षक वैज्ञानिक के रूप में
- लैब विशिष्ट गतिविधियां / ऑनसाइट प्रयोग
- वैज्ञानिकों का स्कूलों/आउटरीच कार्यक्रमों का दौरा
- विज्ञान और गणित क्लब
- स्कूलों में लोकप्रिय व्याख्यान श्रृंखला/प्रदर्शन कार्यक्रम
- छात्र शिक्षुता कार्यक्रम
- विज्ञान प्रदर्शनी
- राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की परियोजनाएं
- शिक्षक कार्यशालाएं
- टिंकरिंग प्रयोगशालाएं

बल्क ड्रग पार्कों को बढ़ावा देने की योजना

खबरों में क्यों

केंद्र ने गुजरात, एचपी और एपी में 3 बल्क ड्रग पार्कों के लिए 'सैद्धांतिक' मंजूरी दी

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत सरकार ने रसायन और उर्वरक मंत्रालय, हिमाचल प्रदेश, गुजरात और आंध्र प्रदेश में तीन बल्क ड्रग पार्क स्थापित करने के लिए 'सैद्धांतिक' अनुमोदन प्रदान किया है।
- फार्मास्युटिकल विभाग ने "बल्क ड्रग पार्कों को बढ़ावा देने" देश में योजना के तहत तीन राज्यों हिमाचल प्रदेश, गुजरात और आंध्र प्रदेश के प्रस्तावों को 'सैद्धांतिक' मंजूरी दे दी है।

- 2020 में अधिसूचित 3,000 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय के साथ, यह योजना तीन राज्यों को बल्क ड्रग पार्क स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है और इसका उद्देश्य विश्व स्तरीय सामान्य बुनियादी सुविधाओं के निर्माण द्वारा थोक दवाओं के निर्माण की लागत को कम करना है। केंद्र सरकार द्वारा और इस तरह घरेलू थोक दवा उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि।
- भारतीय औषध उद्योग मात्रा के हिसाब से विश्व में तीसरा सबसे बड़ा उद्योग है।
- भारत ने वित्तीय वर्ष 2021-22 में 175,040 करोड़ रुपये के फार्मास्यूटिकल्स का निर्यात किया, जिसमें बल्क ड्रग्स / ड्रग इंटरमीडिएट शामिल हैं।
- इसके अलावा, भारत दुनिया में सक्रिय फार्मा सामग्री (एपीआई) या थोक दवाओं के प्रमुख उत्पादकों में से एक है। भारत ने वित्तीय वर्ष 2021-22 में 33,320 करोड़ रुपये मूल्य की बल्क ड्रग्स/ड्रग इंटरमीडिएट का निर्यात किया।
- देश विभिन्न देशों से दवाओं के उत्पादन के लिए विभिन्न थोक दवाओं/एपीआई का भी आयात करता है। देश में थोक दवा/एपीआई का अधिकांश आयात आर्थिक कारणों से किया जा रहा है।
- सरकार आयात पर देश की निर्भरता को कम करने और स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा देने का प्रयास करती है।
- देश को एपीआई और ड्रग इंटरमीडिएट में आत्मनिर्भर बनाने के लिए, फार्मास्युटिकल विभाग विभिन्न योजनाओं को लागू कर रहा है और प्रमुख हस्तक्षेपों में से एक बल्क ड्रग पार्क की योजना है।
- इस योजना के तहत विकसित किए जाने वाले बल्क ड्रग पार्क एक ही स्थान पर सामान्य बुनियादी सुविधाएं प्रदान करेंगे जिससे देश में बल्क ड्रग निर्माण के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण होगा और विनिर्माण लागत में भी काफी कमी आएगी।
- इस योजना से आयात निर्भरता को कम करने के लिए थोक दवाओं के घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करने और मानक परीक्षण और बुनियादी सुविधाओं तक आसान पहुंच प्रदान करके वैश्विक बाजार में एक प्रमुख स्थान स्थापित करने की उम्मीद है।
- यह योजना उद्योग को सामान्य अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली के नवीन तरीकों के माध्यम से कम लागत पर पर्यावरण के मानकों को पूरा करने और संसाधनों के अनुकूलन और पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं के कारण होने वाले लाभों का फायदा उठाने में भी मदद करेगी।
- योजना के तहत 13 राज्यों से प्रस्ताव प्राप्त हुए थे। विभाग को मात्रात्मक और साथ ही गुणात्मक पद्धति के आधार पर प्रस्तावों के मूल्यांकन में सीईओ, नीति आयोग के अधीन एक सलाहकार समिति द्वारा सहायता प्रदान की गई थी।
- गुजरात और आंध्र प्रदेश में प्रस्तावित बल्क ड्रग पार्क के लिए वित्तीय सहायता सामान्य बुनियादी सुविधाओं की परियोजना लागत का 70 प्रतिशत होगी।
- हिमाचल प्रदेश, पहाड़ी राज्य होने के मामले में, वित्तीय सहायता परियोजना लागत का 90 प्रतिशत होगी। एक बल्क ड्रग पार्क के लिए योजना के तहत अधिकतम सहायता 1,000 करोड़ रुपये तक सीमित होगी।
- यह योजना सहकारी संघवाद की भावना को दर्शाती है जहां केंद्र सरकार और राज्य सरकारें क्षेत्र के बेहतर प्रदर्शन के लिए बल्क ड्रग पार्क विकसित करने के लिए भागीदार होंगी।
- थोक दवाओं के घरेलू निर्माण को सुनिश्चित करने में विभाग के अन्य हस्तक्षेपों में शामिल हैं: केएसएम/औषधि मध्यवर्ती (डीआई) और एपीआई के घरेलू विनिर्माण के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना।
- इस योजना के तहत, कुल 51 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है, जिनमें से 14 परियोजनाएं पहले ही शुरू हो चुकी हैं और दवाओं का निर्माण शुरू हो गया है और फार्मास्यूटिकल्स के लिए पीएलआई, तीन श्रेणियों के तहत पहचाने गए उत्पादों के निर्माण के लिए 55 चयनित आवेदकों को वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करता है। और इस योजना के तहत पात्र दवाओं में एपीआई शामिल हैं।

निर्णायक एजेंडा रिपोर्ट 2022

खबरों में क्यों

जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए स्वच्छ प्रौद्योगिकी प्रतिबद्धता के लिए देशों ने कैसे निवेश किया है, इसकी प्रगति पर एक रिपोर्ट।

महत्वपूर्ण बिंदु

- निर्णायक एजेंडा रिपोर्ट 2022 अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA), अंतर्राष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा एजेंसी (IRENA) और संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन उच्च-स्तरीय चौंपियंस की एक नई रिपोर्ट है।
- इसने वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में तेजी से कमी लाने के लिए मजबूत अंतरराष्ट्रीय सहयोग का समर्थन करने पर ध्यान केंद्रित किया।
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग के बिना, शुद्ध शून्य उत्सर्जन के लिए महत्वपूर्ण वैश्विक संक्रमण में दशकों की देरी हो सकती है।
- संक्रमण जितनी तेजी से आगे बढ़ेगा, उतनी ही तेजी से यह कम लागत पर स्वच्छ प्रौद्योगिकी प्रदान करेगा, जिससे वे सभी के लिए उपलब्ध हो जाएंगे। दुनिया भर में ऊर्जा और खाद्य कीमतों में हालिया तेज उछाल के संदर्भ में यह और भी जरूरी है।
- निर्णायक एजेंडा 1.5°C को पहुंच में रखने में मदद करने के लिए एक अभूतपूर्व अंतरराष्ट्रीय स्वच्छ प्रौद्योगिकी योजना है। यह देशों और व्यवसायों को हर साल अपने कार्यों में शामिल होने और मजबूत करने के लिए एक ढांचा प्रदान करता है।
- यह उद्घाटन रिपोर्ट पांच प्रमुख क्षेत्रों - बिजली, हाइड्रोजन, सड़क परिवहन, इस्पात और कृषि में उत्सर्जन को कम करने की प्रगति का आकलन करती है।
- लेखक सामान्य मानकों, प्रौद्योगिकी अनुसंधान एवं विकास जैसे क्षेत्रों में सरकारों, व्यापार और नागरिक समाज के बीच सहयोग को मजबूत करने, व्यापार के लिए एक स्तर के खेल मैदान तक पहुंचने और तकनीकी और वित्तीय सहायता में सुधार के लिए सिफारिशें करते हैं।
- यह अपनी तरह की पहली वार्षिक प्रगति रिपोर्ट है, जिसका अनुरोध विश्व नेताओं ने नवंबर 2021 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन COP26 में ब्रेकथ्रू एजेंडा के लॉन्च के हिस्से के रूप में किया था।
- ब्रेकथ्रू एजेंडा वर्तमान में वैश्विक अर्थव्यवस्था के दो-तिहाई से अधिक को कवर करता है, जिसमें G7, चीन और भारत सहित 45 विश्व नेताओं का समर्थन है।
- रिपोर्ट को अगले संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन, सितंबर 2022 में पिट्सबर्ग में ग्लोबल क्लीन एनर्जी एक्शन फोरम से पहले प्रमुख उत्सर्जक क्षेत्रों में सहयोग को मजबूत करने के लिए नीति निर्माताओं, व्यापारिक नेताओं और नागरिक समाज संगठनों को सूचित करने के लिए डिजाइन किया गया है। COP27 शर्म अल शेख, मिस्र और उसके बाहर होगा।

लम्पी स्किन रोग

खबरों में क्यों

ढेलेदार त्वचा रोग (Lumpy skin disease-लम्पी स्किन रोग) एक वायरल बीमारी है जो मवेशियों और भैंसों में लंबे समय तक रुग्णता का कारण बनती है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- मुंबई पुलिस ने ढेलेदार त्वचा रोग के प्रसार को रोकने के लिए शहर में पशु परिवहन पर प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया है। इसका मतलब यह है कि मवेशियों को उस स्थान से बाहर नहीं ले जाया जा सकता है जहां

RAO'S ACADEMY

उन्हें उठाया जा रहा है या बाजारों में ले जाया जा रहा है।

- इस बीमारी ने महाराष्ट्र में 127 मवेशियों की जान ले ली है, जो 25 जिलों में फैल गया है।
- संक्रामक वायरल संक्रमण अब तक 10 से अधिक राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मवेशियों में फैल चुका है।
- बीमारी के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए केंद्र और राज्य मिलकर काम कर रहे हैं, जो डेयरी क्षेत्र के लिए चिंता का विषय बनकर उभरा है।

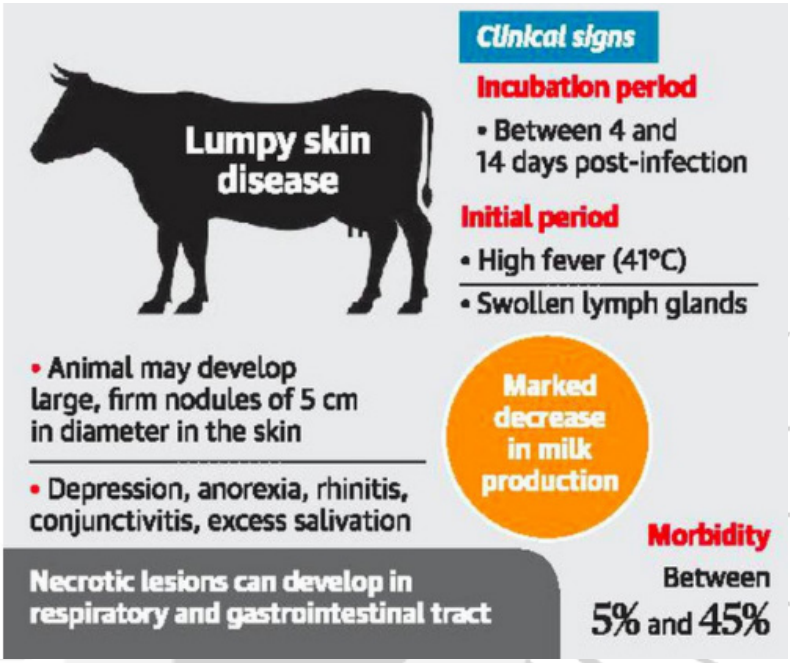

ढेलेदार त्वचा रोग क्या है और यह कैसे फैलता है?

- ढेलेदार त्वचा रोग ढेलेदार त्वचा रोग वायरस (LSDV) के कारण होता है, जो कि पॉक्सविरिडे परिवार (चेचक और मंकीपॉक्स वायरस भी एक ही परिवार का एक हिस्सा हैं) के जीनस कैप्रिपोक्सवायरस से संबंधित है।
- स्कैट शीपपॉक्स वायरस (SPPV) और बकरीपॉक्स वायरस (GTPV) के साथ एंटीजेनिक समानताएं साझा करता है या उन वायरस की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया में समान है।
- यह एक जूनोटिक वायरस नहीं है, जिसका अर्थ है कि यह रोग मनुष्यों में नहीं फैल सकता है। यह एक संक्रामक रोगवाहक जनित रोग है जो मच्छरों, कुछ काटने वाली मक्खियों और टिक्स जैसे वैक्टर द्वारा फैलता है और आमतौर पर गाय और भैंस जैसे मेजबान जानवरों को प्रभावित करता है।
- संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार, संक्रमित जानवर मौखिक और नाक स्राव के माध्यम से वायरस छोड़ते हैं जो आम भोजन और पानी के कुंड को दूषित कर सकते हैं।
- इस प्रकार, रोग या तो रोगवाहकों के सीधे संपर्क से या दूषित चारे और पानी के माध्यम से फैल सकता है।
- अध्ययनों से यह भी पता चला है कि कृत्रिम गर्भाधान के दौरान यह जानवरों के वीर्य से फैल सकता है।
- एलएसडी संक्रमित जानवर के लिम्फ नोड्स को प्रभावित करता है, जिससे नोड्स बड़े हो जाते हैं और त्वचा पर गांठ की तरह दिखाई देते हैं, जहां से इसका नाम पड़ा है।
- त्वचीय पिंड, 2-5 सेमी व्यास, संक्रमित मवेशियों के सिर, गर्दन, अंगों, थन, जननांग और पेरिनेम पर दिखाई देते हैं। नोड्यूल बाद में अल्सर में बदल सकते हैं और अंततः त्वचा पर पपड़ी विकसित कर सकते हैं।
- अन्य लक्षणों में तेज बुखार, दूध की उपज में तेज गिरावट, आंखों और नाक से स्राव, लार, भूख न लगना, अवसाद, क्षतिग्रस्त खाल, पशुओं की दुर्बलता (पतलापन या कमजोरी), बांझपन और गर्भपात शामिल हैं।
- AFAO के अनुसार ऊष्मायन अवधि या संक्रमण और लक्षणों के बीच का समय लगभग 28 दिन है, और

कुछ अन्य अनुमानों के अनुसार 4 से 14 दिन है।

- रोग की रुग्णता दो से 45% के बीच होती है और मृत्यु दर या तारीख की दर 10% से कम है, हालांकि, भारत में वर्तमान प्रकोप की रिपोर्ट की गई मृत्यु दर 15% तक है, विशेष रूप से पश्चिमी भाग में रिपोर्ट किए गए मामलों में (राजस्थान) देश का।

भौगोलिक वितरण क्या है और यह भारत में कैसे फैला?

- यह रोग पहली बार 1929 में जाम्बिया में देखा गया था, बाद में बड़े पैमाने पर अधिकांश अफ्रीकी देशों में फैल गया, इसके बाद पश्चिम एशिया, दक्षिणपूर्वी यूरोप और मध्य एशिया में फैल गया, और हाल ही में 2019 में दक्षिण एशिया और चीन में फैल गया।
- एफएओ के अनुसार, एलएसडी रोग वर्तमान में अफ्रीका, पश्चिम एशिया के कुछ हिस्सों (इराक, सऊदी अरब, सीरियाई अरब गणराज्य) और तुर्की के कई देशों में स्थानिक है।
- दक्षिण एशिया में प्रसार ने पहले जुलाई 2019 में बांग्लादेश को प्रभावित किया और फिर उस वर्ष अगस्त में भारत पहुंचा, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में शुरुआती मामलों का पता चला।
- एफएओ बताता है: "भारत, नेपाल और बांग्लादेश के बीच लंबी झरझरा सीमाएं मवेशियों और भैंसों सहित द्विपक्षीय और अनौपचारिक पशु व्यापार की एक महत्वपूर्ण मात्रा की अनुमति देती हैं।"
- यह, संयुक्त राष्ट्र निकाय का कहना है, जुलाई-अगस्त 2019 में बांग्लादेश और भारत के बीच एलएसडी के प्रसार में योगदान हो सकता है।

क्या प्रभावित मवेशियों के दूध का सेवन करना सुरक्षित है?

- अध्ययनों का कहना है कि संक्रमित जानवर से प्राप्त दूध में व्यवहार्य और संक्रामक एलएसडीवी वायरस की उपस्थिति का पता लगाना संभव नहीं है।
- एफएओ नोट करता है, हालांकि, एशिया में दूध के एक बड़े हिस्से को संग्रह के बाद संसाधित किया जाता है और दूध पाउडर बनाने के लिए या तो पास्चुरीकृत या उबला हुआ या सुखाया जाता है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि वायरस निष्क्रिय या नष्ट हो गया है।
- संक्रमित मवेशियों के दूध का सेवन सुरक्षित है। दूध उबालने के बाद या बिना उबाले दूध पीने से भी उसकी गुणवत्ता में कोई दिक्कत नहीं होती है।

सरकार क्या कर रही है?

- FAO ने LSD के लिए प्रसार-नियंत्रण उपायों का एक सेट सुझाया है, जिसमें 80% से अधिक कवरेज के साथ अतिसंवेदनशील आबादी का टीकाकरण, गोजातीय जानवरों की आवाजाही पर नियंत्रण और संगरोध, शेड को साफ करके और कीटनाशकों का छिड़काव करके वेक्टर नियंत्रण के माध्यम से जैव सुरक्षा को लागू करना, सक्रिय को मजबूत करना शामिल है। और निष्क्रिय निगरानी; शामिल सभी हितधारकों के बीच जोखिम कम करने के बारे में जागरूकता फैलाना, और बड़े सुरक्षा और निगरानी क्षेत्र और टीकाकरण क्षेत्र बनाना।
- केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने सूचित किया कि 'बकरी चेचक का टीका' एलएसडी के खिलाफ ष्बहुत प्रभावीष् है और इसका उपयोग प्रभावित राज्यों में प्रसार को रोकने के लिए किया जा रहा है। सितंबर के पहले सप्ताह तक टीकाकरण की 97 लाख खुराकें दी जा चुकी हैं।
- ढेलेदार त्वचा रोग ने महाराष्ट्र में 127 मवेशियों की जान ले ली है। संक्रामक वायरल संक्रमण अब तक 10 से अधिक राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मवेशियों में फैल चुका है।
- ढेलेदार त्वचा रोग विषाणु, शीपपॉक्स विषाणु और गोटपॉक्स विषाणु के साथ प्रतिजनी समानताएं साझा करता है। यह एक जूनोटिक वायरस नहीं है, जिसका अर्थ है कि यह रोग मनुष्यों में नहीं फैल सकता है।
- एलएसडी संक्रमित जानवर के लिम्फ नोड्स को प्रभावित करता है, जिससे नोड्स बड़े हो जाते हैं और त्वचा

पर गांठ की तरह दिखाई देते हैं, जहां से इसका नाम पड़ा है।

कृतज्ञ 3.0

खबरों में क्यों

फसलों के तेजी से प्रजनन को बढ़ावा देने के लिए स्पीड ब्रीडिंग द्वारा हैकथॉन 3.0 "कृतज्ञ" का आयोजन

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) अपनी राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना और फसल विज्ञान प्रभाग के सहयोग से ष्फसल सुधार के लिए गति प्रजननष् को बढ़ावा देने के लिए हैकथॉन 3.0 ष्कृतज्ञष् की मेजबानी कर रहा है।
- इस पहल का उद्देश्य फसल क्षेत्र को रोजगारपरकता, उद्यमशीलता, नवाचार और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देकर वांछित तत्काल परिणाम प्राप्त करने में मदद करना है।
- इसके अतिरिक्त, यह राष्ट्र को अधिक तकनीकी रूप से उन्नत समाधान अपनाने के लिए प्रोत्साहित करेगा।
- आवेदकों को फसल सुधार के साथ बहुत विशिष्ट समस्याओं के संभावित समाधान प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है, उदाहरण के लिए, तेजी से पीढ़ी की उन्नति सुविधाओं के लिए कम खर्चीला और अधिक कुशल सामग्री, बीमारियों के लिए सटीक और सुविधाजनक निदान उपकरण, कीट, उत्पाद गुणवत्ता, डिजिटल प्रजनन प्लेटफॉर्म और अन्य आवेदक विशिष्ट क्षेत्र या राज्य के आस-पास की किस्मों, बीजों के साथ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।
- KRITAGYA की परिभाषा है: कृषि के लिए KRI अर्थात् कृषि, TA के लिए जंदपा अर्थ प्रौद्योगिकी और GYA के लिए GYA अर्थ ज्ञान, डॉ राकेश चंद्र अग्रवाल, उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा) और राष्ट्रीय निदेशक राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (NAHEP) कहते हैं।
- देश में किसी भी विश्वविद्यालय या तकनीकी संस्थान के छात्र, संकाय और उद्यमी अधिकतम चार सदस्यों के समूह के रूप में प्रतियोगिता में भाग लेने के पात्र हैं। छात्र भाग ले सकते हैं और INR 5 लाख तक जीत सकते हैं।
- फसल सुधार के लिए स्पीड ब्रीडिंग के समाधान मुख्य फोकस होंगे।
- बढ़ती मानव आबादी और बदलते परिवेश के कारण वैश्विक खाद्य सुरक्षा एक प्रमुख चिंता का विषय बन गई है, क्योंकि कई महत्वपूर्ण फसलों के सुधार की वर्तमान दर भविष्य की मांग को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।
- पीढ़ी समय को कम करने और प्रति वर्ष फसलों की कई पीढ़ियों के लिए अनुमति देने के लिए इस दिशा में एक समाधान के रूप में स्पीड ब्रीडिंग का व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है।
- शोधकर्ता अब एक एकीकृत रणनीति का उपयोग कर रहे हैं जो प्रजनन क्षमता को बढ़ाने के लिए समकालीन पादप प्रजनन और आनुवंशिक इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकियों के साथ गति प्रजनन को जोड़ती है।
- पोषण सुरक्षा और टिकाऊ कृषि की स्थापना के लिए प्रजनन चक्र को कम करके, गति प्रजनन एक व्यवहार्य तकनीक है जो खाद्य और औद्योगिक फसल सुधार के लक्ष्यों को तेज करती है।
- यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप भी है, जो छात्रों, शिक्षकों, उद्यमियों, नवप्रवर्तकों और अन्य लोगों को फसल सुधार का समर्थन करने के लिए अत्याधुनिक तरीकों और तकनीकी प्रगति का प्रदर्शन करने का मौका देगा।

हैकथॉन 1.0 और 2.0 के बारे में

- महिलाओं के अनुकूल उपकरणों पर विशेष जोर देने के साथ कृषि मशीनीकरण को बढ़ाने के लिए संभावित प्रौद्योगिकी समाधानों को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2020 में हैकाथॉन 1.0 (फार्म मशीनीकरण में नवाचार को बढ़ावा देना) का आयोजन किया गया था। इसमें 784 से अधिक टीमों (2479 प्रतिभागियों) ने भाग लिया।

- राष्ट्रीय स्तर के कृतज्ञ एगटेक हैकाथॉन 1.0 (2020-21) के लिए चयनित टीमों में से 4 टीमों को 9 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया। Hackthon-2.0 (इनोवेशन फॉर प्रिसिजन एंड इकनॉमिक एनिमल फार्मिंग) का आयोजन वर्ष 2021 में किया गया था।
- विश्व बैंक (डब्ल्यूबी) की मदद से, आईसीएआर ने नवंबर 2017 में एनएएचईपी लॉन्च किया। एनएएचईपी का व्यापक लक्ष्य भाग लेने वाले कृषि विश्वविद्यालयों (एयू) और आईसीएआर को छात्रों को अधिक प्रासंगिक और बेहतर शिक्षा प्राप्त करने में मदद करना है।

भारत भेदभाव रिपोर्ट-2022

खबरों में क्यों

ऑक्सफैम इंडिया ने हाल ही में 'इंडिया डिस्क्रिमिनेशन रिपोर्ट 2022' जारी की है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- ऑक्सफैम इंडिया की भेदभाव रिपोर्ट 2022 महिलाओं के कम वेतन के लिए "सामाजिक और नियोक्ताओं के पूर्वाग्रहों" को जिम्मेदार ठहराती है।
- एक नई रिपोर्ट कहती है कि भारतीय महिलाएं नौकरी के बाजार में भेदभाव का सामना करती हैं और समान योग्यता और अनुभव होने पर भी पुरुषों की तुलना में कम कमाती हैं।

रिपोर्ट की मुख्य बातें-

- रिपोर्ट के अनुसार, भारत में पुरुषों और महिलाओं के बीच रोजगार के 98 प्रतिशत अंतर का कारण लैंगिक भेदभाव है।
- रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि भारत में महिलाओं की समान शैक्षिक योग्यता और पुरुषों के समान कार्य अनुभव के बावजूद सामाजिक और नियोक्ताओं के पूर्वाग्रहों के कारण श्रम बाजार में भेदभाव किया जाएगा।
- रिपोर्ट से पता चलता है कि भेदभाव के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम बाजार में महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली रोजगार असमानता का 100 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 98 प्रतिशत है।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि स्व-नियोजित पुरुष महिलाओं की तुलना में 2.5 गुना अधिक कमाते हैं, जिनमें से 83 प्रतिशत लिंग आधारित भेदभाव के लिए जिम्मेदार हैं और पुरुष और महिला आकस्मिक वेतन श्रमिकों की कमाई के बीच 95 प्रतिशत अंतर भेदभाव के कारण है।
- रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि पुरुषों और महिलाओं की कमाई में 93 प्रतिशत अंतर भेदभाव के कारण है।
- इसमें कहा गया है कि ग्रामीण स्व-नियोजित पुरुष ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की तुलना में दोगुना कमाते हैं। पुरुष कैजुअल वर्कर महिलाओं की तुलना में प्रति माह 3,000 रुपये अधिक कमाते हैं, जिसमें से 96 प्रतिशत भेदभाव के लिए जिम्मेदार हैं।
- रिपोर्ट में लागू अकादमिक रूप से मान्यता प्राप्त सांख्यिकीय मॉडल अब श्रम बाजार में महिलाओं के साथ भेदभाव का आकलन करने में सक्षम है।
- वेतनभोगी महिलाओं के लिए कम वेतन 67 प्रतिशत भेदभाव और 33 प्रतिशत शिक्षा और कार्य अनुभव की कमी के कारण है।
- लिंग और अन्य सामाजिक श्रेणियों के लिए श्रम बाजार में असमानता केवल शिक्षा या कार्य अनुभव की खराब पहुंच के कारण नहीं बल्कि भेदभाव के कारण है।
- यह पाया गया है कि देश में महिलाओं की कम श्रम शक्ति भागीदारी दर (LFPR) के पीछे भेदभाव एक प्रेरक कारक है।
- ये निष्कर्ष 2004-05 से 2019-20 तक रोजगार और श्रम पर सरकारी आंकड़ों पर आधारित हैं।

- ऑक्सफैम इंडिया रिपोर्ट में रोजगार-बेरोजगारी (2004-05) पर 61वें दौर के राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएस) के आंकड़ों, 2018-19 और 2019-20 में आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण और अखिल भारतीय ऋण और निवेश सर्वेक्षण के यूनिट स्तर के आंकड़ों को संदर्भित किया गया है।
- ऑक्सफैम इंडिया एक गैर-लाभकारी संगठन है जो भारत में बाल शिक्षा, महिलाओं को सशक्त बनाने और असमानता के खिलाफ लड़ने के लिए काम कर रहा है।

Method of computation

The labour force participation rate is calculated as follows:

$$\text{LFPR}(\%) = \frac{\text{Labour force}}{\text{Working-age population}} \times 100$$

$$\text{LFPR}(\%) = \frac{\text{Persons employed + persons unemployed}}{\text{Working-age population}} \times 100$$

श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) क्या है?

- यह उस आबादी का प्रतिशत है जो या तो काम कर रही है (रोजगार कर रही है) या काम की तलाश में है (बेरोजगार)।
- अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार, LFPR एक 'देश की कामकाजी उम्र की आबादी के अनुपात का एक उपाय है जो या तो काम करके या काम की तलाश में श्रम बाजार में सक्रिय रूप से संलग्न है।
- लिंग और आयु वर्ग द्वारा श्रम बल (पहले आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या के रूप में जाना जाता था) का टूटना एक देश के भीतर श्रम बल के वितरण का एक प्रोफाइल देता है।
- सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के अनुसार, 2020-21 में भारत में महिलाओं के लिए LFPR केवल 25.1% था।
- यह विश्व बैंक के नवीनतम अनुमानों के अनुसार ब्राजील, रूस, चीन और दक्षिण अफ्रीका से काफी कम है। 2021 में दक्षिण अफ्रीका में महिलाओं के लिए LFPR 46% था।

आधुनिक दासता

खबरों में क्यों

किसी भी दिन आधुनिक दासता की स्थितियों में 50 मिलियन लोग होते हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- किसी भी दिन लगभग 49.6 मिलियन लोग आधुनिक दासता में फंस जाते हैं। 2021 ग्लोबल एस्टीमेट्स ऑफ मॉडर्न स्लेवरी द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार, उन्हें या तो उनकी इच्छा के विरुद्ध काम करने के लिए मजबूर किया जाता है या वे शादी में मजबूर होते हैं।
- आधुनिक दासता में 27.6 मिलियन लोगों के लिए जबरन श्रम और 22 मिलियन के लिए जबरन विवाह के लिए जिम्मेदार था। नए अनुमानों से पता चलता है कि पिछले पांच वर्षों में जबरन मजदूरी और जबरन शादी में काफी वृद्धि हुई है।
- इंटरनेशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन (ILO), वॉक फ्री और इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन फॉर माइग्रेशन की रिपोर्ट में पाया गया कि 2016 के वैश्विक अनुमानों की तुलना में 2021 में 10 मिलियन अधिक लोग आधुनिक गुलामी में फंस गए। महिलाएं और बच्चे विशेष रूप से कमजोर थे।

- एशिया-प्रशांत क्षेत्र में आधुनिक दासता में लोगों की संख्या सबसे अधिक थी और अरब राज्यों में सबसे अधिक प्रचलन था। लेकिन कोई भी क्षेत्र, विकसित या विकासशील, अभ्यास से मुक्त नहीं था।
- COVID-19 महामारी ने आधुनिक दासता के जोखिम को बढ़ा दिया था और 2025 तक बच्चों के बीच इसे समाप्त करने और 2030 तक सार्वभौमिक रूप से इसे समाप्त करने का लक्ष्य और भी कठिन बना दिया था।

जबरन मजदूरी और शादी

- आधुनिक दासता में दो प्रमुख घटक शामिल हैं - जबरन श्रम और जबरन विवाह।
- ILO जबरन श्रम कन्वेंशन, 1930 में जबरन श्रम को "सभी कार्य या सेवा के रूप में वर्णित किया गया है जो किसी भी व्यक्ति से किसी भी दंड के खतरे के तहत लिया जाता है और जिसके लिए उक्त व्यक्ति ने स्वेच्छा से खुद को पेश नहीं किया है।"
- किसी भी दिन जबरन मजदूरी की स्थिति में 27.6 मिलियन लोगों में से 11.8 मिलियन महिलाएं और लड़कियां हैं जबकि 3.3 मिलियन बच्चे हैं।
- एशिया और प्रशांत क्षेत्र में 15.1 मिलियन लोग जबरन मजदूरी करते हैं, इसके बाद यूरोप और मध्य एशिया में 4.1 मिलियन लोग रहते हैं; 3.8 मिलियन के साथ अफ्रीका; 3.6 मिलियन के साथ अमेरिका और 0.9 मिलियन के साथ अरब राज्य।
- आधुनिक दासता के 2021 के वैश्विक अनुमानों से पता चला है कि सभी बंधुआ श्रम का 86 प्रतिशत निजी एजेंटों द्वारा लगाया गया था - 63 प्रतिशत जबरन श्रम शोषण में और 23 प्रतिशत जबरन व्यावसायिक यौन शोषण में। शेष 14 प्रतिशत के लिए राज्य द्वारा लगाए गए जबरन श्रम का हिसाब था।
- प्रवासी कामगार, जो कानून द्वारा संरक्षित नहीं हैं और अपने अधिकारों का प्रयोग करने में असमर्थ हैं, अन्य कामगारों की तुलना में बंधुआ मजदूरी के अधिक जोखिम का सामना करते हैं।
- जबरन विवाह उन स्थितियों को संदर्भित करता है जहां एक व्यक्ति को उनकी सहमति के बिना शादी करने के लिए मजबूर किया जाता है। बाल विवाह को भी जबरन विवाह का एक रूप माना जाता है। 2016 और 2021 के बीच जबरन शादी में रहने वालों की संख्या में 6.6 मिलियन की वृद्धि हुई।
- जबरन विवाह में वृद्धि को आंशिक रूप से जटिल संकटों द्वारा समझाया जा सकता है - COVID-19 महामारी, संघर्ष और जलवायु परिवर्तन।
- इन संकटों के कारण अत्यधिक गरीबी, निम्न शिक्षा दर, संकटपूर्ण प्रवास में वृद्धि और लिंग आधारित हिंसा की रिपोर्ट में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ये कारक जबरन विवाह की बढ़ती संवेदनशीलता से जुड़े हैं।
- सभी जबरदस्ती विवाह प्रशांत क्षेत्र के लगभग दो-तिहाई हैं। इस संख्या के बाद अफ्रीका में 14.5 प्रतिशत (3.2 मिलियन) और 10.4 प्रतिशत यूरोप और मध्य एशिया (2.3 मिलियन) हैं।
- COVID-19 के कारण हर क्षेत्र में जबरन विवाह का खतरा बढ़ गया है। अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भारत, इंडोनेशिया, सूडान, मिस्र, यमन, जॉर्डन, सेनेगल, युगांडा और कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में बाल और जबरन विवाह में वृद्धि दर्ज की गई है।
- एक बार जबरन शादी करने के लिए, यौन शोषण, घरेलू दासता और हिंसा और घर के अंदर और बाहर दोनों जगह जबरन मजदूरी के अन्य रूपों सहित आगे शोषण का अधिक जोखिम होता है।
- आधुनिक दासता के 2021 के वैश्विक अनुमान में कहा गया है कि जबरन श्रम से मुक्त दुनिया के लिए श्रमिकों की सामूहिक रूप से संबद्धता और सौदेबाजी की स्वतंत्रता अनिवार्य थी।
- विश्व की 40 प्रतिशत से अधिक आबादी उन देशों में रहती है, जिन्होंने या तो संघ की स्वतंत्रता और संगठन के अधिकार के संरक्षण कन्वेंशन 1948 (नं 87) या आईएलओ को संगठित करने और सामूहिक सौदेबाजी का अधिकार 1949 (नं 98) की पुष्टि नहीं की है।
- एक ट्रेड यूनियन स्थापित करने और उसमें शामिल होने और सामूहिक रूप से सौदेबाजी करने के सार्वभौमिक अधिकारों पर और प्रतिबंध कई देशों में कानून या व्यवहार में बने हुए हैं।

पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया

खबरों में क्यों

भारत ने पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (PFI) इस्लामिक समूह और उसके सहयोगियों को गैरकानूनी घोषित किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- गृह मंत्रालय ने मंगलवार को एक अधिसूचना के माध्यम से पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) और उसके सहयोगियों को आतंकवादी समूहों और विध्वंसक गतिविधियों के लिंक के लिए पांच साल के लिए प्रतिबंधित कर दिया। केंद्र ने अधिसूचना में कहा कि उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और गुजरात की राज्य सरकारों ने प्रतिबंध की सिफारिश की थी।
- पीएफआई इस प्रकार 'प्रतिबंधित' सूची में लश्कर, जेईएम, सिमी, अल कायदा और कई अन्य समूहों में शामिल हो जाता है।
- प्रतिबंध के कारणों की व्याख्या करते हुए, एमएचए अधिसूचना में कहा गया है कि पीएफआई और उसके सहयोगी देश की अखंडता, संप्रभुता और सुरक्षा के लिए हानिकारक गतिविधियों में लिप्त हैं।

पीएफआई पर प्रतिबंध लगाने के लिए केंद्र ने अपनी अधिसूचना में क्या उद्धृत किया है:

1. सहयोगियों पर भी प्रतिबंध

- आठ अन्य संगठन, जिनके स्पष्ट रूप से पीएफआई से संबंध हैं और जो इसके सहयोगी के रूप में कार्य कर रहे हैं, को भी गृह मंत्रालय के आदेश द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया है। ये हैं: रिहैब इंडिया फाउंडेशन (आरआईएफ), कैंपस फ्रंट ऑफ इंडिया (सीएफआई), ऑल इंडिया इमाम काउंसिल (एआईआईसी), नेशनल कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडिया।
- मानवाधिकार संगठन (एनसीएचआरओ), राष्ट्रीय महिला मोर्चा, कनिष्ठ मोर्चा, एम्पावर इंडिया फाउंडेशन और पुनर्वास फाउंडेशन, केरल।

2. एक समुदाय को कट्टरपंथी बनाने के प्रयास

- पीएफआई और उसके सहयोगी असुरक्षा की भावना को बढ़ावा देकर एक समुदाय के कट्टरपंथ को बढ़ाने के लिए गुप्त रूप से काम कर रहे हैं, एमएचए अधिसूचना में कहा गया है। यह इस तथ्य से पैदा होता है कि कुछ पीएफआई कैडर अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी संगठनों में शामिल हो गए हैं।
- पीएफआई पर देश की अखंडता, संप्रभुता और सुरक्षा के लिए हानिकारक गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाया गया है, जिसमें शांति और सांप्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ने की संभावना है।

3. ISIS के लिए लिंक

- गृह मंत्रालय ने अपनी प्रतिबंध अधिसूचना में आईएसआईएस जैसे अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी समूहों के साथ पीएफआई के संबंधों का हवाला दिया है।
- MHA ने कहा, PFI के कैडरों ने सीरिया, इराक और अफगानिस्तान में आतंकी गतिविधियों में भाग लिया है, और उनमें से कई मारे गए या गिरफ्तार किए गए।

4. अन्य आतंकी समूहों से संबंध

- एमएचए ने कहा, पीएफआई के कुछ संस्थापक सदस्य स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) के नेता हैं और पीएफआई के जमात-उल-मुजाहिदीन बांग्लादेश (जेएमबी) के साथ संबंध हैं, दोनों ही प्रतिबंधित संगठन हैं, । ISIS जैसे वैश्विक आतंकवादी समूहों के साथ इसके संबंध भी सामने आए हैं।

5. आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा

- पीएफआई भारत के संवैधानिक प्राधिकार के प्रति अनादर दिखाता है, और बाहर से धन और वैचारिक समर्थन के साथ, यह आंतरिक सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है, अधिसूचना में कहा गया है।
- हालांकि इसने किसी ऐसे देश का नाम नहीं लिया जहां से पीएफआई को कथित तौर पर समर्थन या धन प्राप्त हुआ था।

6. हिंसक कृत्यों में शामिल होना

- जांच से पता चला है कि पीएफआई के पदाधिकारियों की हत्या, शरीर के अंगों को काटने और प्रमुख लोगों या सार्वजनिक संपत्ति को निशाना बनाने के लिए विस्फोटक प्राप्त करने जैसे कृत्यों में शामिल है।
- इस तरह की गतिविधियों का एकमात्र उद्देश्य सार्वजनिक शांति और शांति भंग करना था, अधिसूचना में कहा गया है। एमएचए केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक में कई हत्याओं का हवाला देता है जिसमें पीएफआई के लोग कथित रूप से शामिल थे।

7. प्रमुख घटनाएं पीएफआई पर आरोपित

- एक परीक्षा पत्र में 'विवादास्पद प्रश्न शामिल करने' के लिए 2010 में केरल कॉलेज के एक प्रोफेसर की हथेली काटने का आरोप पीएफआई कैडरों पर लगाया गया था।
- वे संजीत (केरल, नवंबर, 2021), वी रामलिंगम, (तमिलनाडु, 2019), नंदू, (केरल, 2021), अभिमन्यु (केरल, 2018), बिबिन (केरल, 2017) की हत्याओं में भी आरोपी थे। शरथ (कर्नाटक, 2017), आर रुद्रेश (कर्नाटक, 2016), प्रवीण पुजारी (कर्नाटक, 2016), शशि कुमार (तमिलनाडु, 2016) और प्रवीण नेट्टारू (कर्नाटक, 2022)।

8. संदिग्ध वित्त पोषण

- पीएफआई एक अच्छी तरह से तैयार की गई लेयरिंग के हिस्से के रूप में बैंकिंग चैनलों, हवाला और

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

दान के माध्यम से भारत और विदेशों से धन जुटा रहा था और इन फंडों को वैध के रूप में पेश करने के लिए कई खातों के माध्यम से एकीकृत कर रहा था।

- MHA ने कहा, अंततः धन का उपयोग भारत में विभिन्न आपराधिक, गैरकानूनी और आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए किया गया था ।
- पीएफआई की ओर से अपने कई बैंक खातों के संबंध में जमा के स्रोत खाताधारकों के वित्तीय प्रोफाइल द्वारा समर्थित नहीं थे।

9. फंड कलेक्टर के रूप में सहयोगी

- पीएफआई ने समाज के विभिन्न वर्गों जैसे युवाओं, छात्रों, महिलाओं, इमामों, वकीलों या कमजोर वर्गों के बीच अपनी पहुंच बढ़ाने के उद्देश्य से कई मोर्चों का निर्माण किया है। एमएचए ने कहा कि इरादा सदस्यता का विस्तार, प्रभाव बढ़ाने और धन जुटाने की क्षमता है।
- मोर्चों का पीएफआई के साथ हब के रूप में कार्य करने और गैरकानूनी गतिविधियों के लिए अपनी क्षमता को मजबूत करने के लिए अपने सहयोगियों की व्यापक पहुंच और धन जुटाने की क्षमता का उपयोग करने के साथ एक 'हब और स्पोक' संबंध है। केंद्र ने आगे कहा कि ये मोर्चे 'जड़ों और केशिकाओं' के रूप में कार्य करते हैं, जिसके माध्यम से पीएफआई को खिलाया और मजबूत किया जाता है।

जलदूत ऐप

खबरों में क्यों

देश भर में भूजल स्तर पर कब्जा करने के लिए केंद्र ने जलदूत ऐप लॉन्च किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- केंद्रीय ग्रामीण विकास और इस्पात राज्य मंत्रालय ने मंगलवार को एक समर्पित जलदूत ऐप और इसका ई-ब्रोशर लॉन्च किया, जिसका उद्देश्य देश भर में भूजल स्तर पर डेटा को केंद्रीकृत करना है।
- प्रत्येक गांव में साल में दो बार खुले कुओं की माप करने के लिए जलदूत नाम के अधिकारियों को नियुक्त किया गया है।
- वाटरशेड विकास को बढ़ावा देने के बावजूद वनीकरण जल निकाय विकास और नवीकरण वर्षा जल संचयन पहल जैसे देश के विभिन्न हिस्सों में भूजल स्तर कम हो गया है, यह ऐप देश भर में जल तालिकाओं को देखने में सुविधा प्रदान करेगा और परिणामी डेटा का उपयोग ग्राम पंचायत विकास योजना और महात्मा गांधी नरेगा योजना के लिए किया जा सकता है।
- जलदूत मैन्युअल रूप से प्रत्येक गांव में 2-3 कुओं में जल स्तर को मापेंगे और ऐप पर जियो-टैग की गई छवियों को अपलोड करेंगे, मंत्रालय ने कहा कि यह ऐप ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में काम करेगा और मोबाइल पर संग्रहीत डेटा के साथ सिंक्रनाइज होगा ऐप जब भी कनेक्टिविटी क्षेत्र में आता है।
- मंत्रालय ने कहा कि जलदूत वेबसाइट पर जल स्तर, मानसून और पंजीकृत उपयोगकर्ताओं की रिपोर्ट है।
- जलदूत द्वारा दर्ज किए गए डेटा को विभिन्न हितधारकों के विश्लेषण और लाभ के लिए राष्ट्र जल सूचना विज्ञान केंद्र (NWIC) डेटाबेस के साथ एकीकृत किया जाएगा।
- ऐप को केंद्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्रालयों द्वारा विकसित किया गया है।
- जल स्तर का मैनुअल माप हर साल 1 मई से 31 मई और 1 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक होगा।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

7 अंतर्राष्ट्रीय संबंध

जैव विविधता संरक्षण

खबरों में क्यों

कैबिनेट ने जैव विविधता संरक्षण पर नेपाल के साथ समझौता ज्ञापन को मंजूरी दी।

महत्वपूर्ण बिंदु

- प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने दोनों देशों के बीच वनों, वन्यजीवों, पर्यावरण, और जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए जैव विविधता संरक्षण के क्षेत्र में भारत और नेपाल के बीच समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर करने को मंजूरी दी है।
- विज्ञप्ति के अनुसार, समझौता ज्ञापन गलियारों और परस्पर जोड़ने वाले क्षेत्रों की बहाली और ज्ञान और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने सहित जंगलों, वन्य जीवन, पर्यावरण, जैव विविधता संरक्षण और जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में पार्टियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में मदद करेगा।
- भारत दुनिया के 17 विशाल विविधता वाले देशों में से एक है और यह वन्यजीव आबादी और जैव विविधता के संरक्षण के लिए कई कदम उठा रहा है।
- भारत सरकार ने देश में और पड़ोसी देशों की सीमाओं के पार विशाल वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण के लिए कई कानूनों, नीतिगत पहलों और कृत्यों को अपनाया है।
- सीमा पार संरक्षित क्षेत्र एक पारिस्थितिक संरक्षित क्षेत्र है जो एक से अधिक देशों या उप-राष्ट्रीय इकाई की सीमाओं तक फैला है।

भारत ने नेपाल के साथ टीपीए साझा किया

- कंचनजंगा संरक्षण क्षेत्र (KCA)
- तराई आर्क लैंडस्केप
- सेक्रेड हिमालयन लैंडस्केप (नेपा, सिक्किम, भूटान)

2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता: भारत और जापान

खबरों में क्यों

भारत और जापान के बीच 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता सम्पन्न हुई।

महत्वपूर्ण बिंदु

- टोक्यो और नई दिल्ली दोनों में शीर्ष नेतृत्व से महत्वपूर्ण व्यक्तिगत अभियान और प्रतिबद्धता के साथ, पिछले दशक में भारत-जापान संबंध मजबूती से मजबूत हुए हैं।
- दोनों देशों ने अपनी 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता टोक्यो में आयोजित की जिसके लिए भारत के विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह दोनों ने जापान की यात्रा की।
- दिवंगत जापानी प्रधान मंत्री शिंजो अबे भारत-जापान संबंधों को पोषित करने में एक प्रेरक शक्ति थे, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि प्रधान मंत्री किशिदा फुमियो के तहत भी संबंध उसी उत्साह के साथ जारी रहेंगे।

RAO'S ACADEMY

- 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता भारत-जापान संबंधों में गति को बनाए रखने के लिए दोनों पक्षों की प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है।
- चीन के उदय के सामरिक परिणामों सहित भारत-प्रशांत में खतरों की तेजी से बदलती प्रकृति, इस गति को आगे बढ़ाने के लिए अनिवार्य हैं।
- दोनों देश चीन की बढ़ती सैन्य ताकत को लेकर लगातार चिंतित हैं।
- दोनों पक्षों ने विवादों को निपटाने में बल प्रयोग की निंदा की।
- जापान और चीन के बीच विवाद दक्षिण चीन सागर के लगभग सभी ऊर्जा-समृद्ध जल पर चीन के दावों में निहित है, जहां उसने कृत्रिम द्वीपों पर सैन्य चौकियां स्थापित की हैं।
- संघर्ष का बिंदु पूर्वी चीन सागर में है, जहां चीन निर्जन जापानी-प्रशासित द्वीपों के एक समूह का दावा करता है।
- भारत, जिसने पिछले सप्ताह अपना पहला स्वदेश निर्मित विमानवाहक पोत शुरू किया था, चीनी सेना के साथ उनकी सुदूर हिमालयी सीमा पर गतिरोध में शामिल है।
- जापान और भारत, ऑस्ट्रेलिया और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ, देशों के क्वाड समूह के सदस्य हैं, जो अंतर्संचालनीयता प्रदर्शित करने के लिए हिंद-प्रशांत क्षेत्र में वार्षिक नौसैनिक अभ्यास करते हैं।
- व्यायाम: लड़ाकू व्यायाम (वायु सेना); धर्म संरक्षक (संयुक्त सैन्य अभ्यास); JIMEX (नौसेना) और मालाबार (भारत-अमेरिका-जापान-ऑस्ट्रेलिया समुद्री अभ्यास)।
- भारत में अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और रूस सहित बहुत कम देशों के साथ बातचीत का '2+2' मंत्रिस्तरीय प्रारूप है।

सेतु

खबरों में क्यों

सरकार ने भारतीय स्टार्टअप को अमेरिकी निवेशकों से जोड़ने की पहल शुरू की।

महत्वपूर्ण बिंदु

- वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने भारत में स्टार्टअप को यूएस-आधारित निवेशकों से जोड़ने के लिए यहां एक पहल - सेतु (परिवर्तन और अपस्किलिंग में उद्यमियों का समर्थन) शुरू की है।
- SETU को अमेरिका में स्थित उन सलाहकारों के बीच भौगोलिक बाधाओं को तोड़ने के लिए डिजाइन किया गया है जो भारत में उद्यमिता और सूर्योदय स्टार्टअप में निवेश करने के इच्छुक हैं।
- कार्यक्रम भारत में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित विशिष्ट मुद्दों पर केंद्रित बातचीत के दौरान शुरू किया

गया था।

- बैठक में सैन फ्रांसिस्को के खाड़ी क्षेत्र में सफल प्रवासी सदस्यों द्वारा शुरुआती चरण के भारतीय स्टार्टअप के घरेलू समावेश और परामर्श को प्रोत्साहित करने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- यह पहल भारत में स्टार्टअप्स को यूएस-आधारित निवेशकों और स्टार्टअप इकोसिस्टम लीडर्स को भारत में फंडिंग, मार्केट एक्सेस और कमर्टअप सहित विभिन्न क्षेत्रों में मेंटरशिप और सहायता के साथ जोड़ेगी।
- स्टार्टअप इंडिया पहल MAARG (मेंटरशिप, एडवाइजरी, असिस्टेंस, रेजिलिएशन, एंड ग्रोथ) प्रोग्राम के तहत मेंटरशिप पोर्टल के माध्यम से हितधारकों के बीच बातचीत का समर्थन किया जाएगा, जो भारत में स्टार्टअप्स के लिए सिंगल-स्टॉप सॉल्यूशन फाइंडर है।
- मार्ग दुनिया भर के सलाहकारों से आवेदन आमंत्रित कर रहा है। अब तक, दुनिया भर में 200 से अधिक संरक्षक MAARG पर शामिल हो चुके हैं।
- मार्ग भारत में स्टार्टअप के लिए एकल-स्टॉप समाधान खोजक है।

भारत-बांग्लादेश

खबरों में क्यों

कुशियारा नदी (बराक नदी का वितरण) के पानी के बंटवारे पर एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए, जो असम और फिर बांग्लादेश से होकर बहती है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- 26 वर्षों में पहली बार, भारत और बांग्लादेश एक महत्वपूर्ण ट्रांसबाउंड्री नदी, कुशियारा के पानी को साझा करने के लिए सहमत हुए, जबकि तीस्ता नदी के पानी को साझा करने के लिए एक लंबे समय से विलंबित समझौते पर बातचीत, जो बांग्लादेश की प्रधान मंत्री शेख हसीना के लिए राजनीतिक रूप से संवेदनशील हैं अभी भी चल रहा है।
- कुशियारा समझौता क्या है?
- समझौते के तहत, बांग्लादेश कुशियारा से 153 क्यूसेक (घन फीट प्रति सेकंड) पानी निकाल सकेगा जिससे सिलहट के किसानों के लिए जल संकट का समाधान हो जाएगा।
- सिलहट में रहीमपुर नहर परियोजना के माध्यम से कुशियारा का पानी डाला जाएगा।
- रहीमपुर नहर कुशियारा से क्षेत्र को पानी की एकमात्र आपूर्तिकर्ता है।

भारत और बांग्लादेश के बीच जल विवाद

- तीस्ता नदी विवाद और गंगा नदी विवाद भारत और बांग्लादेश के बीच लंबे समय से चले आ रहे दो मुख्य जल संघर्ष हैं। दोनों नदियाँ दोनों देशों में मछुआरों, किसानों और नाविकों के लिए पानी की महत्वपूर्ण आपूर्ति हैं।
- चूंकि पवित्र नदी भारत से बांग्लादेश में बहती है, गंगा नदी विवाद पिछले 35 वर्षों से दोनों देशों के बीच विवाद का स्रोत रहा है। कई दौर की द्विपक्षीय वार्ता विफल होने के बावजूद प्रस्तावित पानी के बंटवारे का कोई दीर्घकालिक समाधान नहीं है।

- अगले 30 वर्षों के लिए जल बंटवारे की व्यवस्था स्थापित करने के लिए 1996 में भारतीय प्रधान मंत्री एच डी देवेगौड़ा और बांग्लादेशी समकक्ष शेख हसीना के बीच एक संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे। यह सौदा समाप्त होने वाला है।
- दोनों देशों के बीच तीस्ता जल-बंटवारे की असहमति, जो 1986 से भारत और बांग्लादेश के बीच शत्रुता का स्रोत रही है, एक संधि पर हस्ताक्षर करके अभी तक हल नहीं हुई है।

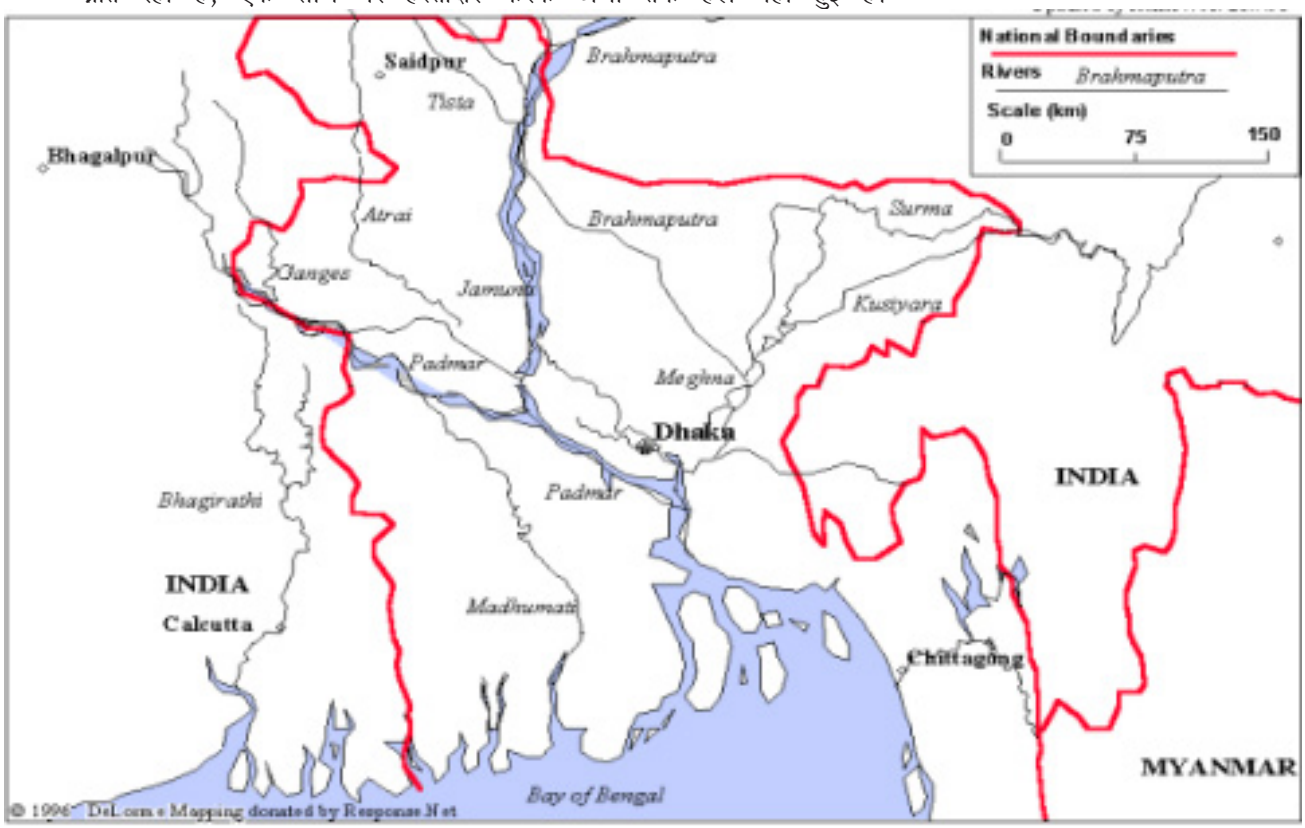

अब्राहम समझौता

खबरों में क्यों

अब्राहम समझौता दो साल बाद करता है; महत्वाकांक्षा से वास्तविकता तक।

महत्वपूर्ण बिंदु

- दो साल पहले, इजराइल, संयुक्त अरब अमीरात और बहरीन ने संयुक्त राज्य अमेरिका की मध्यस्थता वाले अब्राहम समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- मध्य पूर्व में शांति और समृद्धि के लिए नई आशा को बढ़ावा देते हुए यह लोगों और राष्ट्रों के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था। यह भारत और इसके फलते-फूलते व्यापारिक समुदाय के लिए भी रोमांचक अवसर लेकर आया, जो देशों के साथ मजबूत संबंध और जुड़ाव का आनंद लेते हैं।

अब्राहम समझौता क्या है?

संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा ब्रोकर्ड, अब्राहम एकॉर्ड औपचारिक राजनयिक संबंध स्थापित करने के लिए संयुक्त अरब अमीरात और इजराइल के बीच एक सामान्यीकरण समझौता है, जो बाद में बहरीन, सूडान और मोरक्को से जुड़ गया और बदले में इजराइल कब्जे वाले वेस्ट बैंक के कुछ हिस्सों को अपनी योजनाओं को निलंबित कर देगा, जिससे बन जाएगा इजरायल के साथ राजनयिक और आर्थिक संबंध स्थापित करने वाला पहला खाड़ी देश।

- संयुक्त अरब अमीरात, मिस्र (1979 में) और जॉर्डन (1994) के बाद इजरायल को मान्यता देने वाला तीसरा

अरब राष्ट्र बना।

- अब्राहम समझौते राष्ट्रों के बीच संबंधों के सामान्यीकरण की दिशा में सहयोग का एक उत्पाद थे, जो इजरायल को खाड़ी देशों के करीब लाते थे, जो साझा मूल्यों और आपसी हितों को साझा करते थे, और शांति पहल को आगे बढ़ाते थे।
- जैसे-जैसे दुनिया अब्राहम समझौते पर हस्ताक्षर की दूसरी वर्षगांठ मना रही है, इस शांति के लाभ लगातार बढ़ते जा रहे हैं।
- तेजी से अब्राहम समझौते लोगों से लोगों के बीच संबंधों और व्यापार के अवसरों को गहराते हुए देख रहे हैं।
- स्वच्छ ऊर्जा, स्वास्थ्य, नवाचार, प्रौद्योगिकी, कृषि, जल, व्यापार, पर्यटन, स्थिरता और बहुत कुछ जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नए संयुक्त उद्यम शुरू किए जा रहे हैं।
- देशों ने विश्वविद्यालयों के बीच अकादमिक सहयोग पैदा करने, कला के क्षेत्र में सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और साझा इतिहास और विरासत के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए भी काम किया है।
- अंततः, अब्राहम समझौते का उद्देश्य आपसी समझ और लोगों के बीच घनिष्ठ मित्रता को और मजबूत करना है।
- क्षेत्रीय संपर्क को बढ़ावा देने से भारत के लोगों को भी लाभ हुआ है। पूरे खाड़ी में संपन्न भारतीय प्रवासी अब सीधे संयुक्त अरब अमीरात से इजराइल या इजराइल से बहरीन के लिए उड़ान भर सकते हैं।
- भारतीय छात्र विश्वविद्यालयों तक आसान पहुंच प्राप्त करने और अंतरराष्ट्रीय अध्ययन कार्यक्रमों की खोज करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा कर रहे हैं।
- समझौते ने अधिक क्षेत्रीय और बहुराष्ट्रीय सहयोग का मार्ग प्रशस्त किया है। आर्थिक अवसरों का विस्तार भारत तक जारी है, और पहले से ही भारतीय निजी क्षेत्र के साथ संयुक्त अरब अमीरात, इजराइल, बहरीन और संयुक्त राज्य अमेरिका की कंपनियों के बीच प्रमुख वाणिज्यिक सहयोग देखा है।
- सरकारों के बीच उच्च-स्तरीय आर्थिक सहयोग का एक ठोस उदाहरण I2U2 समूह का गठन है, जिसे इजराइल, भारत, संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा स्थापित किया गया है।
- सबसे पहले अब्राहम समझौते से संभव हुआ, I2U2 समूह जल, ऊर्जा, परिवहन, अंतरिक्ष, स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा में संयुक्त निवेश पर ध्यान केंद्रित करेगा।
- भारत में दो प्रमुख परियोजनाओं के माध्यम से I2U2 भागीदार निजी क्षेत्र की पूंजी और विशेषज्ञता को जुटाएंगे

ताकि बुनियादी ढांचे के डीकार्बोनाइज उद्योगों को सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद मिल सके और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए अभिनव समाधान खोजने के लिए प्रत्येक सदस्य देश की ताकत और संसाधनों को बढ़ावा दिया जा सके और एक मॉडल के रूप में काम किया जा सके। अन्य समान विचारधारा वाले देशों के साथ बहुपक्षीय सहयोग।

- समझौते की सफलता पर निर्माण करने के प्रयासों में, संयुक्त राज्य अमेरिका, इजराइल, संयुक्त अरब अमीरात और बहरीन - भारत के साथ-साथ लोगों को सबसे बड़े लाभ को प्राथमिकता देना और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्थायी प्रभाव सुनिश्चित करना जारी रखेंगे।

वाराणसी

खबरों में क्यों

2022 एससीओ शिखर सम्मेलन में वाराणसी को पहली बार एससीओ पर्यटन और सांस्कृतिक राजधानी के रूप में नामित किया गया

महत्वपूर्ण बिंदु

- उज्बेकिस्तान के समरकंद में शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के राष्ट्राध्यक्षों की परिषद की 22वीं बैठक में 2022-2023 की अवधि के दौरान वाराणसी शहर को पहली बार एससीओ पर्यटन और सांस्कृतिक राजधानी के रूप में नामित किया गया है।
- पहली बार SCO पर्यटन और सांस्कृतिक राजधानी के रूप में वाराणसी का नामांकन भारत और SCO सदस्य देशों के बीच पर्यटन, सांस्कृतिक और मानवीय आदान-प्रदान को बढ़ावा देगा।
- यह एससीओ के सदस्य राज्यों, विशेष रूप से मध्य एशियाई गणराज्यों के साथ भारत के प्राचीन सभ्यतागत संबंधों को भी रेखांकित करता है।
- इस प्रमुख सांस्कृतिक आउटरीच कार्यक्रम के ढांचे के तहत, 2022-23 के दौरान वाराणसी में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिसमें एससीओ सदस्य राज्यों से मेहमानों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाएगा।
- इन आयोजनों में भारतविद्, विद्वान, लेखक, संगीतकार और कलाकार, फोटो पत्रकार, यात्रा ब्लॉगर और अन्य आमंत्रित अतिथियों के आकर्षित होने की उम्मीद है।

SCO के बारे में

- शंघाई सहयोग संगठन (SCO) एक स्थायी अंतर-सरकारी अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जिसकी स्थापना की घोषणा 15 जून 2001 को शंघाई में कजाकिस्तान गणराज्य, चीन जनवादी गणराज्य, किर्गिज गणराज्य, ताजिकिस्तान गणराज्य, उज्बेकिस्तान गणराज्य रूसी संघ द्वारा की गई थी।
- यह शंघाई फाइव के तंत्र द्वारा पहले किया गया था।
- जून 2002 में, 19 सितंबर, 2003 को सेंट पीटर्सबर्ग में राष्ट्राध्यक्षों की परिषद की बैठक में शंघाई सहयोग संगठन के चार्टर पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- यह एक बुनियादी वैधानिक दस्तावेज है जो संगठन के लक्ष्यों और सिद्धांतों, इसकी संरचना और मुख्य गतिविधियों को तय करता है।
- 8-9 जून, 2017 को, अस्ताना ने शंघाई सहयोग संगठन के राष्ट्राध्यक्षों की परिषद की एक ऐतिहासिक बैठक की मेजबानी की, जिसके दौरान भारत गणराज्य और पाकिस्तान के इस्लामी गणराज्य को संगठन के सदस्य राज्य का दर्जा दिया गया।
- शंघाई सहयोग संगठन (SCO) 2022 का एक हालिया शिखर सम्मेलन उज्बेकिस्तान के समरकंद में आयोजित किया गया था।
- सदस्य राष्ट्रों ने समरकंद घोषणा पर हस्ताक्षर किए।

- भारत ने 2023 में SCO की अध्यक्षता ग्रहण की।

9 सदस्य राज्य हैं:

- चीन
- भारत
- कजाखस्तान
- किर्गिस्तान
- रूस
- पाकिस्तान
- ताजिकिस्तान
- उज्बेकिस्तान
- ईरान

पूर्ण सदस्यता में शामिल होने में रुचि रखने वाले ३ पर्यवेक्षक राज्य हैं:

- अफगानिस्तान
- बेलारूस
- मंगोलिया

एससीओ के मुख्य लक्ष्य इस प्रकार हैं:

- सदस्य देशों के बीच आपसी विश्वास और अच्छे-पड़ोसी संबंधों को मजबूत करना।
- राजनीति, व्यापार और अर्थव्यवस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, संस्कृति के साथ-साथ शिक्षा, ऊर्जा, परिवहन, पर्यटन, पर्यावरण संरक्षण और अन्य क्षेत्रों में प्रभावी सहयोग को बढ़ावा देना।
- क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखने और सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त प्रयास करना, एक नई, लोकतांत्रिक, न्यायसंगत और तर्कसंगत राजनीतिक और आर्थिक अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की स्थापना की ओर बढ़ना।
- इसकी आंतरिक नीति आपसी विश्वास, पारस्परिक लाभ, समान अधिकार, परामर्श, संस्कृतियों की विविधता के लिए सम्मान और सामान्य विकास की आकांक्षा के सिद्धांतों पर आधारित है।
- इसकी बाहरी नीति गुटनिरपेक्षता, किसी को भी निशाना न बनाने और खुलेपन के सिद्धांतों के अनुसार संचालित की जाती है।

पूर्वी आर्थिक मंच (EEF)

खबरों में क्यों

पूर्वी आर्थिक मंच और भारत का संतुलन अधिनियम

महत्वपूर्ण बिंदु

- रूस ने सातवें पूर्वी आर्थिक मंच (EEF) व्लादिवोस्तोक की मेजबानी की। चार दिवसीय मंच उद्यमियों के लिए रूस के सुदूर पूर्व (RFE) में अपने कारोबार का विस्तार करने का एक मंच है।

पूर्वी आर्थिक मंच क्या है?

- EEF की स्थापना 2015 में आरएफई में विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए की गई थी।
- EEF क्षेत्र में आर्थिक क्षमता, उपयुक्त व्यावसायिक परिस्थितियों और निवेश के अवसरों को प्रदर्शित करता है।
- EEF में हस्ताक्षरित समझौते 2017 में 217 से बढ़कर 2021 में 380 समझौते हो गए, जिनकी कीमत 3.6 ट्रिलियन रूबल है।

- 2022 तक, इस क्षेत्र में लगभग 2,729 निवेश परियोजनाओं की योजना बनाई जा रही है।
- समझौते बुनियादी ढांचे, परिवहन परियोजनाओं, खनिज उत्खनन, निर्माण, उद्योग और कृषि पर केंद्रित हैं।

फोरम में प्रमुख अभिकर्ता कौन हैं? उनके हित क्या हैं?

- इस वर्ष फोरम का उद्देश्य सुदूर पूर्व को एशिया प्रशांत क्षेत्र से जोड़ना है।

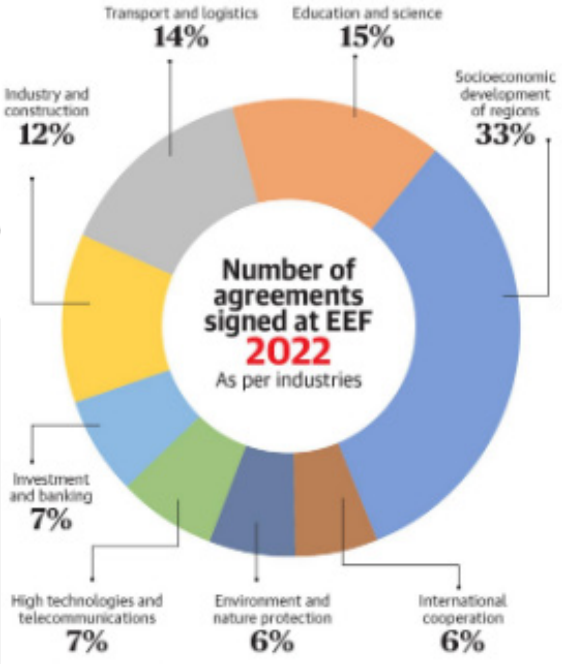

चीन

- चीन इस क्षेत्र में सबसे बड़ा निवेशक है क्योंकि वह 2015 के बाद से चीनी निवेश का स्वागत करता हुआ देखता है, जो यूक्रेन में आक्रमण के कारण आर्थिक दबावों के कारण पहले से कहीं अधिक है।
- ट्रांस-साइबेरियन रेलवे ने व्यापार संबंधों को आगे बढ़ाने में रूस और चीन की और मदद की है।
- देश 4000 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करते हैं, जो उन्हें कुछ अवसंरचनात्मक सहायता के साथ एक-दूसरे के संसाधनों का दोहन करने में सक्षम बनाता है।
- चीन अपने हेइलोंगजियांग प्रांत का भी विकास करना चाहता है जो RFE से जुड़ता है।
- चीन और रूस ने 1,080 मीटर पुल के माध्यम से ब्लागोवेशचेंस्क और हेहे शहरों को जोड़ने, प्राकृतिक गैस की आपूर्ति करने और निजनेलिनिनस्कॉय और टोंगजियांग शहरों को जोड़ने वाले एक रेल पुल पर सहयोग के माध्यम से पूर्वोत्तर चीन और RFE को विकसित करने के लिए एक फंड में निवेश किया है।

दक्षिण कोरिया

- दक्षिण कोरिया ने जहाज निर्माण परियोजनाओं, बिजली के उपकरणों के निर्माण, गैस द्रवीकरण संयंत्र, कृषि उत्पादन और मत्स्य पालन में निवेश किया है।
- 2017 में कोरिया के निर्यात-आयात बैंक और सुदूर पूर्व विकास कोष ने तीन वर्षों की अवधि में RFE में 2 बिलियन डालर डालने की अपनी मंशा की घोषणा की।

जापान

- 2017 में 21 परियोजनाओं के माध्यम से जापानी निवेश 16 अरब डॉलर था। शिंजो आबे के नेतृत्व में, जापान ने आर्थिक सहयोग के आठ क्षेत्रों की पहचान की और निजी व्यवसायों को RFE के विकास में निवेश करने

RAO'S ACADEMY
SUCCESS OUR PRIORITY

के लिए प्रेरित किया।

- जापान 2011 के फुकुशिमा में मंदी के बाद रूसी तेल और गैस संसाधनों पर निर्भर होना चाहता है जिसके कारण सरकार को परमाणु ऊर्जा से बाहर निकलना पड़ा।
- जापान अपनी कृषि-प्रौद्योगिकियों के लिए एक बाजार भी देखता है जिसमें समान जलवायु परिस्थितियों को देखते हुए आरएफई में फलने-फूलने की क्षमता है।
- जापान और रूस के बीच व्यापार संबंध कुरील द्वीप विवाद के कारण बाधित हैं क्योंकि दोनों देशों द्वारा उन पर दावा किया जाता है।

भारत

- भारत RFE में अपने प्रभाव का विस्तार करना चाहता है।
- मंच के दौरान, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस में व्यापार, कनेक्टिविटी और निवेश के विस्तार में देश की तत्परता व्यक्त की।
- भारत ऊर्जा, फार्मास्यूटिकल्स, समुद्री संपर्क, स्वास्थ्य देखभाल, पर्यटन, हीरा उद्योग और आर्कटिक में अपने सहयोग को गहरा करने का इच्छुक है।
- 2019 में, भारत ने इस क्षेत्र में बुनियादी ढांचे को विकसित करने के लिए +1 बिलियन की लाइन ऑफ क्रेडिट की भी पेशकश की।
- EEF के माध्यम से, भारत का लक्ष्य रूस के साथ एक मजबूत अंतर-राज्यीय संपर्क स्थापित करना है।
- गुजरात और सखा गणराज्य के व्यापार प्रतिनिधियों ने हीरा और फार्मास्यूटिकल्स उद्योग में समझौते शुरू किए हैं।

EEF का लक्ष्य क्या है?

- EEF का प्राथमिक उद्देश्य RFE में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ाना है।
- इस क्षेत्र में रूस का एक तिहाई क्षेत्र शामिल है और यह मछली, तेल, प्राकृतिक गैस, लकड़ी, हीरे और अन्य खनिजों जैसे प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है।
- इस क्षेत्र में रहने वाली विरल आबादी लोगों को सुदूर पूर्व में स्थानांतरित करने और काम करने के लिए प्रोत्साहित करने का एक अन्य कारक है।
- क्षेत्र के धन और संसाधनों का रूस के सकल घरेलू उत्पाद में पांच प्रतिशत का योगदान है। लेकिन सामग्री की प्रचुरता और उपलब्धता के बावजूद, कर्मियों की अनुपलब्धता के कारण उनकी खरीद और आपूर्ति एक समस्या है।
- RFE को भौगोलिक रूप से एक रणनीतिक स्थान पर रखा गया है; एशिया में प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करना।
- रूसी सरकार ने रूस को एशियाई व्यापारिक मार्गों से जोड़ने के उद्देश्य से इस क्षेत्र को रणनीतिक रूप से विकसित किया है।
- व्लादिवोस्तोक, खाबरोवस्क, उलान-उडे, चिता और अन्य जैसे शहरों के तेजी से आधुनिकीकरण के साथ सरकार का लक्ष्य इस क्षेत्र में अधिक निवेश आकर्षित करना है।
- रूस सुदूर पूर्व के निवेश और विकास में एशियाई अर्थव्यवस्थाओं को आकर्षित करने का प्रयास कर रहा है।
- हालांकि, EEF एक वार्षिक सभा है, जो फोरम रूस के लिए एक उपयुक्त समय पर आता है जो प्रतिबंधों के प्रभाव से निपट रहा है।
- इसके अलावा, म्यांमार, आर्मेनिया, रूस और चीन जैसे देशों का एक साथ आना अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में एक प्रतिबंध-विरोधी समूह के गठन जैसा लगता है।

क्या भारत EEF और इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क फॉर प्रॉस्पेरिटी (IPEF) के बीच संतुलन हासिल कर पाएगा?

- अमेरिका के नेतृत्व वाली समृद्धि के लिए इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क (IPEF) और EEF इसके भौगोलिक कवरेज और मेजबान देशों के साथ साझेदारी के आधार पर अतुलनीय हैं।
- भारत के दोनों मंचों में निहित स्वार्थ हैं और उसने अपनी भागीदारी को संतुलित करने की दिशा में काम किया है। भारत मौजूदा अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के बावजूद रूस द्वारा शुरू किए गए EEF में निवेश करने से नहीं कतराता है।
- साथ ही, भारत ने IPEF में चार में से तीन स्तंभों को अपनी पुष्टि और स्वीकृति दे दी है।
- देश RFE में विकास में शामिल होने के लाभों को समझता है लेकिन यह IPEF को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में भी मानता है।
- IPEF चीन के नेतृत्व वाली क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी या ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप के लिए व्यापक और प्रगतिशील समझौते जैसे अन्य क्षेत्रीय समूह का हिस्सा बने बिना, भारत के लिए इस क्षेत्र में कार्य करने का एक आदर्श अवसर प्रस्तुत करता है।
- IPEF चीन पर निर्भर आपूर्ति श्रृंखलाओं से लचीला बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और इसे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला नेटवर्क का हिस्सा भी बनाएगा।
- इसके अतिरिक्त, IPEF भागीदार कच्चे माल और अन्य आवश्यक उत्पादों के नए स्रोतों के रूप में कार्य करेंगे, जिससे कच्चे माल के लिए चीन पर भारत की निर्भरता और कम होगी।

इंडो-पैसिफिक त्रिपक्षीय विकास सहयोग कोष

खबरों में क्यों

भारत, फ्रांस इनोवेटर्स, स्टार्ट-अप्स को समर्थन देने के लिए इंडो-पैसिफिक त्रिपक्षीय विकास कोष स्थापित करेंगे।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत और फ्रांस विकास परियोजनाओं को शुरू करने के लिए एक इंडो-पैसिफिक त्रिपक्षीय ढांचा स्थापित करने पर सहमत हुए, रणनीतिक सहयोग का विस्तार करने का फैसला किया और यूक्रेन युद्ध से उत्पन्न खाद्य संकट जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए मिलकर काम करने की कसम खाई।
- भारत-प्रशांत के संदर्भ में चीन के कारण कई चुनौतियाँ सामने आई हैं और फ्रांस और भारत दोनों समान चिंताएँ साझा करते हैं।
- भारत और फ्रांस ने ऑस्ट्रेलिया और संयुक्त अरब अमीरात के साथ अलग-अलग त्रिपक्षीय के तहत भारत-प्रशांत में सहयोग का विस्तार करने का भी फैसला किया।
- फ्रांस और भारत ने हमेशा एक दूसरे का समर्थन किया है इस तरह की एकजुटता और विश्वास आज की दुनिया में "दुर्लभ और कीमती" है।
- वैश्विक खाद्य संकट से निपटने पर, फ्रांस और भारत ने संकेत दिया कि इंडोनेशिया में आगामी जी20 शिखर सम्मेलन में एक पहल का प्रस्ताव किया जा सकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सबसे कमजोर देश "इन खाद्य सुरक्षा मुद्दों के संपर्क में न रहें।"
- इंडो-पैसिफिक के लिए साझेदारी और एक नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के रूप में तीन प्रमुख पहलों में से एक के रूप में दोनों मंत्रियों द्वारा सहमति व्यक्त की गई।
- दोनों पक्ष एक इंडो-पैसिफिक त्रिपक्षीय विकास सहयोग कोष की स्थापना की दिशा में काम करने के लिए सहमत हुए जो इस क्षेत्र के देशों के लिए स्थायी अभिनव समाधान का समर्थन करेगा।
- दोनों देशों ने भारत-फ्रांस-ऑस्ट्रेलिया त्रिपक्षीय तंत्र के तहत सहयोग फिर से शुरू करने का फैसला किया।

- अन्य दो पहलें हैं: ग्रह के लिए साझेदारी और सतत विकास और सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संबंध।
- फ्रांस के ब्रेस्ट में सी टेक वीक में भारत पहला ष्सम्मान का देशष् होगा, जो नीली अर्थव्यवस्था के हितधारकों को एक साथ लाने वाला एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम है।
- फ्रांस ने भारत - फ्रांस - यूएई त्रिपक्षीय ढांचे के केंद्र बिन्दुओं की उद्घाटन बैठक का भी स्वागत किया और अधिकारियों से सहयोग के लिए सहमत रोडमैप तैयार करने का आग्रह किया।
- इंडो-पैसिफिक त्रिपक्षीय अन्य समाजों की आवश्यकताओं के लिए अपनी प्रासंगिकता प्रदर्शित करने के लिए भारतीय नवाचारों और स्टार्ट-अप के लिए एक मंच भी प्रदान करेगा।
- दोनों देशों ने फ्रांस में भारत के एकीकृत भुगतान इंटरफेस (UPI) के शुभारंभ का स्वागत किया।
- रक्षा उद्योग सहयोग पर, भारत ने हैदराबाद में अपना सबसे बड़ा और पहला विमान इंजन MRO (रखरखाव, मरम्मत और ओवरहाल) सुविधा स्थापित करने के सफरन समूह के निर्णय का स्वागत किया।
- यह सुविधा 1200 करोड़ रुपये (150 मिलियन अमरीकी डालर) के निवेश के साथ स्थापित की जाएगी और तेलंगाना में लगभग 1,000 उच्च-कुशल नौकरियां पैदा होने की उम्मीद है।
- फ्रांस ने पर्यावरण के लिए प्रधानमंत्री मोदी की जीवन शैली (लाइफ) पहल के लिए अपने समर्थन की घोषणा की, और जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए स्थायी जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए भारत के साथ काम करने की कोशिश करेगा।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

8 सरकारी योजनाएं

सरोगेट विज्ञापन

खबरों में क्यों

केंद्र ने विज्ञापन एजेंसियों को सरोगेट विज्ञापनों पर दिशानिर्देशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय विज्ञापन एजेंसियों को किराए के विज्ञापनों पर दिशानिर्देशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करने का निर्देश देता है।
- उपभोक्ता मामलों के विभाग ने उद्योग निकायों सीआईआई, फिक्की, एसोचैम और विज्ञापन और प्रसारण से संबंधित लोगों को भ्रामक विज्ञापन की रोकथाम के लिए मौजूदा दिशानिर्देशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है, विशेष रूप से सरोगेट विज्ञापनों से संबंधित प्रावधानों को।
- दिशानिर्देशों में कहा गया है कि कोई भी सरोगेट विज्ञापन या अप्रत्यक्ष विज्ञापन उन वस्तुओं या सेवाओं के लिए नहीं बनाया जाएगा जिनका विज्ञापन अन्यथा कानून द्वारा प्रतिबंधित है।
- मंत्रालय विज्ञापनदाताओं के संघों को चेतावनी देता है कि संबंधित प्राधिकारियों द्वारा दिशानिर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने में विफल रहने पर केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) की बागडोर संभाली जाएगी और उल्लंघन करने वालों के खिलाफ उपयुक्त कड़ी कार्रवाई की जाएगी।
- रिपोर्टों के अनुसार, दिशानिर्देश निर्माताओं, सेवा प्रदाताओं या व्यापारियों पर लागू होते हैं, जिनके सामान, उत्पाद या सेवा किसी विज्ञापन के विज्ञापन का विषय हैं, या किसी विज्ञापन एजेंसी या एंडोर्सर पर, जिनकी सेवा ऐसे सामानों के विज्ञापन के लिए ली जाती है, विज्ञापन के रूप, प्रारूप या माध्यम की परवाह किए बिना उत्पाद या सेवा।
- दिशानिर्देशों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि कोई भी सरोगेट विज्ञापन या अप्रत्यक्ष विज्ञापन उन वस्तुओं या सेवाओं के लिए नहीं बनाया जाएगा जिनका विज्ञापन अन्यथा प्रतिबंधित या कानून द्वारा प्रतिबंधित है, इस तरह के निषेध या प्रतिबंध को दरकिनार करके और इसे अन्य वस्तुओं या सेवाओं के विज्ञापन के रूप में चित्रित करके, विज्ञापन जिनमें से कानून द्वारा निषिद्ध या प्रतिबंधित नहीं है।
- विभाग ने विज्ञापनदाताओं के संघों को भी आगाह किया कि संबंधित पक्षों द्वारा दिशा-निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करने में विफल रहने पर सीसीपीए को बागडोर संभालनी होगी और उल्लंघन करने वालों के खिलाफ उपयुक्त कड़ी कार्रवाई करनी होगी।

पीएम-श्री योजना

खबरों में क्यों

शिक्षक दिवस के अवसर पर, प्रधान मंत्री ने राइजिंग इंडिया (PM-SHRI) योजना के लिए प्रधान मंत्री स्कूल के तहत पूरे भारत में 14,500 स्कूलों के विकास और उन्नयन की घोषणा की है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- पीएम-श्री स्कूलों में शिक्षा प्रदान करने का एक आधुनिक, परिवर्तनकारी और समग्र तरीका होगा।
- श्री मोदी ने कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि NEP की भावना से पीएम-श्री स्कूल पूरे भारत में लाखों छात्रों को लाभान्वित करेंगे।

RAO'S ACADEMY

- पीएम-श्री स्कूलों में शिक्षा प्रदान करने का एक आधुनिक, परिवर्तनकारी और समग्र तरीका होगा।
- शिक्षण के खोजोन्मुख, शिक्षण केंद्रित तरीके पर जोर दिया जाएगा।
- नवीनतम तकनीक, स्मार्ट क्लासरूम, खेल और अन्य सहित आधुनिक बुनियादी सुविधाओं पर भी ध्यान दिया जाएगा।

पीएम श्री स्कूलः

- केंद्र ने अभी तक इस उद्देश्य के लिए चुने गए स्कूलों की सूची जारी नहीं की है, हालांकि यह घोषणा की गई है कि पीएम श्री स्कूल अपने आसपास के अन्य स्कूलों को भी सलाह की पेशकश करेंगे।
- ये स्कूल आधुनिक बुनियादी सुविधाओं से लैस होंगे जिनमें लैब, स्मार्ट क्लासरूम, लाइब्रेरी, खेल उपकरण, आर्ट रूम आदि शामिल हैं।
- इसे जल संरक्षण, अपशिष्ट पुनर्चक्रण, ऊर्जा कुशल बुनियादी ढांचे और पाठ्यक्रम में जैविक जीवन शैली के एकीकरण के साथ हरित विद्यालयों के रूप में भी विकसित किया जाएगा।

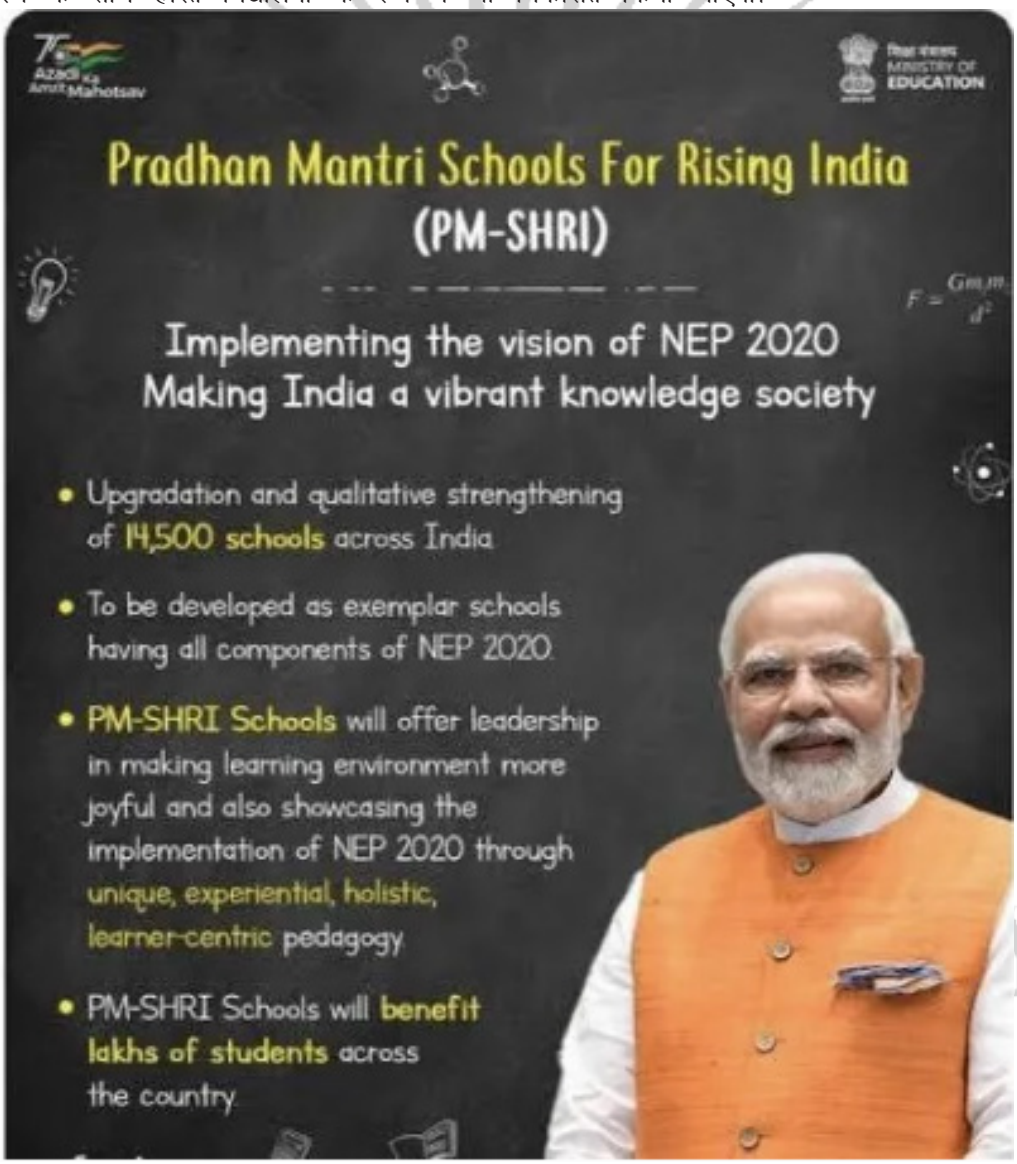

स्कूली शिक्षा में एनईपी की विशेषताएं

- स्कूल स्तर की शिक्षा में, एनईपी ने पुरातन 10+2 संरचना को समाप्त कर दिया और 5+3+3+4 की एक नई

शैक्षणिक और पाठ्यचर्या संरचना की शुरुआत की, जिसमें 3-18 वर्ष की आयु के छात्र शामिल हैं।

- इसे सीखने के चार चरणों में विभाजित किया गया है:- आधारभूत, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक।
- नई नीति 3-6 साल के बच्चों को भी पूरा करती है और प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ECCE) को बढ़ावा देती है।
- इसके तहत, NCERT बचपन की देखभाल और शिक्षा (NCPFECE) के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या और शैक्षणिक ढांचा तैयार करेगा।
- इसे दो भागों में विभाजित किया जाएगा जिसमें 0-3 वर्ष के बच्चों के लिए एक उप-ढांचा और 3-8 वर्ष के बच्चों के लिए एक उप-ढांचा होगा।
- ईसीसीई बच्चों को कम उम्र से ही रचनात्मक प्रवृत्ति और तार्किक सोच के बीज बोने के लिए कला, संगीत, शिल्प, नाटक, कठपुतली आदि जैसी विविध चीजों को सीखने में मदद करेगा।
- प्रारंभिक स्तर (III-V) पर, कुछ औपचारिक कक्षा शिक्षण के साथ हल्की पाठ्यपुस्तकों को पेश किया जाना है। विषय शिक्षकों को मध्य स्तर (VI-VIII) पर पेश किया जाना है।
- माध्यमिक चरण (IX-XII) प्रकृति में बहु-विषयक होगा जिसमें कला और विज्ञान या अन्य विषयों के बीच कोई कठिन अलगाव नहीं होगा।

किरीट पारिख समिति

खबरों में क्यों

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने मौजूदा गैस मूल्य निर्धारण फार्मूले की समीक्षा के लिए एक समिति का गठन किया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- वैश्विक प्राकृतिक गैस की कीमतों में उछाल से ऊर्जा और औद्योगिक लागत बढ़ने और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के प्रयासों को पटरी से उतारने की बढ़ती चिंताओं के बीच, केंद्र ने घरेलू स्तर पर उत्पादित गैस के मूल्य निर्धारण फार्मूले की समीक्षा शुरू कर दी है।
- पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने मौजूदा गैस मूल्य निर्धारण फार्मूले की समीक्षा करने के लिए प्रसिद्ध ऊर्जा विशेषज्ञ किरीट पारिख के तहत एक समिति का गठन किया है, रॉयटर्स ने बताया कि इस संबंध में सरकार के आदेश में "उपभोक्ता उचित मूल्य" सुनिश्चित करने की आवश्यकता की बात की गई है।
- पैनल, जिसमें गैस उत्पादक संघ के प्रतिनिधि और ओएनजीसी और ओआईएल के उत्पादक भी शामिल होंगे। इसमें निजी शहर गैस ऑपरेटरों, राज्य गैस उपयोगिता गेल, इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (IOC) के एक प्रतिनिधि और उर्वरक मंत्रालय के एक सदस्य के सदस्य भी हैं।
- हालांकि समिति को इस महीने के अंत तक रिपोर्ट जमा करने के लिए कहा गया है, लेकिन अक्टूबर 2022-मार्च 2023 की अवधि के लिए घरेलू गैस की कीमतों के अगले छह मासिक संशोधन के लिए इसके इनपुट का उपयोग नहीं किया जाएगा।
- अगले मूल्य संशोधन से सामान्य और ष्कठिनष् दोनों क्षेत्रों से गैस की कीमतों में और वृद्धि होने की संभावना है, यह देखते हुए कि बेंचमार्क वैश्विक कीमतें ऊंची बनी हुई हैं।
- 1 अप्रैल, 2022 से प्रभावी पिछले संशोधन में, पुराने और विनियमित क्षेत्रों से प्राकृतिक गैस की कीमत दोगुनी होकर 6.1 डॉलर प्रति मिलियन ब्रिटिश थर्मल यूनिट (MBUT) कर दी गई थी।
- रिलायंस इंडस्ट्रीज-बीपी कंबाइन द्वारा संचालित केजी-डी 6 ब्लॉक जैसे कठिन क्षेत्रों से उत्पादित गैस की कीमत अप्रैल-सितंबर 2022 की अवधि के लिए पहले 6.13 डॉलर से बढ़ाकर 9.92 / MBUT कर दी गई थी।
- विशेष रूप से, उपभोक्ता हितों को ध्यान में रखते हुए गैस मूल्य निर्धारण फार्मूले की समीक्षा रिलायंस इंडस्ट्रीज द्वारा बार-बार केंद्र से गैस की कीमत पर सीमा को हटाने का आग्रह करने के बावजूद की जाती है क्योंकि

यह "किसी भी वृद्धि या गिरावट के बावजूद, वैश्विक मूल्य प्रवृत्तियों से अलग रहता है"।

- भारत में खपत होने वाली प्राकृतिक गैस का लगभग 50 प्रतिशत आयातित एलएनजी है।
- पैनल को अंतिम उपभोक्ताओं को उचित मूल्य की सिफारिश करने और "गैस आधारित अर्थव्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए भारत के दीर्घकालिक दृष्टिकोण के लिए बाजार-उन्मुख, पारदर्शी और विश्वसनीय मूल्य निर्धारण व्यवस्था" का सुझाव देने के लिए कहा गया है।
- सरकार की प्रमुख योजना प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना (PMUY) ने विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में LPG की पहुंच बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना (PMUY) के तहत नए लक्ष्यों का लक्ष्य 31 जनवरी, 2022 से पहले 10 करोड़ परिवारों को एलपीजी कनेक्शन प्रदान करना है।
- गैस उर्वरक के साथ-साथ बिजली बनाने के लिए एक इनपुट है। इसे सीएनजी में भी परिवर्तित किया जाता है और घरेलू रसोई में पाइप किया जाता है और इसकी कीमतों में वृद्धि ने मुद्रास्फीति को बढ़ावा दिया।

धर्मशाला घोषणा

खबरों में क्यों

धर्मशाला घोषणा 2047 तक भारत को पर्यटन क्षेत्र में वैश्विक नेता बनाने की पुष्टि करती है

महत्वपूर्ण बिंदु

- राज्य के पर्यटन मंत्री का तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन "धर्मशाला घोषणा" को अपनाने के साथ समाप्त हुआ।
- यह "टिकाऊ और जिम्मेदार पर्यटन" विकसित करने की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है और भारत को "2047 तक पर्यटन क्षेत्र में वैश्विक नेता" के रूप में स्थान देता है।
- **धर्मशाला घोषणा-2020** शीर्षक वाले दस्तावेज: सतत और जिम्मेदार पर्यटन का दावा है कि भारत मुख्य रूप से घरेलू पर्यटन के माध्यम से संचालित वैश्विक पर्यटन वसूली की दिशा में योगदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।
- पर्यटन के सभी प्रमुख सूचकांकों ने महामारी से पहले के स्तरों जैसे घरेलू हवाई यात्री यातायात, होटल में लोगों की संख्या और पर्यटकों की भीड़ में सुधार के संकेत दिखाना शुरू कर दिया है।
- इसमें यह भी कहा गया है कि भारत के पर्यटन को पुनर्जीवित करने के लिए एक समग्र दृष्टि और रणनीति के साथ राष्ट्रीय पर्यटन नीति का मसौदा तैयार किया गया है और 2047 में इस क्षेत्र द्वारा 1 ट्रिलियन अमरीकी डालर प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है।
- इस पृष्ठभूमि में, भारत सरकार भी स्थायी और जिम्मेदार पर्यटन स्थलों के विकास का मार्ग प्रशस्त कर रही है।
- सरकार पर्यटन क्षेत्र में एमएसएमई का समर्थन करना जारी रखेगी और उद्योग की रोजगार सृजन क्षमता का लाभ उठाएगी।

सांस्कृतिक समृद्धि का प्रदर्शन करें

- धर्मशाला घोषणापत्र अगले वर्ष जी-20 की अध्यक्षता के दौरान भारत को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने की योजना की भी पुष्टि करता है।
- यह वीजा सुधार, यात्रा में आसानी, हवाई अड्डों पर यात्रा के अनुकूल आव्रजन सुविधाओं और अंतरराष्ट्रीय यात्रा के लिए खुलेपन सहित आवश्यक हस्तक्षेप करने की घोषणा करता है।
- इसके अलावा, दस्तावेज पर्यटन क्षेत्र में अल्पकालिक और दीर्घकालिक लक्ष्यों के बारे में बात करता है।

2047 तक भारत को पर्यटन में वैश्विक नेता के रूप में स्थान दें

- अल्पावधि में, भारतीय पर्यटन उद्योग 2024 के मध्य तक महामारी से पहले के स्तर तक पहुंचने का प्रयास करेगा।

- उस अवधि तक देश में 150 अरब अमेरिकी डॉलर का सकल घरेलू उत्पाद, 30 अरब अमेरिकी डॉलर की विदेशी मुद्रा आय और 1.5 मिलियन विदेशी पर्यटकों के आगमन का अनुमान है।
- मध्यम अवधि में, यानी 2030, भारतीय अर्थव्यवस्था के 7-9% की दर से बढ़ने की उम्मीद है और पर्यटन से संबंधित लक्ष्य 250 बिलियन अमरीकी डालर का सकल घरेलू उत्पाद योगदान है; 137 मिलियन नौकरियां, 56 मिलियन विदेशी पर्यटक आगमन और 56 बिलियन अमरीकी डालर विदेशी मुद्रा आय में।

"सीएम दा हैसी"

खबरों में क्यों

मणिपुर के मुख्यमंत्री ने भ्रष्टाचार विरोधी प्रकोष्ठ के लिए प्यूबो को संबोधित करने के लिए पोर्टल लॉन्च किया, पोर्टल 'सीएम दा हैसी' (चलो सीएम को सूचित करें) पर उपलब्ध कराया गया है।

- यह जन शिकायतों के तेजी से निवारण को सक्षम करेगा और भ्रष्टाचार से संबंधित मुद्दों को उठाने के लिए एक मंच भी प्रदान करेगा।
- यह हमें शासन और सार्वजनिक सेवाओं के वितरण में पारदर्शिता और जवाबदेही लाने में सक्षम बनाएगा।

लोकटक झील

- लोकटक झील भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में सबसे बड़ी प्राकृतिक मीठे पानी की झील है और इसे 1990 में रामसर कन्वेंशन के तहत अंतर्राष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमि के रूप में नामित किया गया है।

इनर लाइन परमिट

- इनर लाइन परमिट (ILP) भारत सरकार द्वारा जारी एक आधिकारिक यात्रा दस्तावेज है जो एक सीमित अवधि के लिए एक संरक्षित क्षेत्र में एक भारतीय नागरिक की आवक यात्रा की अनुमति देता है।
- उन राज्यों के बाहर के भारतीय नागरिकों के लिए संरक्षित राज्य में प्रवेश करने के लिए परमिट प्राप्त करना अनिवार्य है। दस्तावेज सरकार द्वारा भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पास स्थित कुछ क्षेत्रों में आवाजाही को विनियमित करने का एक प्रयास है।

- यह बंगाल ईस्टर्न फ्रंटियर रेगुलेशन, 1873 की एक शाखा है, जिसने इन "संरक्षित क्षेत्रों" में प्रवेश करने से "ब्रिटिश विषयों" को प्रतिबंधित करके चाय, तेल और हाथी व्यापार में क्राउन के हितों की रक्षा करती थी (उन्हें किसी भी वाणिज्यिक उद्यम की स्थापना से रोकने के लिए जो क्राउन के एजेंटों को टक्कर दे सकता है)।
- शब्द "ब्रिटिश विषयों" को 1950 में भारत के नागरिक द्वारा बदल दिया गया था। इस तथ्य के बावजूद कि आईएलपी मूल रूप से अंग्रेजों द्वारा उनके व्यावसायिक हितों की रक्षा के लिए बनाया गया था, इसका उपयोग भारत में आधिकारिक तौर पर पूर्वोत्तर भारत में आदिवासी संस्कृतियों की रक्षा के लिए किया जाता है।
- विभिन्न प्रकार के आईएलपी हैं, एक पर्यटकों के लिए और दूसरा उन लोगों के लिए जो लंबे समय तक रहने का इरादा रखते हैं, अक्सर रोजगार के उद्देश्य से।
- अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और मिजोरम के बाद मणिपुर ILP को लागू करने वाला चौथा राज्य है।

स्वच्छ सुजल प्रदेश

खबरों में क्यों

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह ने भारत का पहला स्वच्छ सुजल प्रदेश घोषित किया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- केंद्रीय जल शक्ति मंत्री ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह को भारत का पहला स्वच्छ सुजल प्रदेश घोषित किया है। उन्होंने उपराज्यपाल एडमिरल डीके जोशी को प्रमाण पत्र सौंपा।
- अब, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के सभी गांवों को हर घर जल के रूप में प्रमाणित किया गया है और खुले में शौच मुक्त - ODF + के रूप में सत्यापित किया गया है।
- जल शक्ति मंत्रालय ने इस बड़ी उपलब्धि के लिए सभी द्वीपवासियों को बधाई दी और इस यात्रा को पूरा करने के लिए लोगों की भागीदारी पर प्रकाश डाला।

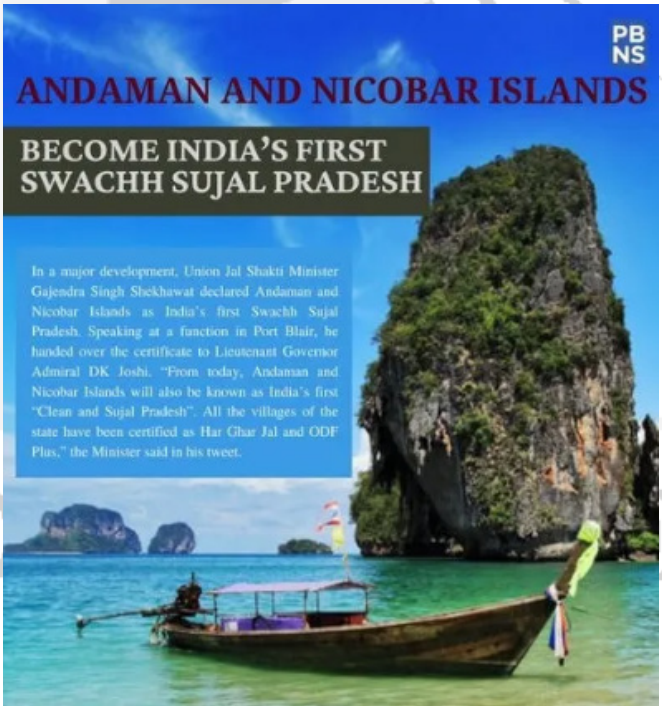

- 3 जिलों में 266 गांव और 62,000 ग्रामीण परिवार और 9 ब्लॉक वितरित हैं।
- केंद्र शासित प्रदेश ने सुनिश्चित किया कि सभी 368 स्कूलों, 558 आंगनवाड़ी केंद्रों और 292 सार्वजनिक संस्थान केंद्रों को पाइप से पानी मिले।

- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में, केवल एक शहरी क्षेत्र अर्थात पोर्ट ब्लेयर नगर परिषद है जबकि शेष ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत आता है। शहरी क्षेत्र में, ODF++ लक्ष्य 2021 में प्राप्त किया गया था।
- अंडमान और निकोबार द्वीपों को 'प्रथम स्वच्छ सुजल प्रदेश' घोषित किए जाने के लिए, मंत्रालय ने एक व्यापक सत्यापन किया है जिसके दौरान सभी महत्वपूर्ण मानदंड अर्थात पानी की गुणवत्ता, जलापूर्ति की मात्रा, जलापूर्ति की नियमितता का पूरी तरह से सत्यापन किया गया, जिसके बाद ही मंत्रालय ने प्रमाण पत्र दिया।
- SSTC (कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन) की सुविधा सभी गांवों में उपलब्ध करा दी गई है, और ग्राम सभाओं के समर्थन से 100% हर घर जल प्रमाणन प्राप्त किया गया है।
- प्रभावी ठोस तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए, केंद्र शासित प्रदेश ने 26 ठोस अपशिष्ट प्रबंधन क्लस्टर स्थापित करने के उपाय किए हैं जो अंडमान की संपूर्ण 70 ग्राम पंचायतों को पूरा करेंगे।
- प्रमाणीकरण 3 चीजों को सुनिश्चित करने के लिए प्रदान किया जाता है:
- सुरक्षित और सुव्यवस्थित पेयजल आपूर्ति,
- ओडीएफ प्लस स्थिति,
- स्वच्छता और योजनाओं के अभिसरण के बारे में जागरूकता।

PM PRANAM योजना

खबरों में क्यों

पीएम प्रणाम ने राज्यों को प्रोत्साहन देकर रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने की योजना बनाई।

महत्वपूर्ण बिंदु

- राज्यों को प्रोत्साहन देकर रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने के लिए, केंद्र सरकार ने एक नई योजना - PM PRANAM शुरू करने की योजना बनाई है। यह एक ऐसी पहल है जो पोषक तत्वों के वैकल्पिक रूपों के रूप में जैव उर्वरकों और जैविक उर्वरकों के साथ उर्वरकों के संतुलित उपयोग को प्रोत्साहित करती है।
- रबी अभियान के लिए कृषि पर राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान पीएम प्रणाम योजना का विचार प्रस्तावित किया गया था।
- प्रधानमंत्री प्रणाम – कृषि प्रबंधन योजना के लिए वैकल्पिक पोषक तत्वों को बढ़ावा देना
- कार्यान्वयन– योजना का विचार केंद्रीय रसायन और उर्वरक मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया है।

पीएम प्रणाम योजना के उद्देश्य

- जैव उर्वरकों और जैविक उर्वरकों के संयोजन के साथ उर्वरकों के संतुलित उपयोग को प्रोत्साहित करना।

पीएम प्रणाम योजना का उद्देश्य

- रासायनिक उर्वरकों पर सब्सिडी के बोझ को कम करने के लिए जो 2022-23 में बढ़कर 2.25 लाख करोड़ रुपये होने की उम्मीद है, जबकि पिछले वर्ष 1.62 लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा है जो कि अधिक उर्वरक सब्सिडी को बढ़ाने के लिए लगभग 39% है।
- रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करें, जिस पर सरकार का ध्यान केंद्रित है।

पीएम प्रणाम योजना की विशेषताएं

- इस योजना का कोई अलग बजट नहीं होगा और उर्वरक विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के तहत "मौजूदा उर्वरक सब्सिडी की बचत" के माध्यम से वित्तपोषित किया जाएगा।
- सब्सिडी बचत का 50% उस राज्य को अनुदान के रूप में दिया जाएगा जो पैसा बचाता है।
- योजना के तहत प्रदान किए गए अनुदान का 70% उपयोग गांव, ब्लॉक और जिला स्तर पर वैकल्पिक उर्वरकों

और वैकल्पिक उर्वरक उत्पादन इकाइयों के तकनीकी अपनाने से संबंधित संपत्ति निर्माण के लिए किया जा सकता है।

- शेष 30% अनुदान राशि का उपयोग उन किसानों, पंचायतों, किसान उत्पादक संगठनों और स्वयं सहायता समूहों को पुरस्कृत करने और प्रोत्साहित करने के लिए किया जा सकता है जो उर्वरक उपयोग में कमी और जागरूकता पैदा करने में शामिल हैं।
- एक वर्ष में यूरिया के रासायनिक उर्वरक उपयोग को कम करने की गणना की तुलना पिछले तीन वर्षों के दौरान यूरिया की औसत खपत से की जाएगी।
- इस प्रयोजन के लिए उर्वरक मंत्रालय के डैशबोर्ड, IFMS (एकीकृत उर्वरक प्रबंधन प्रणाली) पर उपलब्ध डेटा का उपयोग किया जाएगा।

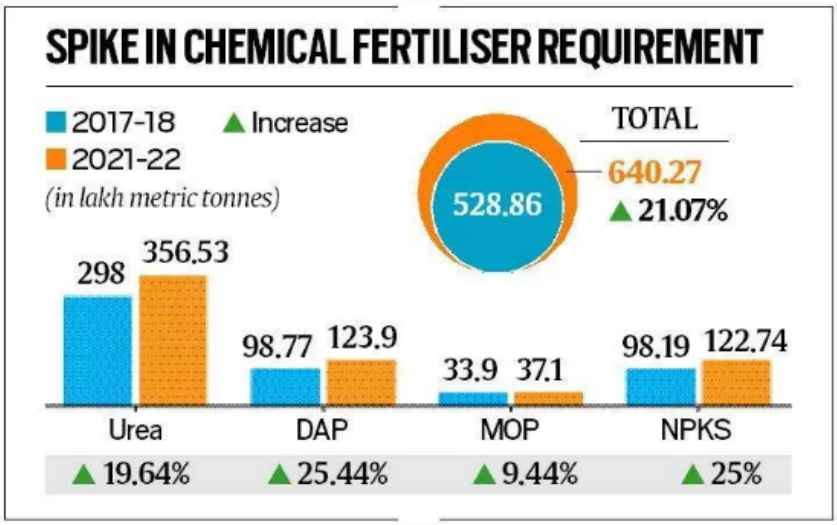

यह कैसे काम करेगा?

- **औसत खपत:** सरकार का लक्ष्य किसी दिए गए वर्ष में उपयोग की गणना और पिछले तीन वर्षों में उसके औसत उपयोग की तुलना करके रासायनिक उर्वरकों के राज्य के उपयोग को निर्धारित करना है।
- **डाटा:** इसके लिए उर्वरक मंत्रालय के डैशबोर्ड, इंटीग्रेटेड फर्टिलाइजर्स मैनेजमेंट सिस्टम (IFMS) पर उपलब्ध डाटा लिया जाएगा।
- **वित्त तंत्र:** योजना का अलग बजट नहीं होगा और उर्वरक विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के तहत मौजूदा उर्वरक सब्सिडी की बचत द्वारा वित्तपोषित किया जाएगा।

पीएम प्रणाम योजना की आवश्यकता है?

- **सरकार पर सब्सिडी का बोझ:** किसान अपनी सामान्य आपूर्ति और मांग-आधारित बाजार दरों से कम या अधिकतम खुदरा कीमतों (MRP) पर उर्वरक खरीदते हैं या उन्हें उत्पादन/आयात करने में कितना खर्च होता है।
- उदाहरण के लिए, सरकार द्वारा नीम-लेपित यूरिया की एमआरपी 5,922.22 रुपये प्रति टन तय की गई है, जबकि घरेलू निर्माताओं और आयातकों को देय इसकी औसत लागत-प्लस कीमत क्रमशः लगभग 17,000 रुपये और 23,000 रुपये प्रति टन है।

भारत में उर्वरक सब्सिडी

- **व्यय:** 2020-21 में उर्वरक सब्सिडी पर भारत का खर्च 1.27 लाख करोड़ रुपये था। केंद्रीय बजट 2021-22 में अनुमानित राशि 79,530 करोड़ रुपये थी, जो संशोधित अनुमान (RE) में बढ़कर 1.40 लाख करोड़ रुपये हो गई। अंतिम उर्वरक सब्सिडी 2021-22 में 1.62 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गई।
- सरकार ने 2022-23 में सब्सिडी के लिए 1.05 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। संभावना है कि इस

साल के दौरान यह आंकड़ा 2.25 लाख करोड़ रुपये को पार कर सकता है।

उर्वरक क्षेत्र में सुधार

- **प्लगिंग लीक:** प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण प्रणाली के तहत लाभार्थियों को खुदरा विक्रेताओं द्वारा की गई वास्तविक बिक्री के आधार पर उर्वरक कंपनियों को विभिन्न उर्वरक ग्रेड पर सब्सिडी जारी की जाएगी।
- **उर्वरकों का संतुलित उपयोग:** यह योजना पिछले कुछ वर्षों में उर्वरकों या वैकल्पिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देने पर सरकार के फोकस के अनुरूप है।
- **नए पोषक तत्व:** उर्वरक नियंत्रण आदेश-1985 (FCO) में नैनो यूरिया और जैव-उत्तेजक जैसे नए पोषक तत्व जोड़े गए हैं।
- **अत्यधिक उपयोग कम करें:** उर्वरकों के नियंत्रित उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड और नीम-लेपित यूरिया जैसी पहल भी की गई हैं।

भारत में उर्वरक उपयोग की स्थिति

- देश में चार उर्वरकों - यूरिया, डीएपी (डाय-अमोनियम फॉस्फेट), एमओपी (म्यूरेट ऑफ पोटाश), एनपीके (नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम) की कुल आवश्यकता 2017-18 में 528.86 लाख मीट्रिक टन से 2021-22 में 21% बढ़कर 640.27 लाख मीट्रिक टन (एलएमटी) हो गई।
- अधिकतम वृद्धि – 25.44% डीएपी की आवश्यकता में दर्ज की गई है। यह 2017-18 में 98.77 LMT से बढ़कर 2021-22 में 123.9 LMT हो गया।
- देश में सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले रासायनिक उर्वरक यूरिया में पिछले पांच वर्षों में 19.64 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई - 2017-18 में 298 एलएमटी से 2021-22 में 356.53 हो गई।

फिनटेक प्रोत्साहन योजना (एफआईएस) 2022

खबरों में क्यों

अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (IFSCA) ने फिनटेक गतिविधियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए एक योजना शुरू की है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण ("प्राधिकरण" या "IFSCA"), भारत में GIFT अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (IFSC) में एक विश्व स्तरीय फिनटेक हब की स्थापना को बढ़ावा देने के समग्र उद्देश्य के साथ, लॉन्च किया गया
- विशिष्ट अनुदान के रूप में फिनटेक गतिविधियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए IFSCA (फिनटेक प्रोत्साहन) योजना

यह योजना खुली होगी -

1. घरेलू फिनटेक विदेशी बाजारों तक पहुंच चाहते हैं;
2. IFSCA मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों पर सूचीबद्ध होने की मांग करने वाली घरेलू फिनटेक;
3. विदेशी फिनटेक भारत में IFSCA तक बाजार पहुंच चाहते हैं और प्राधिकरण के नियामक ढांचे के भीतर काम करते हैं;
4. विदेशी फिनटेक इंटर-ऑपरेटेबल रेगुलेटरी सैंडबॉक्स (आईओआरएस) ढांचे के तहत घरेलू बाजार तक पहुंच चाहते हैं;
5. घरेलू फिनटेक या तो प्राधिकरण या पंजीकरण के माध्यम से या नियामक सैंडबॉक्स के माध्यम से IFSCs को व्यापार का विस्तार करते हैं।

YOUR SUCCESS OUR RIGHT
RAO'S ACADEMY

1. **किसी उत्पाद या सेवा** को विकसित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रोत्साहन के प्रकार और एक नए फिनटेक विचार या समाधान के साथ स्टार्ट-अप के लिए संबंधित श्गो-टू मार्केटश पहल, विचार को एमवीपी में परिवर्तित करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
2. **अवधारणा का प्रमाण (पीओसी) अनुदान**- इस अनुदान का उपयोग घरेलू बाजार या विदेशों में एक प्रारंभिक या परिपक्व फिनटेक इकाई (एफई) द्वारा पीओसी आयोजित करने के उद्देश्य के लिए किया जाएगा।
3. **सैंडबॉक्स अनुदान**- इस अनुदान का उपयोग एफई द्वारा सैंडबॉक्स में नवीन उत्पादों या सेवाओं के साथ प्रयोग करने के लिए किया जाएगा।
4. **ग्रीन फिनटेक ग्रांट**- इस अनुदान का उपयोग 'पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी)' निवेश सहित स्थायी वित्त और स्थिरता से जुड़े वित्त की सुविधा प्रदान करने वाले समाधान विकसित करने के लिए किया जाएगा।
5. **एक्सेलेरेटर अनुदान**- इस अनुदान का उपयोग आईएफएससी में क्षमता निर्माण, सलाहकारों के आसपास क्षमताओं का निर्माण करने, निवेशकों को लाने, अधिक परियोजनाओं या पीओसी लाने, टाई अप आदि के लिए त्वरक का समर्थन करने के लिए किया जाएगा।
6. **लिस्टिंग सहायता अनुदान** - अनुदान का उपयोग प्राधिकरण द्वारा मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों पर सूचीबद्ध होने के इच्छुक घरेलू एफई को समर्थन देने के लिए किया जाएगा।

इस योजना के तहत अपेक्षित अनुदान पात्र एफई को उपलब्ध होगा:

1. जो प्राधिकरण के नियामक या अभिनव सैंडबॉक्स का हिस्सा हैं;
2. जो एक समकक्ष नियामक के साथ फिनटेक ब्रिज व्यवस्था के तहत प्राधिकरण को संदर्भित किया जाता है,
3. जिन्होंने प्राधिकरण द्वारा समर्थित या मान्यता प्राप्त किसी गतिवर्धक या जत्था या विशेष कार्यक्रम में भाग लिया है या भाग ले रहे हैं;
4. जिन्हें प्राधिकरण के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) या सहयोग या विशेष व्यवस्था वाले नियामक या पर्यवेक्षी निकायों सहित इकाई (MoU) द्वारा संदर्भित किया जाता है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

9 विविध

संयुक्त राष्ट्र ने चीन के शिनजियांग में मानवता के खिलाफ संभावित अपराधों का हवाला दिया

खबरों में क्यों

यूएन मानवाधिकार कार्यालय के अनुसार चीन द्वारा उइगरों की भेदभावपूर्ण हिरासत मानवता के खिलाफ अपराध हो सकती है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- शिनजियांग के पश्चिमी क्षेत्र में उइगरों और अन्य ज्यादातर मुस्लिम जातीय समूहों की चीन की भेदभावपूर्ण हिरासत मानवता के खिलाफ अपराध हो सकती है, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय ने बुधवार को एक लंबे समय से प्रतीक्षित रिपोर्ट में कहा, जिसमें हाल के वर्ष षांभीरष अधिकारों के उल्लंघन और यातना के पैटर्न का हवाला दिया गया था।
- रिपोर्ट में आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के बीजिंग के अभियान में अधिकारों के उल्लंघन पर संयुक्त राष्ट्र और विश्व समुदाय से "तत्काल ध्यान" देने की मांग की गई है।
- संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख मिशेल बाचेलेट ने रिपोर्ट को वापस लेने के लिए कार्यालय के लिए चीन के आह्वान को खारिज कर दिया, जो मई में झिंजियांग की अपनी यात्रा के बाद आता है और बीजिंग का दावा चीन की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के लिए एक पश्चिमी अभियान का हिस्सा है।
- रिपोर्ट ने क्षेत्र के मूल उइगर और अन्य जातीय समूहों के अधिकारों पर पश्चिम के साथ राजनयिक प्रभाव के लिए एक रस्साकशी को हवा दी है।
- शिनजियांग में कई वर्षों से मानवाधिकारों के बारे में चिंता का दस्तावेजीकरण करने वाले शोधकर्ताओं, वकालत समूहों और पत्रकारों के व्यापक निष्कर्षों से परे महत्वपूर्ण नई जमीन को तोड़ना अप्रत्याशित था।
- रिपोर्ट बड़े पैमाने पर वकालत समूहों और अन्य लोगों द्वारा पहले की गई रिपोर्टिंग की पुष्टि करती है और शिनजियांग में चीन की नीतियों के बारे में पीड़ितों और उनके परिवारों द्वारा व्यक्त किए गए आक्रोश के पीछे संयुक्त राष्ट्र की भारी मात्रा को शामिल करती है।
- "शिनजियांग में मानवाधिकारों के संकट को बीजिंग द्वारा बार-बार नकारना इस क्षेत्र में मानवता के खिलाफ चल रहे अपराधों और अन्य मानवाधिकारों के उल्लंघन के सबूतों की इस मान्यता के साथ और भी अधिक खोखला हो गया है।"
- रिपोर्ट के जारी होने से पहले विश्व निकाय पर चीन के प्रभाव पर बहस तेज हो गई और मानव अधिकारों को लेकर बीजिंग और पश्चिम के बीच चल रही कूटनीतिक ठिठुरन के साथ-साथ अन्य दुखदायी स्थानों पर भी चर्चा हुई।
- चीन ने "झिंजियांग में आतंकवाद और चरमपंथ के खिलाफ लड़ाई: सच्चाई और तथ्य" शीर्षक से 122 पन्नों की एक रिपोर्ट जारी की, जिसने अपने रिकॉर्ड का बचाव किया और संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपने मूल्यांकन के साथ वितरित किया गया।
- संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में कहा गया है कि 2017 और 2019 के बीच, आतंकवाद और उग्रवाद से लड़ने के लिए चीन की नीतियों के तहत झिंजियांग में "गंभीर मानवाधिकार उल्लंघन" किए गए हैं, जिसमें उइगर और अन्य मुस्लिम बहुल समुदाय शामिल हैं।

RAO'S ACADEMY

- रिपोर्ट में "यातना के पैटर्न" का हवाला दिया गया है, जिसे बीजिंग ने व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र कहा है, जो क्षेत्र में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए इसकी प्रतिष्ठित योजना का हिस्सा थे, और यह यौन हिंसा के मामलों सहित यातना या दुर्व्यवहार के "विश्वसनीय" आरोपों की ओर इशारा करता है।
- रिपोर्ट में चीन से मनमाने ढंग से हिरासत में लिए गए सभी व्यक्तियों को रिहा करने और गायब हुए व्यक्तियों जिनके परिवार उनके बारे में जानकारी मांग रहे हैं, के ठिकाने को स्पष्ट करने का आह्वान किया गया है।
- रिपोर्ट पूर्व बंदियों और आठ निरोध केंद्रों की स्थितियों से परिचित अन्य लोगों के साथ साक्षात्कार से तैयार की गई थी।

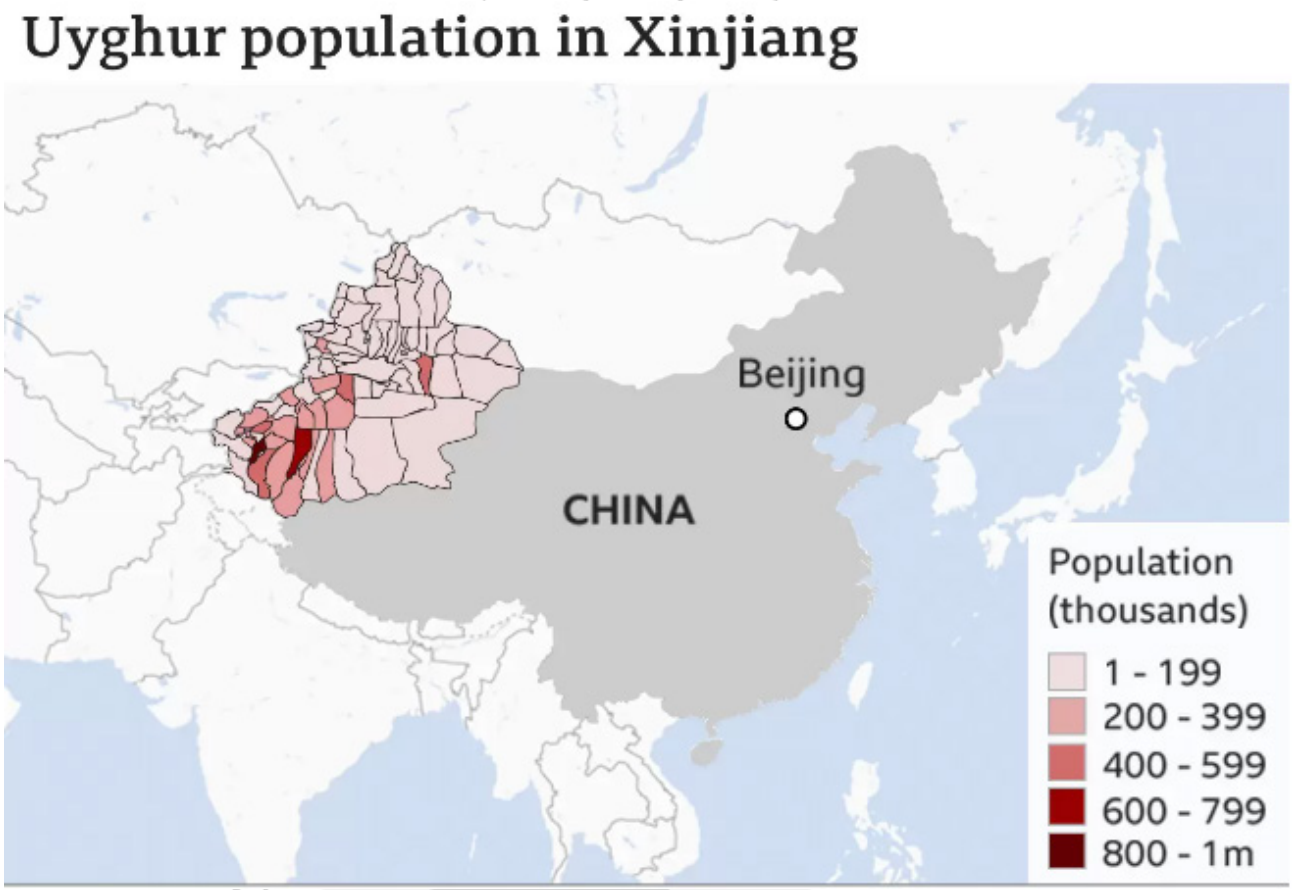

- शोधकर्ताओं और पत्रकारों की जांच के अनुसार, शिनजियांग में चीनी सरकार के सामूहिक निरोध अभियान ने पिछले पांच वर्षों में अनुमानित मिलियन या अधिक उइगर और अन्य जातीय समूहों को जेलों और शिविरों के नेटवर्क में डाल दिया है।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि इस क्षेत्र में गिरफ्तारी और लंबी जेल की सजा में तेज वृद्धि की रिपोर्ट ने दृढ़ता से औपचारिक कारावास की ओर एक बदलाव का सुझाव दिया क्योंकि एक बार "व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों" के उपयोग के बजाय बड़े पैमाने पर कारावास और स्वतंत्रता से वंचित करने का प्रमुख साधन था। बीजिंग द्वारा टाल दिया गया।
- संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कुछ देशों ने बीजिंग पर शिनजियांग में नरसंहार करने का आरोप लगाया है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में नरसंहार का कोई जिक्र नहीं था।

उइगर कौन हैं?

- झिंजियांग में रहने वाले लगभग 12 मिलियन उइगर हैं, जिनमें ज्यादातर मुस्लिम हैं, जिसे आधिकारिक तौर पर झिंजियांग उइघुर स्वायत्त क्षेत्र (XUAR) के रूप में जाना जाता है।

RAO'S ACADEMY

- उइगर अपनी भाषा बोलते हैं, जो तुर्की के समान है और खुद को सांस्कृतिक और जातीय रूप से मध्य एशियाई देशों के करीब देखते हैं। वे झिंजियांग की आधी से भी कम आबादी बनाते हैं।
- हाल के दशकों में हान चीनी (चीन के जातीय बहुमत) का शिनजियांग में बड़े पैमाने पर प्रवास देखा गया है, जो कथित रूप से राज्य द्वारा वहां की अल्पसंख्यक आबादी को कम करने के लिए आयोजित किया गया था।
- चीन पर मुस्लिम धार्मिक हस्तियों को निशाना बनाने और क्षेत्र में धार्मिक प्रथाओं पर प्रतिबंध लगाने के साथ-साथ मस्जिदों और कब्रों को नष्ट करने का भी आरोप लगाया गया है।
- उइगर कार्यकर्ताओं का कहना है कि उन्हें डर है कि समूह की संस्कृति नष्ट होने का खतरा है।

झिंजियांग कहाँ है?

- झिंजियांग चीन के उत्तर-पश्चिम में स्थित है और देश का सबसे बड़ा क्षेत्र है। तिब्बत की तरह, यह स्वायत्त है, अर्थात् - सिद्धांत रूप में - इसमें स्वशासन की कुछ शक्तियाँ हैं। लेकिन व्यवहार में, दोनों क्षेत्र केंद्र सरकार द्वारा बड़े प्रतिबंधों के अधीन हैं।

NPT

खबरों में क्यों

परमाणु हथियारों के अप्रसार (NPT) पर संधि के पक्षकारों का दसवां समीक्षा सम्मेलन न्यूयॉर्क में संपन्न हुआ।

महत्वपूर्ण बिंदु

- परमाणु हथियारों के अप्रसार (NPT) पर संधि के पक्षकारों का दसवां समीक्षा सम्मेलन एक संधि के 52 वर्षों को चिह्नित करता है जिसे प्रत्येक वक्ता ने 'वैश्विक परमाणु व्यवस्था की आधारशिला' के रूप में वर्णित किया है।
- यह मूल रूप से 2020 में अपने 50 वें वर्ष के लिए योजना बनाई गई थी, लेकिन COVID-19 के कारण सम्मेलन में देरी हुई - यह एक उत्सव का अवसर होना चाहिए था, फिर भी, मूड उदास था। और चार सप्ताह की बहस और चर्चा के बाद, प्रतिनिधि अंतिम दस्तावेज पर सहमत होने में विफल रहे।
- परमाणु हथियार मानवता के अस्तित्व के लिए खतरा हैं। यूक्रेन के खिलाफ अपने युद्ध के संदर्भ में परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की रूस की धमकी इस बात की सख्त याद दिलाती है कि यह खतरा वास्तविक है।
- वर्तमान में, नौ राज्यों को सैन्य परमाणु कार्यक्रमों के लिए जाना जाता है।
- हाल के वर्षों में, परमाणु-सशस्त्र राज्यों के बीच तनाव बढ़ गया है, जिससे उनमें से कई के बीच श्एकमुश्त रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता और प्रतिस्पर्धाश हो गई है।
- इसके अलावा, विशेषज्ञ चिंतित हैं कि 'अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों, संधियों और मानदंडों का ताना-बाना, जिसने ऐतिहासिक रूप से परमाणु-सशस्त्र राज्यों के बीच पूर्वानुमानित और अधिक स्थिर संबंधों में योगदान दिया है, बिगड़ रहा है'।
- 2015 में पिछले समीक्षा सम्मेलन के बाद से, NPTC के आसपास का माहौल और भी गंभीर हो गया है। सम्मेलन के आसपास का माहौल भी बेहद गंभीर रहा है और आम सहमति के अंतिम दस्तावेज को अपनाने की संभावना उज्ज्वल नहीं थी।

परमाणु हथियारों के अप्रसार (NPT) के बारे में

परमाणु हथियार संपन्न राज्यों ने अपने n-हथियार कार्यक्रमों के विकास को बनाए रखते हुए, विशेष रूप से गैर-परमाणु राज्यों पर एक सख्त अप्रसार व्यवस्था बनाने और लागू करने का निर्णय लिया।

एनपीटी की विशेषताएं:

i. संधि के सभी पक्षों ने इस सिद्धांत की पुष्टि की कि परमाणु प्रौद्योगिकी के शांतिपूर्ण अनुप्रयोगों के लाभ संधि के सभी पक्षों को शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए उपलब्ध होने चाहिए, चाहे परमाणु हथियार हों या

गैर-परमाणु हथियार वाले राज्य।

ii. इस संधि के सभी पक्षों को वैज्ञानिक सूचनाओं के आदान-प्रदान में पूर्ण संभव सीमा तक भाग लेने और शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु ऊर्जा के अनुप्रयोग के आगे विकास के लिए अकेले या अन्य राज्यों के सहयोग से योगदान करने का अधिकार है।

iii. परमाणु विस्फोटों के किसी भी शांतिपूर्ण अनुप्रयोग से संभावित लाभ गैर-परमाणु हथियार वाले राज्यों को उपलब्ध होना चाहिए जो इस संधि के पक्षकार हैं और भेदभाव रहित आधार पर हैं।

iv. घोषित इरादा, जल्द से जल्द संभव तिथि पर, परमाणु हथियारों की दौड़ की समाप्ति को प्राप्त करना था, इस उद्देश्य की प्राप्ति में सभी राज्यों के सहयोग का आग्रह करना।

v. इसका उद्देश्य आगे अंतर्राष्ट्रीय तनाव को कम करना और राज्यों के बीच विश्वास को मजबूत करना था ताकि परमाणु हथियारों के निर्माण की समाप्ति और उनके सभी मौजूदा भंडारों के परिसमापन को सुगम बनाया जा सके।

NPT के मुख्य प्रावधानः

1. कोई भी परमाणु हथियार संपन्न राज्य अपने हथियारों और प्रौद्योगिकी को गैर-परमाणु राज्यों को हस्तांतरित नहीं करेगा।
2. एक अधिकार के रूप में शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए n-प्रौद्योगिकी का विकास
3. गैर-परमाणु राज्य न तो विकसित होंगे और न ही n-हथियार प्राप्त करेंगे।
4. यह संधि हस्ताक्षर के लिए सभी राज्यों के लिए खुली होगी।
5. यह संधि हस्ताक्षरकर्ता राज्यों द्वारा अनुसमर्थन के अधीन होगी।

एनपीटी की आलोचनाः

1. यह एक भेदभावपूर्ण संधि थी जिसने गैर-परमाणु राष्ट्रों की तुलना में परमाणु हथियार वाले राज्यों की श्रेष्ठ शक्ति स्थिति को बनाए रखने की कोशिश की।
2. इसने अनावश्यक रूप से परमाणु और गैर-स्पष्ट राष्ट्रों के बीच शक्ति अंतर को वैध बनाने का प्रयास किया।
3. इसने अंतरराष्ट्रीय संबंधों में या तो निरस्त्रीकरण या हथियारों पर नियंत्रण का प्रावधान नहीं किया।
4. यह फ्रांस और चीन के एन-कार्यक्रमों की जांच करने में विफल रहा, जिन्होंने मास्को आंशिक परीक्षण प्रतिबंध संधि का उल्लंघन करते हुए परमाणु परीक्षण करने की नीति को जारी रखा।
5. एनपीटी वास्तव में परमाणु हथियार संपन्न देशों का राजनीतिक हथियार था। इसने राज्यों को परमाणु संपन्न और नहीं वाले राज्यों में विभाजित किया।
6. एनपीटी एक भेदभावपूर्ण और अपर्याप्त संधि थी।

देश जो NPT में शामिल नहीं हुए

- चार राज्यों-भारत, इजराइल, पाकिस्तान और दक्षिण सूडान ने कभी भी संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। भारत और पाकिस्तान ने सार्वजनिक रूप से अपने परमाणु हथियार कार्यक्रमों का खुलासा किया है, और इजरायल की अपने परमाणु कार्यक्रम के संबंध में जानबूझकर अस्पष्टता की एक लंबे समय से चली आ रही नीति है।

INS विक्रांत

खबरों में क्यों

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आईएनएस विक्रांत को भारतीय नौसेना में किया शामिल

महत्वपूर्ण बिंदु

- प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय नौसेना में भारत के पहले स्वदेश में विकसित और निर्मित विमानवाहक पोत

आईएनएस विक्रांत को शामिल किया। यह भारत में निर्मित अब तक का सबसे बड़ा जहाज है।

- मेड इन इंडिया जहाज विशेष रूप से रणनीतिक क्षेत्रों में मोदी सरकार की आत्मनिर्भरता पहल के लिए एक महत्वपूर्ण बढ़ावा है।

- आयोजन के दौरान, प्रधान मंत्री ने औपनिवेशिक अतीत को दूर करते हुए और समृद्ध भारतीय समुद्री विरासत के अनुरूप, नए नौसेना पताका (निशान) का भी अनावरण किया। उन्होंने नया ध्वज छत्रपति शिवाजी को समर्पित किया।
- आईएनएस विक्रांत के हर हिस्से की अपनी खूबियां हैं, एक ताकत है, वाहक का एक विकसित विशाल अनुपात है, प्रधान मंत्री ने कहा कि यह एक तैरते शहर की तरह है। यह बिजली पैदा करता है जो 5000 घरों को बिजली देने के लिए पर्याप्त है और इस्तेमाल की जाने वाली वायरिंग कोच्चि से काशी तक पहुंच जाएगी।
- आईएनएस विक्रांत पंच प्राणों की आत्मा का एक जीवंत अवतार है जिसे उन्होंने लाल किले की प्राचीर से घोषित किया था।

आईएनएस विक्रांत के बारे में

- आईएनएस विक्रांत की कमीशनिंग राष्ट्र के लिए गर्व का क्षण है क्योंकि इसने 'आजादी का अमृत महोत्सव' के दौरान 'आत्मनिर्भर' की साख का प्रदर्शन किया और भारत में महासागर क्षेत्र बढ़ी हुई समुद्री सुरक्षा की दिशा में क्षमता निर्माण करने में देश के उत्साह का एक सच्चा वसीयतनामा किया।
- कमीशनिंग के साथ, भारत ने राष्ट्रों के एक चुनिंदा बैंड में प्रवेश किया है जिसमें स्वदेशी रूप से डिजाइन और एक विमान वाहक बनाने की क्षमता है और आत्मनिर्भरता और 'मेक इन इंडिया' के लिए राष्ट्र के संकल्प का वास्तविक प्रमाण है।
- आईएनएस विक्रांत को भारतीय नौसेना के इन-हाउस युद्धपोत डिजाइन ब्यूरो (डब्ल्यूडीबी) द्वारा डिजाइन किया गया है और कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा बनाया गया है, जो कि बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय के तहत एक सार्वजनिक क्षेत्र का शिपयार्ड है, विक्रांत को अत्याधुनिक ऑटोमेशन सुविधाओं के साथ बनाया गया है और भारत के समुद्री इतिहास में बनाया गया अब तक का सबसे बड़ा जहाज है।
- 262.5 मीटर लंबा और 61.6 मीटर चौड़ा विक्रांत लगभग 43,000 टन विस्थापित करता है, जिसकी अधिकतम डिजाइन गति 28 समुद्री मील है और 7,500 समुद्री मील की सहनशक्ति है।
- जहाज में लगभग 2,200 डिब्बे हैं, जिन्हें महिला अधिकारियों और नाविकों सहित लगभग 1,600 के दल के

लिए डिजाइन किया गया है।

- कैरियर को मशीनरी संचालन जहाज नेविगेशन और उत्तरजीविता के लिए बहुत उच्च स्तर के स्वचालन के साथ डिजाइन किया गया है। वाहक अत्याधुनिक उपकरणों और प्रणालियों से लैस है।
- यह पोत 30 विमानों के संचालन में सक्षम है जिसमें स्वदेश निर्मित उन्नत हल्के हेलीकॉप्टर (एएलएच) और हल्के लड़ाकू विमान (एलसीए) के अलावा मिग-29के लड़ाकू जेट, कामोव-31, एमएच-60आर बहु-भूमिका हेलीकॉप्टर शामिल हैं।
- शॉर्ट टेक ऑफ बट अरेस्ट रिकवरी (STOBAR) नामक एक उपन्यास एयरक्राफ्ट-ऑपरेशन मोड का उपयोग करते हुए, INS विक्रांत विमान को लॉन्च करने के लिए स्की-जंप और जहाज पर उनकी वसूली के लिए शिगिरफ्तारी तारोंश के एक सेट से लैस है।
- 76% स्वदेशी सामग्री के साथ, आईएनएस विक्रांत के निर्माण के परिणामस्वरूप सीएसएल के 2,000 से अधिक कर्मचारियों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार सृजन हुआ है।
- इसके अलावा, इसके परिणामस्वरूप 550 से अधिक ओईएम, उप-ठेकेदारों, सहायक उद्योगों और 100 से अधिक एमएसएमई के लिए लगभग 12,500 कर्मचारियों के लिए अप्रत्यक्ष रोजगार सृजन हुआ है, जिससे अर्थव्यवस्था पर हल बैक प्रभाव को बल मिला है।

शिकायत निवारण सूचकांक 2022

खबरों में क्यों

UIDAI अगस्त 2022 के दौरान शिकायत निवारण सूचकांक में शीर्ष पर रहा।

महत्वपूर्ण बिंदु

- अगस्त 2022 के महीने के लिए प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग (DARPG) द्वारा प्रकाशित रैंकिंग रिपोर्ट में लोक शिकायतों के समाधान के लिए सभी मंत्रालयों/विभागों में भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) शीर्ष पर है।
- UIDAI केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण और निगरानी प्रणाली (CPGRAMS) के माध्यम से प्राप्त मामलों के समाधान में शीर्ष प्रदर्शन करने वाला रहा है।
- UIDAI भारत के निवासियों की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध है, और जीवनयापन में सुगमता और व्यवसाय करने में आसानी दोनों के लिए उत्प्रेरक रहा है।
- UIDAI के पास एक मजबूत शिकायत निवारण तंत्र है जिसमें UIDAI मुख्यालय डिवीजन, क्षेत्रीय कार्यालय, प्रौद्योगिकी केंद्र और लगे हुए संपर्क केंद्र भागीदार शामिल हैं, जो UIDAI को 7 दिनों के भीतर लगभग 92% सीआरएम शिकायतों को हल करने में सक्षम बना रहा है।
- संगठन अपने शिकायत निवारण तंत्र को और मजबूत करने के लिए समर्पित है और जल्द ही अत्याधुनिक ओपन सोर्स सीआरएम समाधान शुरू करने जा रहा है। नए ग्राहक संबंध प्रबंधन (सीआरएम) समाधान को उन्नत सुविधाओं के साथ डिजाइन किया गया है जो निवासियों को UIDAI सेवा वितरण में वृद्धि करेगा।
- नए सीआरएम समाधान में फोन कॉल, ईमेल, चैटबोट, वेब पोर्टल, सोशल मीडिया, पत्र और वॉक-इन जैसे मल्टी-चैनलों का समर्थन करने की क्षमता होगी, जिसके माध्यम से शिकायतों को दर्ज किया जा सकता है, ट्रैक किया जा सकता है और प्रभावी ढंग से हल किया जा सकता है। यह कार्यान्वयन के उन्नत चरण में है और जल्द ही इसे शुरू किया जाएगा।
- UIDAI का प्रयास यह है कि निवासियों की आवाज सुनी जानी चाहिए, और सिस्टम में निवासियों के विश्वास को और बढ़ाने के लिए निवासियों को पर्याप्त रूप से सशक्त बनाया जाना चाहिए।

यूआईडीएआई के बारे में:

- यह 2009 में स्थापित एक वैधानिक प्राधिकरण है।
- मूल निकाय: इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र में कार्य करता है।
- अधिदेश: UIDAI को भारत के सभी निवासियों को एक 12-अंकीय विशिष्ट पहचान (यूआईडी) संख्या (आधार) प्रदान करना अनिवार्य है।

स्पार्क कार्यक्रम

खबरों में क्यों

CCRAS ने मान्यता प्राप्त आयुर्वेद कॉलेजों में पढ़ने वाले आयुर्वेद (BAMS) के छात्रों के लिए आयुर्वेद अनुसंधान केन (स्पार्क) के लिए छात्र कार्यक्रम शुरू किया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (CCRAS) ने आयुर्वेद शोध आयुर्वेद महाविद्यालयों के लिए छात्र कार्यक्रम विकसित करके देश के उज्ज्वल युवा दिमागों के अनुसंधान प्रयासों का समर्थन करने के लिए एक अनूठी पहल की है।
- कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को अनुसंधान के लिए एक कौशल विकसित करने और उनके शोध विचारों को आगे समर्थन और प्रोत्साहित करने में मदद करना है।
- पार्क कार्यक्रम का उद्देश्य भारत के सभी आयुर्वेद कॉलेजों में आने वाले युवा छात्रों के शोध विचारों का समर्थन करना है।
- स्पार्क प्रोग्राम के लिए आवेदन प्रक्रिया ऑनलाइन मोड में की जाएगी।
- इस फेलोशिप के तहत चयनित छात्रों को 50,000 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

CCRAS के बारे में

यह आयुष मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है।

यह आयुर्वेद और सोवा-रिग्पा चिकित्सा पद्धतियों में वैज्ञानिक आधार पर अनुसंधान के निर्माण, समन्वय, विकास और संवर्धन के लिए भारत में एक शीर्ष निकाय है।

नजर

आयुर्वेदिक सिद्धांतों में वैज्ञानिक साक्ष्य विकसित करने के लिए, आधुनिक तकनीक के साथ प्राचीन ज्ञान को एकीकृत करने के माध्यम से दवा उपचार और निदान, निवारक, प्रोत्साहन के साथ-साथ उपचार विधियों से संबंधित वैज्ञानिक नवाचारों के माध्यम से आयुर्वेद को लोगों तक पहुंचाना और निरंतर उपलब्धता के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान भी शुरू करना। गुणवत्ता वाले प्राकृतिक संसाधनों का, उन्हें उत्पादों और प्रक्रियाओं में अनुवाद करने के लिए और संबंधित संगठनों के साथ तालमेल में इन नवाचारों को सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों में पेश करने के लिए।

मिशन

- साक्ष्य आधारित आयुर्वेदिक सिद्धांतों और प्रथाओं के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के माध्यम से आयुष्मान भारत का लक्ष्य रखना।
- आयुर्वेद में अनुसंधान को शुरू करने, समन्वय करने, सहायता करने और बढ़ावा देने के लिए सीसीआरएएस को एक गतिशील, जीवंत और मॉडल अनुसंधान संगठन के रूप में विकसित करना।
- प्रचलित वैज्ञानिक पद्धतियों का अनुसरण करते हुए आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान, आयुर्वेद वैज्ञानिक खजाने का पता लगाने के लिए प्रौद्योगिकी को सामने लाना।

RAO'S ACADEMY

- उभरती हुई जीवनशैली से संबंधित बीमारी और स्वास्थ्य आवश्यकता के उपचार और रोकथाम के लिए अनुसंधान में वैश्विक नेतृत्व प्राप्त करना।

ब्लू ट्रांसफॉर्मेशन रोडमैप (2022-2030)

खबरों में क्यों

FAO ने हाल ही में रोजगार, समावेशी विकास, एसडीजी और पर्यावरण सुधार के चालक के रूप में जलीय खाद्य प्रणाली को महत्व देने के लिए बीटीआर जारी किया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

ब्लू ट्रांसफॉर्मेशन क्या है?

- ब्लू ट्रांसफॉर्मेशन एक लक्षित प्रयास है जिसके द्वारा एजेंसियां, देश और आश्रित समुदाय खाद्य सुरक्षा, पोषण और किफायती स्वस्थ आहार के लिए जलीय (समुद्री और अंतर्देशीय दोनों) खाद्य प्रणालियों के योगदान को सुरक्षित और स्थायी रूप से अधिकतम करने के लिए मौजूदा और उभरते ज्ञान, उपकरणों और प्रथाओं का उपयोग करते हैं।

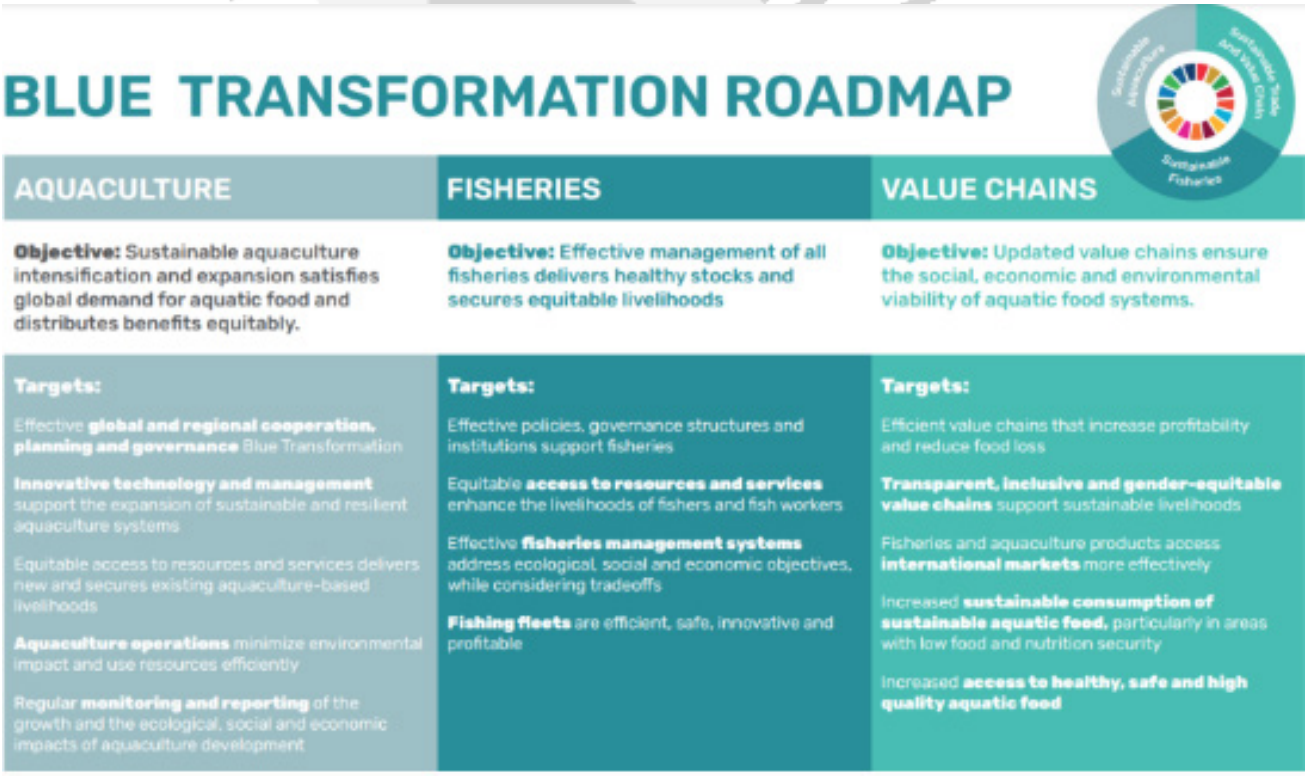

रिपोर्ट की मुख्य बातें-

- यह दस्तावेज जलीय खाद्य प्रणालियों के परिवर्तन के लिए एक रोडमैप की रूपरेखा तैयार करता है - 'ब्लू ट्रांसफॉर्मेशन', जो 2022-2030 की अवधि के लिए जलीय खाद्य प्रणालियों पर एफएओ के काम के लिए एक दृष्टिकोण प्रदान करता है।
- ब्लू ट्रांसफॉर्मेशन के लिए यह रोडमैप संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) की मत्स्य पालन समिति (COFI) की सतत मत्स्य पालन और जलीय कृषि के लिए 2021 की घोषणा और FAO के रणनीतिक ढांचे 2022-2031 के अनुरूप है।
- यह उन तत्वों पर ध्यान केंद्रित करता है जो सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में जलीय खाद्य प्रणालियों के

RAO'S ACADEMY

योगदान को अधिकतम करेंगे।

- रोडमैप रोजगार, आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और पर्यावरण सुधार के वाहक के रूप में जलीय खाद्य प्रणालियों के महत्व को पहचानता है, जो सभी एसडीजी का आधार हैं।
- यह बेहतर उत्पादन, बेहतर पोषण, बेहतर पर्यावरण और बेहतर जीवन के लिए अधिक कुशल, समावेशी, लचीला और टिकाऊ जलीय खाद्य प्रणालियों में परिवर्तन के माध्यम से 2030 एजेंडा का समर्थन करने की आवश्यकता को भी पहचानता है, किसी को पीछे नहीं छोड़ता है।
- यह एफएओ मत्स्य पालन और जलकृषि प्रभाग (एनएफआई) के कार्य की योजना, कार्यान्वयन, निगरानी और संचार का समर्थन करने के लिए एक समग्र ढांचा प्रदान करता है।

सुभाष चंद्र बोस

खबरों में क्यों

इंडिया गेट पर पीएम मोदी द्वारा सुभाष चंद्र बोस की एक प्रतिमा का अनावरण किया गया था, जिसका उद्घाटन कार्तव्य पथ के साथ किया गया था जिसे पहले राजपथ के नाम से जाना जाता था।

महत्वपूर्ण बिंदु

प्रतिमा को स्मारक की भव्य छतरी के नीचे रखा गया है और इसका उद्घाटन कार्तव्य पथ के साथ किया गया है, जिसे पहले राजपथ के नाम से जाना जाता था।

सुभाष चंद्र बोस के बारे में:

- सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक (ओडिशा) में जानकीनाथ बोस और प्रभावती देवी के घर हुआ था।
- वे स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं से काफी प्रभावित थे और एक छात्र के रूप में अपने देशभक्ति के उत्साह के लिए जाने जाते थे।
- अपने माता-पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए वे 1919 में भारतीय सिविल सेवा के लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए इंग्लैंड गए।
- इंग्लैंड में वे 1920 में भारतीय सिविल सेवा प्रतियोगी परीक्षा में शामिल हुए और योग्यता के क्रम में चौथे स्थान पर रहे।
- हालांकि, सुभाष चंद्र बोस जलियांवाला बाग हत्याकांड से बहुत परेशान थे, और 1921 में भारत लौटने के लिए अपनी सिविल सेवा शिक्षुता को बीच में ही छोड़ दिया।
- कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने ठोस शब्दों में योजना बनाने की बात की, और एक राष्ट्रीय योजना समिति की स्थापना की।
- 1939 नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय एन बोस से इस्तीफा दे दिया और आजाद हिंद फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना) का आयोजन किया जिसमें मुख्य रूप से युद्ध के भारतीय कैदी शामिल थे।
- INA जनवरी 1944 में मुख्यालय को रंगून में स्थानांतरित कर दिया गया। आजाद हिंद फौज ने बर्मा सीमा को पार किया और 18 मार्च, 1944 को भारतीय धरती पर खड़ा हो गया।

भारत की अध्यक्षता

खबरों में क्यों

भारत के प्रतिष्ठित एशिया-प्रशांत इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रॉडकास्टिंग डेवलपमेंट (AIBD) की अध्यक्षता को एक और वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- प्रतिष्ठित एशिया-प्रशांत इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रॉडकास्टिंग डेवलपमेंट (AIBD) की भारत की अध्यक्षता को एक और वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया है।
- नई दिल्ली में आयोजित संस्थान के दो दिवसीय आम सम्मेलन में AIBD सदस्य देशों द्वारा सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया।
- यूनेस्को के तत्वावधान में 1977 में स्थापित एशिया-पैसिफिक इंस्टीट्यूट फॉर ब्रॉडकास्टिंग डेवलपमेंट (AIBD), एशिया-प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग (UN-ESCAP) के देशों की सेवा करने वाला इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विकास के क्षेत्र में एक अद्वितीय क्षेत्रीय अंतर-सरकारी संगठन है।
- एआईबीडी को नीति और संसाधन विकास के माध्यम से एशिया-प्रशांत क्षेत्र में एक जीवंत और एकजुट इलेक्ट्रॉनिक मीडिया वातावरण प्राप्त करने के लिए अनिवार्य किया गया है।
- AIBD में वर्तमान में 26 देश हैं जिनका प्रतिनिधित्व 43 संगठनों और 52 संबद्ध सदस्यों द्वारा किया जाता है।
- नई दिल्ली में आयोजित 47वीं एआईबीडी वार्षिक सभा की 20वीं एआईबीडी आम सम्मेलन और एसोसिएटेड मीटिंग में कई तरह की चर्चाएं, प्रस्तुतियां और विचारों का आदान-प्रदान हुआ, विशेष रूप से "महामारी के बाद के युग में प्रसारण के एक मजबूत भविष्य का निर्माण" विषय पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- सहकारी गतिविधियों और विनिमय कार्यक्रमों के लिए एक पंचवर्षीय योजना को भी अंतिम रूप दिया गया।
- सभी भाग लेने वाले देशों और सदस्य प्रसारकों ने एक स्थायी प्रसारण वातावरण, नवीनतम प्रौद्योगिकी जानकारी, बेहतरीन सामग्री निर्माण, विभिन्न सहकारी गतिविधियों के लिए मिलकर काम करने का संकल्प लिया।

भारत का रक्षा बजट

खबरों में क्यों

पिछले 5 वर्षों में भारत का रक्षा निर्यात 334% बढ़ा, 75 देशों को आपूर्ति की गई।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारतीय रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र विदेशों में अपने हथियार फैला रहा है क्योंकि पिछले पांच वर्षों में सैन्य निर्यात में 334% की वृद्धि हुई है, जिसमें दुनिया भर के 75 से अधिक देशों को शस्त्रागार की आपूर्ति शामिल है।
- सहयोगात्मक प्रयासों के साथ, भारत ने विश्व स्तरीय सैन्य उपकरण बनाने के लिए अपने स्वदेशी डिजाइन, विकास और रक्षा उपकरणों के निर्माण को बढ़ाने के लिए पिछले कुछ वर्षों में कई नीतिगत पहल की हैं।
- विशेष रूप से, भारत ने वित्तीय वर्ष 2022-23 (अप्रैल-जून) की पहली तिमाही के दौरान लगभग 1,387 करोड़ रुपये के रक्षा-संबंधी निर्यात का निर्यात किया, जैसा कि आंकड़ों से पता चलता है।
- इसके अलावा, देश का रक्षा और प्रौद्योगिकी संबंधी निर्यात वित्त वर्ष 2021-22 में 12,815 करोड़ रुपये के उच्चतम आंकड़े को छू गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 54.1 प्रतिशत अधिक है।
- यह ध्यान देने योग्य है कि वित्तीय वर्ष 2022 में निर्यात लगभग पांच साल पहले की तुलना में लगभग आठ गुना था।
- रिपोर्ट्स के मुताबिक, भारत का रक्षा निर्यात 2020-21 में 8,434 करोड़ रुपये, 2019-20 में 9,115 करोड़ रुपये और 2015-16 में 2,059 करोड़ रुपये का था।
- भारत का रक्षा निर्यात मुख्य रूप से अमेरिका, फिलीपींस जैसे देशों और दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य पूर्व और अफ्रीका के अन्य देशों को होता है।

स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा देना

- पिछले कुछ वर्षों में, भारत सरकार ने रक्षा उपकरणों के स्वदेशी निर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न नीतिगत पहल की हैं, जिससे रक्षा निर्माण और प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिला है।
- रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया (DAP)-2020 के तहत घरेलू स्रोतों से पूंजीगत वस्तुओं की खरीद को प्राथमिकता, उद्योग के नेतृत्व वाले डिजाइन और विकास के लिए 18 प्रमुख रक्षा प्लेटफार्मों की घोषणा, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) नीति का उदारीकरण शामिल है। कई अन्य के अलावा, स्वचालित मार्ग के तहत 74 प्रतिशत निवेश की अनुमति।
- रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (DPSU) द्वारा आयात को कम करने के लिए, रक्षा उत्पादन विभाग (डीडीपी) ने उप-प्रणालियों / विधानसभाओं / उप-विधानसभाओं / घटकों की तीन सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची (PIL) को अधिसूचित किया है। पहली सूची में 2,851 आइटम शामिल हैं। जिनमें से 2,500 वस्तुओं का पहले ही स्वदेशीकरण किया जा चुका है।
- दूसरी सूची में 107 रणनीतिक महत्वपूर्ण लाइन रिप्लेसमेंट यूनिट/प्रमुख उप-असेंबली शामिल हैं। तीसरी सूची में 101 सैन्य उपकरण शामिल हैं जो दिसंबर 2022 से प्रभावी होंगे। लाइट टैंक, हेलीकॉप्टर और मानव रहित हवाई वाहन सहित सामरिक रक्षा उत्पाद स्वदेशी सूची का हिस्सा हैं, जिसके लिए संकेतित समय सीमा से परे आयात पर प्रतिबंध होगा।
- महत्वपूर्ण रूप से, दो रक्षा औद्योगिक गलियारे स्थापित किए गए हैं - एक-एक उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए।

भारत 2025 तक 35,000 करोड़ रुपये के निर्यात की उम्मीद करता है

- रक्षा मंत्रालय ने 2025 तक 1.75 लाख करोड़ रुपये के रक्षा उत्पादन का लक्ष्य रखा है, जिसमें 35,000 करोड़ रुपये का निर्यात शामिल होगा।
- रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) के माध्यम से इस लक्ष्य को प्राप्त करने में प्रमुख भूमिका।

- आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा की गई विभिन्न पहलों को सूचीबद्ध करते हुए, राजनाथ सिंह ने उल्लेख किया कि रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया 2020 के तहत अधिग्रहण प्रक्रिया का सरलीकरण;
- ऑफसेट दिशानिर्देशों में लचीलापन;
- स्वचालित मार्ग के तहत एफडीआई सीमा में 74% और सरकारी मार्ग के तहत 100% तक की वृद्धि;
- लाइसेंस प्राप्त करने की प्रक्रिया का सरलीकरण;
- रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार (iDEX) पहल का शुभारंभ;
- रक्षा क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बढ़ते उपयोग ने आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लक्ष्य को मजबूत किया है।

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ

खबरों में क्यों

लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चौहान (सेवानिवृत्त) को अगला चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ नियुक्त किया गया।

महत्वपूर्ण बिंदु

- भारत सरकार ने पूर्व पूर्वी सेना कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चौहान को अगले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के रूप में नियुक्त किया।
- देश के पहले CDS जनरल बिपिन रावत की दिसंबर 2021 में हेलीकॉप्टर दुर्घटना में मृत्यु होने के बाद से यह पद रिक्त है।
- सरकार ने लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चौहान (सेवानिवृत्त) को अगले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के रूप में नियुक्त करने का निर्णय लिया है, जो भारत सरकार, सैन्य मामलों के विभाग के सचिव के रूप में कार्यभार ग्रहण करने की तारीख से प्रभावी होंगे।
- लगभग 40 वर्षों के लंबे करियर में, लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चौहान ने कई कमांड, स्टाफ और सहायक नियुक्तियां की थीं और जम्मू और कश्मीर और उत्तर-पूर्व भारत में आतंकवाद विरोधी अभियानों में व्यापक अनुभव था।
- जून में, सरकार ने थल सेना, नौसेना और वायु सेना के सेवा नियमों में संशोधन किया, जिससे सेवानिवृत्त सेवा प्रमुखों और तीन सितारा रैंक के अधिकारियों को देश के शीर्ष सैन्य पद पर विचार करने की अनुमति मिली।
- हालांकि, एक आयु सीमा के साथ कि सेवानिवृत्त अधिकारी को नियुक्ति की तिथि पर 62 वर्ष की आयु प्राप्त नहीं करनी चाहिए थी, विशेष रूप से वर्तमान विचार के लिए सेवानिवृत्त सेवा प्रमुखों को काफी हद तक खारिज कर दिया गया था।
- सेवानिवृत्ति के बाद, लेफ्टिनेंट जनरल चौहान ने लेफ्टिनेंट जनरल विनोद जी खंडारे से राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय (एनएससीएस) में सैन्य सलाहकार के रूप में पदभार ग्रहण किया, जिन्होंने अक्टूबर 2021 में पद से इस्तीफा दे दिया था।
- दिसंबर 2019 में, सरकार ने सीडीएस के पद के सृजन को मंजूरी दी जो रक्षा मंत्री के प्रधान सैन्य सलाहकार और स्टाफ कमेटी (सीओएससी) के स्थायी अध्यक्ष के रूप में भी कार्य करेंगे।
- इसके अलावा, डीएमए को रक्षा मंत्रालय (MOD) में पांचवें विभाग के रूप में बनाया गया था, जिसमें CDS सचिव के रूप में कार्य कर रहा था।
- जबकि सेवा प्रमुखों का कार्यकाल 62 वर्ष की आयु या तीन वर्ष जो भी पहले हो, सीडीएस के लिए आयु सीमा 65 वर्ष की आयु है, जिसका कोई निश्चित कार्यकाल निर्धारित नहीं है।
- जनरल बिपिन रावत, जिन्होंने 31 दिसंबर, 2016 से 31 दिसंबर, 2019 तक 27वें सेना प्रमुख के रूप में कार्य किया, ने 1 जनवरी, 2020 को पहले सीडीएस के रूप में पदभार ग्रहण किया।
- लेफ्टिनेंट जनरल चौहान को 1981 में भारतीय सेना की 11 गोरखा राइफल्स में कमीशन दिया गया था। वह राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खडगवासला और भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून के पूर्व छात्र हैं।

RAO'S ACADEMY

- मेजर जनरल के पद पर, उन्होंने जम्मू और कश्मीर के बारामूला सेक्टर में एक इन्फैंट्री डिवीजन की कमान संभाली थी।
- बाद में लेफ्टिनेंट जनरल के रूप में, उन्होंने उत्तर पूर्व में एक कोर की कमान संभाली और बाद में सितंबर 2019 में पूर्वी सेना कमांडर बने और 31 मई, 2021 को सेवा से अपनी सेवानिवृत्ति तक इस पद पर बने रहे।
- इन कमांड नियुक्तियों के अलावा, लेफ्टिनेंट जनरल चौहान ने सैन्य अभियानों के महानिदेशक के रूप में भी कार्य किया।

आगे का प्रमुख कार्य

- जनरल रावत अन्य उपायों के साथ-साथ तालमेल और दक्षता लाने के लिए सशस्त्र बलों के एकीकृत थिएटर कमांड में पुनर्गठन की महत्वाकांक्षी योजना को आगे बढ़ा रहे थे।
- सीडीएस के व्यापक जनादेश में "संचालन, रसद, परिवहन, प्रशिक्षण, सहायता सेवाओं, संचार, मरम्मत और तीनों सेवाओं के रखरखाव में, पहले सीडीएस के पदभार ग्रहण करने के तीन वर्षों के भीतर" संयुक्तता लाना शामिल है।
- यह कार्य अब आम सहमति बनाने और पुनर्गठन प्रक्रिया को आगे ले जाने के लिए नए सीडीएस पर आता है, जिसमें वायु सेना की ओर से कुछ पहलुओं पर पूर्ण सहमति और आपत्तियों की कमी के कारण देरी हुई है।
- विस्तृत अध्ययन पहले ही किए जा चुके हैं, और तौर-तरीकों को बेहतर बनाने के लिए हाल के दिनों में टेबल टॉप अभ्यास किए गए हैं। इस दिशा में अतिरिक्त अध्ययन भी किए गए हैं।
- इसके अलावा, यूक्रेन में युद्ध ने महत्वपूर्ण सैन्य प्रौद्योगिकियों और प्रणालियों को स्वदेशी बनाने और आयात पर निर्भरता को कम करने की आवश्यकता पर तत्काल प्रभाव डाला है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY

RAO'S ACADEMY